

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

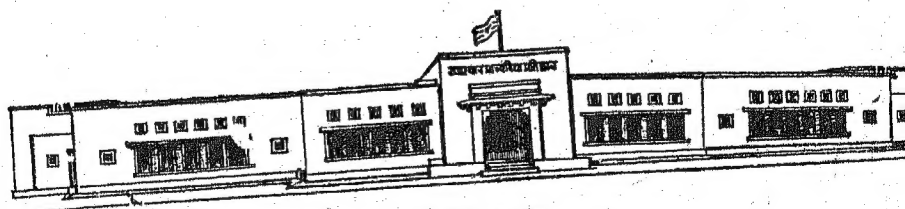
प्रधान सम्पादक—पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द



प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक — पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिवद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

पद्यरत्न सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सममान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिन्धी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

प्राकृतानन्द

सम्पादक,

पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ { भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ } ख्रिस्ताब्द १९६२
प्रथमावृत्ति ७५०

मुद्रक-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई

मुख्य पृष्ठ आदि के मुद्रक-श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

प्रधान सम्पादक
पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य
द्वारा सम्पादित ग्रन्थ

- १ त्रिपुराभारती लघुस्तव — कर्ता-सिद्धसारस्वत श्री लघुपण्डित
- २ कर्णामृतप्रपा — कर्ता-महाकवि ठक्कुर सोमेश्वर
- ३ बालशिक्षा व्याकरण — कर्ता-ठक्कुर संग्रामसिंह
- ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा — कर्ता-पं० कृष्णमिश्र
- ५ शकुनप्रदीप — कर्ता-पं० लावण्य शर्मा
- ६ उक्तिरत्नाकर — कर्ता-पं० साधुसुन्दरगणी
- ७ प्राकृतानन्द — कर्ता-रघुनाथ कवि
- ८ हम्मीरमहाकाव्य — कर्ता-नयचन्द्र सूरि
- ९ राठौड़ारी वंशावली
- १० सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ सूची
- ११ मीरां वृहत् पदावली
- १२ रत्नपरीक्षादि सप्त ग्रन्थ संग्रह — कर्ता-ठक्कुर फेरू



विषयविवरणम्

—००००००—

१-प्रास्ताविकं वक्तव्यम्	१-३
२-प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका	४-१२
३-प्राकृतानन्द-प्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका	१३-१७
प्रथमे परिच्छेदे	
४-अजन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम्	१-१८
५-अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	१९-२३
६-अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	२३-२७
७-हलन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम्	२७-३३
८-हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	३४ वां
९-हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	"
१०-निपाताधिकारः	३५-३७
द्वितीये परिच्छेदे	
११-धातुप्रकरणम्	३८-५२
परिशिष्टम्	
क-प्राकृतशब्दानुक्रमणिका	५३-७६



प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' ग्रन्थ प्राकृत भाषा का एक संक्षिप्त व्याकरण है। इसकी रचना पंडित रघुनाथ ने की है जो कवि-कण्ठीरव के विरुद्ध से अपने आपको उल्लिखित करते हैं। ये ज्योतिर्विद् सरस के पुत्र थे। इसके अतिरिक्त इनके समय और स्थान आदि के बारे में कुछ उल्लेख नहीं मिलता। इस ग्रन्थ की एक पुरानी हस्तलिखित पोथी विद्वद्वर्य आगमप्रभाकर मुनिराज श्री पुण्य-विजयजी महाराज को शायद वीकानेर में मिली थी। जिस पर से उन्होंने स्वयं इसकी प्रतिलिपि की थी। यह प्रति जैसा कि इसके अन्त में लिखा मिलता है— संवत् १७२६ में लाभपुर अर्थात् लाहोर में लिखी गई थी। सन् १९५२ में जब मेरा वीकानेर जाना हुआ तो उन्होंने यह ग्रन्थ मुझे दिखलाया। मैंने इसे राज-स्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया तो उक्त सौजन्य-मूर्ति मुनिवर ने अपनी वह प्रतिलिपि बड़े आनन्द के साथ मुझे दे दी। मैंने उसको छपने के लिये बम्बई के निर्णय सागर प्रेस में दी। दीर्घकाला-वधि में यह ग्रन्थ प्रेस ने छाप कर पूरा किया। कुछ अन्यान्य कारणों से भी ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होता रहा। इस तरह प्रतिलिपि के प्राप्त होने के बाद कोई १० वर्ष अनन्तर अब यह ग्रन्थ पाठकों के कर-कमलों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

'प्राकृतानन्द' प्राकृत भाषा का एक छोटा-सा व्याकरण है। ग्रन्थकार का कहना है कि जो पण्डित के कुल में पैदा हुआ है परन्तु अल्पबुद्धि है और कुछ साहित्य का रसास्वाद करना चाहता है उसके ज्ञान के लिये यह प्रयत्न किया गया है। संस्कृत की तरह प्राकृत भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति बहुत ही विशाल है। विविध विषय के हजारों ही ग्रन्थ प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं। यद्यपि ब्राह्मण-सम्प्रदाय में प्राकृत साहित्य का उत्तम अधिक संचय नहीं मिलता है, परन्तु जैन और बौद्ध संप्रदाय में प्राकृत भाषा ही का प्राधान्य रहा और इसलिये इन दोनों संप्रदायों में इस भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति की विशालता बहुत अधिक है। बौद्ध साहित्य की प्राकृत भाषा जो कि मूल रूप में 'मागधी' भाषा कहलाती है, अब 'पाली' के नाम से प्रसिद्ध हो गई है। परन्तु जैन साहित्य-संपत्ति मुख्य रूप से प्राकृत के व्यापक नाम से ही प्रसिद्धि प्राप्त करती रही है। भाषा-विदों ने जैन साहित्य की प्राकृत भाषा को 'अर्द्धमागधी'

और 'महाराष्ट्री' प्राकृत के नाम से विभक्त किया है। प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी संमिश्रित है और बाकी का सारा साहित्य प्रायः 'महाराष्ट्री' और 'शौरसेनी' संमिश्रित है। जैन सम्प्रदाय का मौलिक वाङ्मय प्रायः सारा इसी प्रकार की प्राकृत भाषा का अपूर्व भंडार है।

द्रविड़ जाति के भारतीय जन-समूहों की द्रविड़कुलीन भाषाओं के अतिरिक्त समग्र आर्य जातीय जन-समूह की जो विद्यमान भाषायें हैं उनकी उत्पत्ति इस मूल पुरातन प्राकृत से है। शाक्य भगवान् बुद्ध और ज्ञात पुत्र तीर्थंकर महावीर के समय से लेकर वर्तमान काल तक की आर्य-भाषाभाषी व भारतीय जनता की मातृ-भाषा प्राकृत के नाम से संबोधित की जाती रही है। वह प्राचीन प्राकृत अब अनेक उपभाषाओं और देश-विशेष की बोलियों में विभक्त हो गई है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है जैन संप्रदाय का सारा ही मौलिक साहित्य प्राकृत में है। कई ब्राह्मण विद्वानों ने भी प्राकृत भाषा में कुछ विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें काव्य और नाटक ग्रंथ मुख्य हैं। गौडवहो, सेतुबन्ध, लीलावई, गाथा सत्तसई आदि उत्कृष्ट प्राकृत काव्यकृतियां हैं जो ब्राह्मण विद्वानों की देन हैं। इसी तरह कर्पूरमंजरी आदि अनेक नाटक कृतियां भी प्राकृत के प्रभाव को प्रकट करती हैं।

जिम तरह संस्कृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनी आदि अनेक प्राचीन-अर्वाचीन विद्वानों ने नाना प्रकार के व्याकरण-ग्रन्थों की रचनायें की हैं उसी तरह प्राकृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से वररुचि आदि अनेक विद्वानों ने प्राकृत व्याकरण ग्रन्थों की रचनायें की हैं। यों तो प्राकृत भाषा के बीसों छोटे-बड़े व्याकरण-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं पर उनमें वररुचि का 'प्राकृत-प्रकाश' सब से प्राचीन ग्रन्थ समझा जाता है। प्राकृत-भाषा का सर्वप्रथम संपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ हेमचन्द्र सूरि का है जो उनके महान् व्याकरण ग्रन्थ 'सिद्धहेमअब्दानुशासन' का अष्टम अध्याय स्वरूप है। इस महान् व्याकरण ग्रन्थ के सात अध्यायों में संस्कृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण ग्रथित है और अष्टम अध्याय में प्राकृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण है। इसमें प्राकृतोत्तरकालीन अपभ्रंश भाषा का भी विस्तृत व्याकरण है जो उनको मौलिक देन है। हेमचन्द्र सूरि के बाद अनेक छोटे-बड़े प्राकृत व्याकरण बनते रहे और उनमें से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित भी हो गये हैं।

वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' हेमचन्द्रसूरि के 'प्राकृत व्याकरण' की अपेक्षा

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' का ही एक प्रति संकलन है। संस्कृत के लघुकौमुदी आदि प्रक्रियात्मक शैली के अनुकरण साथ कवि ने 'प्राकृत-प्रकाश' को इस प्रकार प्रक्रियात्मक रूप देकर इस प्राकृत का संकलन किया है। इसमें कुल ४१६ सूत्र हैं, इससे मालूम देता है 'प्राकृत-प्रकाश' के कुछ सूत्र छोड़ भी दिये हैं। पर, साथ में कुछ ऐसे दिये हैं जो 'प्राकृत-प्रकाश' की प्रसिद्ध पुस्तक में नहीं मिलते। चौखम्भाग्रन्थ भामहकृत मनोरमाव्याख्या सहित जो प्राकृत प्रकाश छपा है उसमें कुल ४१६ सूत्र हैं जिनमें के ८७ सूत्र इस प्राकृतानन्द में नहीं हैं; और साथ में इसमें २४९ सूत्र हैं जो प्राकृत-प्रकाश में नहीं मिलते। तुलना की दृष्टि से दोनों ग्रन्थों सूचि इसके साथ दी जाती है। संशोधक विद्वानों को इसका कुछ उपयोग मुद्रित प्राकृत-प्रकाश के और प्राकृतानन्द के सूत्रों में कुछ पाठ-भेद गोचर होते हैं। लिपिकर्ताओं के कारण ऐसे पाठ-भेदों का होना स्वाभाविक

यह ग्रंथ अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। ऑफ़्ट ने इसका सूचन 'कॅटलागस कॅटलॉगरम्' भा. १; पृ. ३६१ पर किया है। इसका नाम सूचीकार को लाहोर के पण्डित राधाकृष्ण के 'पुस्तकानां' में मिला है, जो काश्मीर-निवासी पं० राजाराम शास्त्री ने लिखा था और टिक सोसाइटी बंगाल के प्रोसीडिंग्स, जून १८८० ई. में इसका उल्लेख प्रस्तुत पुस्तक की प्रेस-काँपी जिस प्रति से तैयार की गई है वह भी इस वि में लाहोर में ही लिखी गई थी।

सौजन्यमूर्ति विद्वद्रत्न मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराज के प्रति हार्दिक कृतज्ञभाव प्रकट करते हैं कि जिन्होंने स्वयं अपने हस्ताक्षर रचना की सुन्दर प्रेस कापी कर के हमको राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला करने के लिये प्रदान की। प्रेस की कठिनाई के कारण इसके प्रकाश कार्य कार्यालय द्वारा ही किया गया अतः कुछ अशुद्धियाँ भी विद्वज्जन उसे स्वयं शुद्ध कर लेंगे, ऐसी विज्ञप्ति के साथ कवि रघुनन्दन ग्रन्थ के प्रारंभ में इस विषय में जो बहुत ही सुन्दर उक्ति प्रकट की है हम भी यहां पुनः उद्धृत कर देना चाहते हैं।

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः ।
शैवलं फिल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ॥

प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका



श्लो.	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
अइ बले सम्भाषणे	३००	३५
अंकोटे ललः	२००	२५
अः क्षमा-दलाधयोः	१७२	२१
अध्यादिपु छः	११८	१४
अन्नि मदच	३	१
अज्ज आमन्त्रणो	३०६	३६
अत आ भिपि वा	३२६	३६
अत ए से	३१८	३८
अत ओत् सोः	८	२
अतोऽमः	१५	३
अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीपु	१६५	२०
अदगो दो मुः	१८१	३३
अदालो यथादिपु वा	४५	६
अद् दुकुले वा लस्य द्वित्वम्	१८६	२४
अधो म-न-गाम्	४०	५
अन्मुकुटादिपु	५८	७
अन्त्यस्य हलः	२६	४
अपी द्विवः	३०६	३६
अभि ह्रस्वः	१५८	१६
अम्हे जम्-ययोः	२६७	३२
अम्हेहिंतो अम्हेमुत्तोभ्यसि	२७४	३३
अम्हेहि भिसि	२७२	३२
अम्हेमु सुपि	२७८	३३
अयुवतस्य रिः	६५	८
अयाहि निवारणो	२६६	३५
अवाद् गाहेर्वाहः	३५३	४३
अवधो अम्पो दुःखा-ऽऽशेष-विस्मापनेपु	३०१	३५
अवधो दुःख-सूचना-सम्भावनेपु	२६८	३५
असेर्लोपिः	३७१	४५
अस्तेरासिः	३७३	४६

क्रमाङ्कः	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३२ अस्मदो ह्मह्मह्मं सौ	२६५	३२
३३ अह्मिरमि च	२६६	३२
३४ आङि च ते वे	२५६	३१
३५ आङि मे ममाई	२७०	३२
३६ आङो जादेशस्य	१७०	२१
३७ आच्य गौरवे	१६७	२५
३८ आच्च सौ	१५५	१८
३९ आ णो-णामोरङ्सि	२३२	२८
४० आत्मनो अप्पाणो वा	२३९	२९
४१ आदीतौ बहुलम्	१७४	२१
४२ आदेरतः	२७	४
४३ आदेर्यो जः	३९	५
४४ आपीडे म	५३	७
४५ आमः एसि	२२३	२७
४६ आमन्त्रणे वा विन्दुः	२२३	२८
४७ आमि सि	२४६	३०
४८ आमो णं	२३८	२९
४९ आम्र-ताम्रयोर्वः	२०८	२६
५० आलाने न लोः	२१४	२६
५१ आल्विल्लोल्लालवत्तोत्ता मतुपः	३१४	३७
५२ आवे च	४०२	४९
५३ आ समृद्ध्यादिपु वा	४३	६
५४ आहे इआ काले	२५५	२७
५५ इअं भूले	३२९	३९
५६ इच्च बहुपु	३२७	३९
५७ इज्जस्-शसोर्दीर्घश्च	१८५	२३
५८ इट्-मयोमिः	३२५	३९
५९ इत् एत् पिण्डसमेपु	१२१	१४
६० इतेस्तः पदादेः	३११	३६
६१ इत् पुङ्गे रोः	६४	८
६२ इत् सन्धवे	१९४	२८
६३ इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे	२४०	२९
६४ इदद्वित्वे	२३७	२९
६५ इदम इमः	२२६	२८
६६ इत्थं एतेन किं भवति तत्राद्या इमा वा	२२०	२७

६७	इदीपत्-पक्व-स्वप्न-वेतस-व्यञ्जन-मृदङ्गाऽङ्गरेषु	२८	४
६८	इदुतोः शसो णो	१४०A	१७
६९	इद् ईतः पानीयादिषु	५१	७
७०	इद् ऋष्यादिषु	४८	६
७१	इद्भ्यः स्मा-से	२८५	३४
७२	इर-किर-किला अनिशिचत्ताख्याने	२९३	३५
७३	इवे व्वः	३०८	३६
७४	ईश्र भूते	३२८	३९
७५	ईत् सिंह-जिह्वयोश्च	५०	७
७६	ईत् स्त्रियाम्	४१९	५२
७७	ईदुतोर्ह स्वः	१७७	२२
७८	ईद् धैर्ये	१९५	२४
७९	उत् ओत् तुण्डरूपेषु	५५	७
८०	उत्तामे स्मा हा च	३३५	४०
८१	उत्तारीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा	८६	११
८२	उत्तमोर्लः	३४३	४२
८३	उत् सौन्दर्यादिषु	७६	९
८४	उदुम्बरे दोर्लोपः	२०९	२६
८५	उदुम्बले द्वा वा	१८७	२३
८६	उदुतो मधुके	१८८	२३
८७	उदो विजः	३७९	४६
८८	उद् ऋत्वादिषु	२९	४
८९	उद्भमो धूमा	३६३	४४
९०	उपरि लोपः क-ग-ङ-त-द-प-ष-साम्	३६	५
९१	उः पद्म-तन्वीसमेषु	१७९	२२
९२	उर्जस्-शस्-टा-ङ्स्-सुप्सु वा	१५३	१८
९३	उलूहले ल्वा वा	१८७A	२३
९४	उ-सु-मु-विध्यादिष्वेकस्मिन्	३३१	३९
९५	ऋत आरः सुपि	१५२	१८
९६	ऋतोऽत्	१२०	१४
९७	ऋतोऽरः	३६५	४४
९८	ऋत्वादिषु तो दः	६२	८
९९	एकाचो हीश्र	३३०	३९
१००	ए च सुप्यङि-ङसोः	१४	२
१०१	एच्च क्त्वा तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु	३३४	४०

कमाङ्कः	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१०२ एत इद् वेदना-देवरयोः	६८	६
१०३ एतदः सात्वोत्वं वा	२४७	३०
१०४ एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु	५२	७
१०५ एन्नूपुरे	१६०	२४
१०६ ए भ्यसि	१४३	१७
१०७ ए शय्यादिषु	४१	५
१०८ एषामामो ण्	१४८	१७
११० ऐत एत्	६६	६
१११ एरावते च	८२	१०
११२ ओ च द्विधा कृजः	३१२	३७
११३ ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः	७२	६
११४ ओदवा-ऽपयोः	३१०	३६
११५ ओ वदरे देन	१८६	२३
११६ ओ सूचना-पश्चाताप-विकल्पेषु	२६२	३५
११७ ओत्, ओत्	७३	६
११८ क-ग-घ-ज-त-प-य-त्रां प्रायो लोः	१०	२
११९ कवत्थे वो मः	८७	११
१२० कापपिणो	१२४	१४
१२१ कालायसे यस्य वा	२१०	२६
१२२ काशेर्वासः	३५१	४३
१२३ किं-यत्-तद्भ्यो डस आसः	२२२	२१
१२४ किराणो प्रश्ने	२६७	३५
१२५ किमः कः	२१६	२७
१२६ किराते चः	६१	८
१२७ कुब्जे खः	६३	११
१२८ कृजः का भूत-भविष्यतोरच	३६५	४८
१२९ कृजः कुराणो वा	३६४	४८
१३० कृ-दा-श्रु-वक्त्रि-गमि-रुदि-रुशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं	३६७	४४
१३१ कृणो वा	१३३	१५
१३२ कैटभे वः	६०	११
१३३ कौशले वा	७५	६
१३४ क्ते	४१२	५१
१३५ क्ते तुरः	४११	५१

समाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
३७ वते :	१०	५१
३८ वत्व ऊण :	४१५	५१
३९ वमस्य	१८१	२३
४० क्रीञः किरणः	३९६	४८
४१ ऋधेभूरः	३८५	४७
४२ किञ्छट-दिल्लट-रत्न-क्रिया-शाङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य	१७१	२१
४३ क्वचिद् डसि डचोर्लोपः	२३	३
४४ क्वचिद् गुक्तस्यापि	५४	७
४५ क्वथेर्देः	३५८	४३
४६ क्षमा-वक्ष-क्षरोपु वा	६७	८
४७ क्षियोभिज्जः	३४०	४१
४८ ख-घ-थ-ध-भां-हः	५९	७
४९ खादि-धाव्योः खा-धी	३२९	४१
५० गद्गदे २ः	८४	१०
५१ गमादीनां द्वित्वं वा	४०५	५०
५२ गत्तंङः	११७	१३
५३ गर्भिते णः	८०	१०
५४ गृहे घरोऽपत्ती	२१२	२६
५५ ग्रमेर्विसः	३५२	४३
५६ ग्रहे दीर्घो वा	४०९	५१
५७ ग्रहेर्गेहः	४००	४९
५८ घुणो घोलः	३४८	४२
५९ घे वत्वा-तुमुन् तव्येषु	४१६	५१
६० ङसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च	२३६	२९
६१ ङसा से	२४५	३०
६२ ङसि तुमो-तुह-तुज्झ-तुम्ह-तुम्भा	२६१	३१
६३ ङसः आ-दो-दु-ह्यः	२०	३
६४ ङगो वा	१४४	१७
६५ ङसा वा	१६२	१९
६६ ङसो तत्ती तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि	२५९	३१
६७ ङे ए म्मी	२२	३
६८ ङेहि	२२४	२७
६९ ङेस्सि-म्मि-त्थाः	१३६	१६

१७१	डौ तुमम्मि	२६२	३२
१७२	चतुरश्चत्तारो चत्तारि	२१८	२७
१७३	चतुर्थी-चतुर्दशयो स्तुना	१७८	२२
१७४	चतुर्थ्याः षष्ठी	१८	३
१७५	चन्द्रिकायां मः	१६७	२०
१७६	चित्र चेन्न ग्रवधारणे	२६१	३५
१७७	चित्रदिश्याः	३८६	४७
१७८	चिन्हे धः	२०५	२५
१७९	चो ब्रज-नृत्योः	३४१	४१
१८०	चौर्यसमेष्टु रिश्रं	२०२	२५
१८१	छायायां हः	१६८	२०
१८२	जल्पेलो मः	३४७	४२
१८३	जस् शस्-ङसि-ग्रामसु दीर्घः	१३	२
१८४	जस्-शस्-ङसो णो	२३१	२८
१८५	जस्-शसोलोपः	१२	२
१८६	जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च	१४०	१६
१८७	जस ओश्च यूत्वम्	१३६	१६
१८८	जसो वा	१५७	१६
१८९	जिघ्रतेः पा-पाश्रौ	३६२	४४
१९०	जृभो जंभाश्र	३४६	४२
१९१	ज्ञो जाण-मुणौ	३६८	४६
१९२	ज्ञो णज्ज-णब्बो वा	३०८	५०
१९३	ज्यायामीत्	१७३	२१
१९४	अयि तद्वर्गान्तः	७	२
१९५	टाऽऽपोर्णः	१६	३
१९६	टा-ङस्-डीनामिदेददातः	१६०	१६
१९७	टा-ङचोस्तइ तए तुमए तुए	२५५	३१
१९८	टा णा	१४१	१७
१९९	टा णा	२३५	२८
२००	टो ङः	८८	११
२०१	ठा-भा-गादच्च-वर्तमान-भविष्यद्-विध्याद्ये कवचनेषु	३६१	४३
२०२	ठो ङः	१६६	२५
२०३	डस्य च	१६८	२५
२०४	णवरः केवले	२६५	३५
२०५	णवरि आनन्तर्ये	२६६	३५

क्रमाङ्क		सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
२०६	एवि वैपरीत्ये	३०२	३६
२०७	एिच एदादेरत आत्	४०१	४६
२०८	गुदेर्लोणः	३८६	४७
२०९	एो शसि	२६६	३२
२१०	त्तं वाऽमि	२५३	३०
२११	तद ओइच	२४४	३०
२१२	तदेतदोः सः सावनपुंसके	२४३	३०
२१३	तल् त्वयोर्दा-त्तर्णा	३१३	३७
२१४	तालवृन्ते णठः	२०७	२६
२१५	तिणिण जस्-शस्म्याम्	१४६	१८
२१६	तुज्भे तुम्हे जसि	२५२	३०
२१७	तुज्भेसु तुम्हेसु सुपि	२६४	३२
२१८	तुज्भेहि तुम्हेहि तुम्भेहि भिसि	२५८	३१
२१९	तुमाइ च	२५७	३१
२२०	तुम्हाहितो तुम्हासुतो भ्यसि	२६०	३१
२२१	तूर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः	१९६	२४
२२२	तृन इरः शीले	४१७	५१
२२३	तृपस्थिम्पः	३६१	४८
२२४	ते तिपोरिदेती	३१७	३८
२२५	त्तो डसेः	२४८	३०
२२६	त्तो-त्थयोस्तो लोपः	२४६	३०
२२७	त्तो दो डसेः	२२१	२७
२२८	त्य-थ्य-द्यां च्छ-ज्जाः	७१	६
२२९	त्रसेर्वज्जः	३८०	४६
२३०	त्रेस्ती	१५०	१८
२३१	त्वरस्तुवरः	३५६	४३
२३२	थास्-सिपोः सि से	३२४	३६
२३३	वशादिषु हः	१००	१४
२३४	दाढादयो बहुलम्	२१५	२६
२३५	दिक्-प्र वृषोः सः	२८०	३३
२३६	दिवसे सस्य	१०३	१२
२३७	दुहि-लिहि-वहां दुग्ध-लिग्ध-वग्धा	४०७	५०
२३८	दृडो दूमः	३८१	४७
२३९	दृशेः पुलग्र-शिग्रक-अवक्खाः	३६८	४५

२४१	दैवे वा	१६२	२४
२४२	दोला-दण्ड-दशनेषु डः	६४	११
२४३	दोहवे णः	६७	११
२४४	द्वे रो वा	१०४	१२
२४५	द्विवचनस्य बहुवचनम्	११	२
२४६	द्वेदुवे दोणि वा	१४६	१७
२४७	द्वेदौ	१४७	१७
२४८	धातोर्भविष्यति हिः	३३३	४१
२४९	ध्य-ह्योर्भः	१०७	१२
२५०	न डि-ड्स्फोरेवातौ	१४२	१७
२५१	नगोर्हलि	४	१
२५२	न त्थः	२२६	२८
२५३	न धृत्तिदिषु	११६	१३
२५४	न नपुंसके	२१६	२६
२५५	नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो	२८७	३४
२५६	न बिन्दु परे	१३०	१५
२५७	न र-होः	११४	१३
२५८	न विद्युति	२८	२४
२५९	न शिरो-नभसी	२८८	३४
२६०	न-सान्त-प्रावृट्-शरदः पुसि	२४२	२६
२६१	न स्तम्भे	१०६	१३
२६२	नाऽऽतोऽदातौ	१६१	१६
२६३	नाऽऽमन्त्रे सावोत्व-दीर्घत्व बिन्दवः	२५	४
२६४	नानेकाक्षः	३२२	३८
२६५	निपाताः	२८६	३५
२६६	निरो माङो माणः	३७७	४६
२६७	नीडादिषु च	१६३	२४
२६८	नो णः सर्वत्र	६	२
२६९	नोत्सुकोत्सवयोः	१२६	१४
२७०	न्त-माणौ शतृ-शानचोः	४१८	५२
२७१	न्ति हेत्वा मो-मु-मा बहुषु	३२३	३८
२७२	न्तु ह मो बहुषु	३३२	३९
२७३	न्मो म्मः	६६	११
२७४	पटेः फलः	३४५	४२
२७५	पत्तने	२०४	२५

२७६	पदस्य	२५०	३०
२७७	पदः पालः	३८२	४७
२७८	परुष-परिघ-परिखासु फः	६३	८
२७९	पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु लः	२०३	२५
२८०	पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः	१५४	१८
२८१	पृष्ठा-ऽक्षि प्ररुताः स्त्रियां ङा	१५६	१९
२८२	पो वः	८५	१०
२८३	पौरादिष्वजः	७४	९
२८४	प्रतिसर-वेतस-पताकासु ङः	३३	५
२८५	प्रथम-शिथिल-निषधेषु ङः	६२	११
२८६	प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः	८३	१०
२८७	प्रादेर्भवः	३३९	४१
२८८	प्रादेर्मीलः	३४९	४२
२८९	फो भः	६१	११
२९०	बाष्पेऽभ्रुणि हः	१२३	१४
२९१	बिसिन्यां भः	१८०	२२
२९२	बुङ-खुप्पौ मस्जेः	३६०	४८
२९३	बृहस्पतौ व-होर्भ-औ	१४५	१७
२९४	ब्रह्माद्या अात्मवत्	२४१	२९
२९५	भाव-कर्मणोर्वश्च	४०४	५०
२९६	भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः	३६३	४८
२९७	भिन्दिपाले णङः	१२८	१५
२९८	भियो भा-बीहौ	३७६	४६
२९९	भिसौ हिं	१७	३
३००	भुजादीनां वृत्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः	४१४	५१
३०१	भुवो हो-हुवौ	३१६	३८
३०२	भ्यसो हितो सुतो	२१	३
३०३	मं ममं	२६८	३२
३०४	मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि	२७६	३३
३०५	मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि ऊसौ	२७३	३२
३०६	मध्यान्हं हस्य	१०६	१२
३०७	मव्ये च	३२१	३८
३०८	मन्मथे वः	६५	११
३०९	ममि-मि डौ	२७७	३३
३१०	मयूर-मयूख-योध्वी वा	४२	६

क्रमाङ्कः		सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३१३	मातुरात्	१८२	२३
३१४	मिना स्सं वा	३३६	४०
३१५	मि-मो-मु-मानामधो हृश्च	३७२	४५
३१६	मृजेर्लुभ-पुसौ	३७४	४६
३१७	मृदो लः	३६६	४६
३१८	मे मम मह मज्झ ऊसि	२७५	३३
३१९	मो विन्दुः	२	१
३२०	मो-मु मैहि-स्सा-हित्या	३३७	४०
३२१	मन-ज्ञ-पञ्चाशत् पञ्चदशेषु णः	१२७	१५
३२२	मिमव-मिअ-विआ इवार्थे	३०५	३६
३२३	म्लै वा-वाश्री	३५६	४३
३२४	यक ईअ-इज्जो	४०३	५०
३२५	यमुनाया मस्य	१६६	२०
३२६	यष्टद्यां लः	१७६	२२
३२७	यावदादिषु वस्य	१३४	१६
३२८	युक्तस्य	३१	४
३२९	युधि-बुध्योर्भः	३८३	४७
३३०	युष्मदस्तं तुभं	२५१	३०
३३१	राज्ञश्च	२३०	२८
३३२	रुदेर्वः	३७५	४६
३३३	रुधेन्ध-म्मौ	३६२	४८
३३४	रुपादीनां दीर्घः	३८४	४७
३३५	रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु	३०४	२६
३३६	रो रा	२८४	३४
३३७	र्त्तस्य टः	११५	१३
३३८	यं-शय्या-ऽभिमान्युषु जः	११२	१३
३३९	लवण-नवमल्लिकयोर्वेन	१६४	१६
३४०	लादेशो वा	३१६	३८
३४१	लाहल लाङ्गल-लाङ्गलेषु वा णः	६८	११
३४२	लुतः क्लृप्त इलि	१६१	२४
३४३	लोपोऽरण्ये	१८३	२३
३४४	वक्रादिषु	५	२
३४५	वर्गेषु युजः पूर्वः	३७	५
३४६	वर्तमान-भविष्यदनद्यतनयोज्जः ज्जा वा	३२०	३८

३४६	विप्रकर्षः	३०	४
३५०	विह्वले म्भ-हौ वा	१२६	१५
३५१	वृक्षे वेन र्वर्वा	६६	८
३५२	वृधेर्दः	३५५	४३
३५३	वृन्दे वो रः	२१३	२६
३५४	वृश्चिके ज्छः	४७	६
३५५	वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः	३५४	४३
३५६	वेः क्के च	३६७	४६
३५७	वेष्टेश्च	३४२	४२
३५८	वो च शसि	२५४	३१
३५९	वो भे तुजभाणं तुम्हाणमामि	२६३	३१
३६०	शनादीनां द्वित्वम्	३८७	४७
३६१	शकेस्तर-चग्र-तीरां:	३८८	४७
३६२	शद्-तृ-पत्योर्दः	३५७	४३
३६३	शरदो दः	२७६	३३
३६४	शषोः सः	४४	६
३६५	शस एत्	२३४	२८
३६६	शेषः संस्कृतात्	३०७	३७
३६७	शेष-ऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादौ	३५	५
३६८	शेषाणामदन्तता	३६६	४५
३६९	शेषोऽदन्तवत्	१३७	१६
३७०	श्च-त्स-प्सां छः	१२५	१४
३७१	श्मश्रु-श्मशानयोरादेः	२०१	२५
३७२	श्रदो धो दहः	३७८	४६
३७३	श्रु-हु-जि-लू-धुवां ण्योऽन्त्येह्रस्वः	३५०	४२
३७४	द्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा	३६६	४४
३७५	षट्-शावक-सप्तपर्णानां छः	६६	१२
३७६	ष्क-स्क-क्षां वखः	५६	७
३७७	ष्टस्य ठः	१७५	२२
३७८	ष्ठा-ध्या-गानां ठाग्र-भाग्र-गाग्राः	३६०	४३
३७९	ष्यस्य फः	२०६	२५
३८०	ष्म-यक्ष-विस्मयेषु स्हः	११६	१४
३८१	संख्यायां च	१०१	१२
३८२	संज्ञायां वा	१०२	१२
३८३	सटा-शकट-कैटभेषु ङः	८६	११
३८४	सन्धावद्यामजलोपविशेषा ङङलम	१	१

क्रमाङ्कः		सूत्राङ्कः	पञ्चाङ्कः
३८६	सर्वज्ञतुल्येषु अस्य	१०५	१२
३८७	सर्वत्र लबराम्	३४	५
३८८	सर्वदिर्ज्ञस एत्वम्	१३५	१६
३८९	सीकरे भः	७६	१०
३९०	सुपः सुः	२४	४
३९१	सु-भिस्-सुप्सु दीर्घः	१३८	१६
३९२	सू कुत्सायाम्	३०३	३६
३९३	सूर्ये वा	११३	१३
३९४	सेवादिषु	१३२	१५
३९५	सोबिन्दुनंपुंसके	१८४	२३
३९६	स्तम्भे खः	११०	१३
३९७	स्तस्य थः	५७	७
३९८	स्त्रियां शस उदीर्घः	१५६	१६
३९९	स्त्रियामात्	२८३	३४
४००	स्त्रियामात एत्	१६३	१६
४०१	स्थाणावहरे	१५१	१८
४०२	स्तुषायां ण्हः	१६६	२०
४०३	स्नेहे वा	३८	५
४०४	स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य	१२२	१४
४०५	स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः	७७	१०
४०६	स्फटिके लः	७८	१०
४०७	स्फुटि-चल्योर्वा	३४४	४२
४०८	स्फोटके	१११	१३
४०९	स्मरतेभर-सुमरी	३६४	४४
४१०	स्स-स्सिमोरद् वा	२२७	२८
४११	स्सो डसः	१६	३
४१२	स्सो-स्सो	३७०	४५

। लः

६०

८

२८२

३३

२६०

३५

२६४

३५

भावनेषु

४०६

५०

४१७. ह-क्राहार-कारा

४१८. ह-नः-स्नः-ष्णः-क्षः-क्ष्णः-क्ष्णः-क्ष्णः

४६

६

४१९. ह-न-ह-क्षो-ष-न-ल-मां-स्थिति-रुद्धवर्म

१०८

१२

प्राकृतानन्दप्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका

अ. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
अंकोठे लः	२००
×	
×	
×	
१ अपौ विव	३०६
अम्हेहितो अम्हेसुत्तो म्यसि	२७४
×	
×	
×	
२ अव्वो अम्मो दुःखाऽऽक्षेप-	
विस्मापनेषु	३०१
असेर्लोपः	२६६
×	
३ अस्थिति	२१७
आडो जादेशस्य	१७०
आच्च सौ	१५५
×	
×	
आमः एसि	२२३
आमि सि	२४६
आत्विहलोललालवत्तोत्ता मतुपः	३१४
×	
×	
४ इअं भूते	३२६
×	
इट् मयोमिः	३२५
×	
×	
×	
×	

क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
अंकोले लः	२।२५
१ अत इदेतो लुक च	११।१०
२ अदीर्घः सम्बुद्धौ	११।१३
३ अनादावयुजोस्तथयोदंधौ	१२। ३
×	
अम्हाहितो अम्हासुन्तोम्यसि	६।४६
४ अस्मदः सौ हके हगे अहके	११।६
५ अस्मदोजसावअं च	१२।२५
६ अयुक्तस्यानादौ	२।१
×	
अस्तेर्लोपः	७।६
७ अस्तेरच्छ	१२।१६
×	
आडो अस्य	३।५५
आच सो	५।३५
८ आत्मनि पः	३।४८
९ आनन्तर्ये एव रि	६।८
आम एसि	६।४
आमासि	६।१२
आत्विहलोलवन्तेन्तामतुपः	४।२५
१० आविःकत कर्मभावेषु वा	७।२८
११ आश्चर्यस्याच्चरिअं	१२।३०
×	
१२ इ गघसमेषु	१२।६
इट् मिपोमिः	७।३
१३ इत्सदादिषु	१।११
१४ इः श्रीह्रीक्रीतवृत्तान्तवलेशम्ला-	
नस्वप्नस्पर्शहर्षहिर्गर्हेषु	३।६२
१५ इवस्य पिवः	१०।४

क. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि सूत्राङ्क

५ इवे ष्व	३०८
ईत् स्त्रियाम्	४१६
उत्तरीयाऽऽनीययोर्गस्य जो वा	८६
उद्धमोद्धुमा	३६३
६ उद्धले द्वा वा	१८७
उल्लहले स्वा वा	१८७ A
×	
×	
एच्च क्त्वातुमुन् तव्य-	
भविष्यत्सु	३३४
×	
ओत् ओत्	७३
×	
×	
×	
क्रुधेर्भूरः	३८५
×	
×	
×	
×	
क्वचिद् युक्तस्यापि	५४
×	
×	
७ घे क्त्वा-तुमुन्तव्येषु	४१६
इसा से	
इसि तुमो-तुह-तुज्भ-तुम्ह-	
तुम्हा	२६१
८ इसो वा	१६२
×	
डे ए-म्मी	२२
×	
×	
×	

क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि सूत्राङ्क

×	
ईच स्त्रियाम्	७।११
उत्तरीयाऽऽनीययोज्जो वा	२।१७
उद्धम उद्धुमा	८।३२
×	
उल्लरवस्वेत्वा वा	१।२१
१७ ऋरीति	१।३०
१८ लृतः क्लृप्तः इलिः	१।३३
एच्च क्त्वातुमुन् तव्यभविष्यत्सु	७।३३
१९ एवस्य जेष्वा	१२।२३
आत् ओत्	१।४१
२० कन्यायां न्यस्य	१०।१०
२१ करेष्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः	४।२८
२२ कुङ्कुङ्गमां क्तस्य डः	११।१५
क्रुधेर्भूरः	८।६४
२३ क्त्व इअः	१२।६
२४ क्त्व स्तूनम्	१०।१३
२५ क्तान्तादुश्च	११।११
२६ क्तो दाणिः	११।१६
क्वचित्पृक्तस्यापि	१।११
२७ क्षस्य स्कः	११।८
२८ खिदेर्विसूरः	८।६३
२९ गर्दभसंभदंवितदिविच्छदिषु	
दंस्य	३।२६
घेत् क्त्वा तुमुन् तव्येषु	८।१६
×	
इसि तुमो तुह तुज्भ तुम्ह	
तुम्हाः	६।३१
×	
३० इसो हो वा दीर्घत्वञ्च	११।१२
डे रेम्मी	५।६
३१ डेदेन हः	६।१६
३२ चर्चैश्चम्पः	८।६५
३३ चवर्गस्य स्पष्टतया	

क. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि सूत्राङ्कः

६ चित्र चेन्न अवधारणे	२६१
×	
१० जस ओ वो वाऽन्वं यूत्वं च	१४०
×	
जस ओश्च यूत्वम्	१३६
जस्-शस्-ङसो णो	२३१
×	
११ ङो णज्ज-णव्वो वा	४०८
×	
×	
१२ भयि तद्वर्गान्तिः	७
टा-ङस् ङीनामिदे ददातः	१६०
टा-ङचोस्तइ तए तुमए तुए	२५५
×	
×	
१३ णवरि आनन्तनयें	२६६
×	
णुदेर्लोणः	३८६
णो शसि	२६६
×	
×	
×	
त्वं वाऽमि	२५३
तुज्जेहिं तुम्हेहिं तुब्भेहिं भिसि	२५८
तृणइरः शीले	४१७
१४ ते-तिपोरिदेतौ	३१७
त्रेस्ती	१५०
×	
१५ दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ	
वब्भा	४०७
×	
१६ दोहवे णः	६७
×	

क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि सूत्राङ्कः

×	
३४ चिट्ठस्य चिष्टः	१११४
×	
३५ जश्शस्-ङसां णो	५१३८
जसश्च ओ यूत्वम्	५१६
जश्शस्-ङसां णो	५१३८
३६ जोयः	१११४
×	
३७ जस्य ऊजः	१०१६
३८ ऊज चच	१०११
×	
टाङ्सिङस्-ङ्कीनामिदेददातः	५१२२
टाङचोस्तइ तएतुमए तुमे	६१३०
३९ टामोर्णः	५१४
४० डुकुणः करः	१२१५
×	
४१ णिजंश्शसोर्वा वलीवे	
स्वरदीर्घश्च	१२१११
णुदो णोल्ल	८७
णो शसि	६१४४
४२ णो नः	१०१५
४३ ततिपो रिदेतो	७११
४४ तिपात्थि	१२१२०
तु चामि	६१२७
तुज्जेहिं तुम्हेहिं भिसि	६१३४
तृणइरः शीले	४१२४
×	
त्रस्ति	६१५५
४५ ददातं दे दइस्स लृटि	१२११४
×	
४६ दृशेः पेक्खः	१२११८
×	
४७ धातोर्भाविकर्तृकर्मसु	
परस्मैपदम्	१२१२७

६. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
×	
नपुंसके स्वभोरिदमिणमिणमो २८७	
नाऽऽमन्त्रणो सावोत्व-दीर्घत्व	
बिन्दव	२५
×	
×	
पदः पालः	२८३
×	
परुष-परिषपरिखासु फः	
×	
×	
×	
×	
१७ बाष्पेऽभ्रणि हः	१२३
१८ बृहस्पतौ ब-होर्भ-औ	१४५
×	
×	
×	
१९ भियो-भाः बीहौ	३७६
×	
भ्यसो हितो सुत्तो	२१
×	
×	
मृजेर्लुभ-पुसौ	३७४
×	
यावदादिषु वस्य	१३४
×	
रुषादीनां दीर्घः	३८४
×	

क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
४८ न लृटि	१२।१३
नपुंसके स्वभोर्दिदमिण-	
मिणमो	६।१८
नामन्त्रणो सावोत्व-	
दीर्घबिन्दवः	५।२७
४९ नान्त्यद्वित्वे	७।९
५० नैदावे	७।२९
पदेः पालः	८।१०
५१ पनसेऽपि	२।३७
परुषपलितपरिखासु फः	२।३६
५२ पुत्रेऽपि बवचित्	१२।५
५३ पैशाची	१०।१
५४ प्रकृतिः शौरसेनी	१०।२
५५ प्रकृतिः संस्कृतम्	१२।२
५६ प्रकृत्या दोलादण्डदशनेषु	१२।३१
×	
×	
५७ ब्रह्मण्यविज्ञकन्यकानां ण्यभ्-	
न्यानां ऊजो वा	१२।७
५८ भविष्यति मिपास्सं वा स्वर-	
दीर्घत्वञ्च	१२।२१
५९ भाजने जस्य	३।४
×	
६० भोभुवस्तिङि	१२।१२
भ्यसो हितो सुन्तो	५।७
६१ मागधी	११।१
६२ मिपो लोटि च	१२।२९
मृजेर्लुभसुपौ	८।६७
६३ ययि तद्वर्गान्तः	४।१७
यावादादिषु वस्य	४।५
६४ राज्ञो राचि टाङ्सिङ्स्-	
ङिषु वा	१०।१२
रुषादीनां दीर्घता	८।४६
६५ र्यस्य रिचिः	१०।८

क. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि सूत्राङ्क

लाहल-लाङ्गल-लाङ्गलूलेषु वा णः ६८

×

२० लृतः क्लृप्तः इलि १६१

×

×

×

×

×

वे कके च ३६७

×

शकेस्तर-चअ-तीराः ३८८

×

×

×

×

षट्-शावकसप्तपर्यानां छः ६६

×

×

ष्ठा-ध्या-गानां-ठाअ-भाअ-भाआः ३६६

सर्वज्ञतुल्येषु अस्य १०५

×

×

×

२१ सीकरे भः ७६

×

×

×

×

×

हुदानपृच्छानिर्धारणेषु २६०

×

×

हन्-ह्ल-ह्लेषु नलमां स्थितिरुर्ध्वम् १०८

हन्-ह्ल-ह्लेषु नलमां स्थितिरुर्ध्वम् १०८

क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि सूत्राङ्क

लाहले णः २१४०

६७ लिहेलिज्झ ८१४६

×

६८ वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोर-

युजोरनाद्योराद्यौ १०१३

६९ वाष्पेश्चुणि हः ३१३८

७० विश्वेअ अवधारणे ६१३

७१ A विसिन्यां भः २१३८

७१ B बृहस्पती बहेर्भाअौ ४१३०

वेक्वे च ८१३१

७२ व्यापृते डः १२१४

शकेस्तरव अतीराः ८१७०

७३ शीकरे भः २१५

७४ शृगालशब्दस्य शिआला

शिआले शिआलकाः १११७

७५ शेषं महाराष्ट्रीवत् १२१३२

७६ शौरसेनी १२११

षट्शावकसप्तपर्यानां हूः २१४१

७७ षसोः सः १११३

७८ ष्टस्य सटः १०१६

ष्ठाध्यागानांठाअभाअभाआः ८१२५

सर्वज्ञतुल्येषु नः ३१५

७९ सर्वज्ञेज्झितज्ञयोर्ण १२१८

८० सर्वनाम्नां डे सित्वा १२१२६

८१ सिच ३१३७

×

८२ स्तम्बे ३११३

८३ स्थश्चित्तुः १२११६

८४ स्मरतेः सुमर १२११७

८५ स्त्रियामित्थी १२१२२

८६ स्नस्य सनः १०१७

हुदानपृच्छानिर्धारणेषु ६१२

८७ हृदयस्य हितअकम् १०११४

८८ हृदयस्य हृडकः १११६

ह्लह्लेषु नलमां स्थितिरुर्ध्वम् ३१८

भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृता चेति भेदतः ।
कौमारपाणिनीयादिसंस्कृता संस्कृता भवेत् ॥ १

इयं तु देवतादीनां मुनीनां नायकस्य च
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रमन्त्रिकञ्चुकिनामपि ॥ २

गार्ग्यगालवशाकल्यपाणिन्याद्या यथर्षयः ।
शब्दराशेः संस्कृतस्य व्याकर्तारो महत्तमाः ॥ ३

तथैव प्राकृतादीनां षड्भाषाणां महामुनिः ।
आदिकाव्यकृदाचार्यो व्याकर्त्ता लोकविश्रुतः ॥ ४

यथैव रामचरितं संस्कृतं तेन निर्मितम् ।
तथैव प्राकृतेनापि निर्मितं हि सतां मुदे ॥ ५

पाणिन्याद्यैः शिक्षितत्वात्संस्कृती स्याद्यथोत्तमा ।
प्राचेतसव्याकृतत्वात्प्राकृत्यपि तथोत्तमा ॥ ६



प्राकृतानन्द



प्रेङ्खन्नखच्छविमिथश्छुरितेन यस्मिन्,
रक्ताञ्चलग्नथनकौतुकमन्वकारि ।
खेदोद्गमद्विगुणदानजलः स भूयान्,
भूयात् करग्रहविधिः शिवयोः शिवाय ॥ १ ॥

रचयति नृसिंहरत्यै रघुनाथः सरसदैववित्तनयः ।
रसिकानन्दनिमित्तं सानन्दं प्राकृतानन्दम् ॥ २ ॥

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः ।।
शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ? ॥ ३ ॥

ये पण्डितकुलोत्पन्ना रसवन्तोऽल्पबुद्धयः ।
तदर्थमयमारम्भः किमज्ञातं मनीषिणाम् ? ॥ ४ ॥

*

सन्धावचामजूलोपविशेषा बहुलम् ॥ १ ॥

अचां सन्धावज्जविशेषा लोपश्च वा स्युः । नदीस्रोतः णइस्रोत्तो ।
राम ओ इति स्थिते रामो, अकारलोपः ।

मो बिन्दुः ॥ २ ॥

मस्य अनुस्वारः स्यात् । कण्ह अम् इति स्थिते कण्हं ।

अचि मश्च ॥ ३ ॥

अचि परे मस्य म एव स्यात् । अनुस्वारापवादः । धणम् ओहरइ
इति स्थिते धणमोहरइ । 'अनचि मो बिन्दुः' इत्येव सूत्रयितु-
मुचितम् ।

नजो हलि ॥ ४ ॥

नकार-अकारयोः अनुस्वारः स्याद् हलि । अनसः अंसो, अत्र

वक्रादिषु ॥ ५ ॥

एषु अनुस्वारागमः स्यात् । वक्रं वंक्रं । वक्रं व्यस्र ह्रस्व अश्रु इमश्च
गृष्टि मूर्द्धन् मनस्विनी दर्शन स्पर्श वर्ण प्रतिश्रुत् अश्व अभिमुक्त
वक्रादिः ।

मांसादिषु वा ॥ ६ ॥

एषु वा बिन्दुः स्यात् । संयोगेऽणो ह्रस्व इति वाच्यम् । मांसं
मंसं मासं । आकृतिगणोऽयम् ।

झयि तद्वर्गान्तः ॥ ७ ॥

तद्वर्गान्तोऽनुस्वारो वा स्याद् झयि । शङ्का संका सङ्का ।

॥ इति सन्धिः ॥

*

अत ओत् सोः ॥ ८ ॥

अकारान्तात् परस्य सोः ओत् स्यात् ॥

नो णः सर्वत्र ॥ ९ ॥

यत्र कचित् स्थितस्य नस्य णः स्यात् ।

क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लोपः ॥ १० ॥

कादीनां नवानामयुक्तानामनादिवर्तिनां प्रायो लोपः स्यात्
नारायणः णाराअणो । अयुक्तानामिति किम् ? शक्रः सक्रो इत्यादि
अनादिवर्तिनामिति किम् ? कृष्णः कण्हो इत्यादि ।

द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ११ ॥

सुपां तिङां च द्विवचनस्य बहुवचनं स्यात् ।

जस्-शसोर्लोपः ॥ १२ ॥

अकारान्तात् परयोः जस्-शसोः लोपः स्यात् ।

जस्-शस्-डसि-आमसु दीर्घः ॥ १३ ॥

एषु अतो दीर्घः स्यात् ।

ए च सुप्यङि-डसोः ॥ १४ ॥

अकारस्य एत्वं स्यात् सुपि, न तु ङि-डसोः । चाद् दीर्घोऽपि

अकारान्तात् परस्य अमः अकारस्य लोपः स्यात् । नारायण
नाराअणं । ननु 'सन्धावचाम्०' (१) इति अलोपेनैव भाव्यम्
इति चेत्, न, तत्र बहुलग्रहणात् कचिदप्रवृत्तेरपि सम्भावनीयत्वात्
नारायणान् णाराअणा णाराअणे ।

टा-ऽऽमोर्णः ॥ १६ ॥

अकारान्तात् परयोः टा-ऽऽमोः णः स्यात् । नारायणेन णारा
अणेण । नारायणानां णाराअणाणं ।

भिसो हिं ॥ १७ ॥

अकारान्तात् परस्य भिसो हिं इत्यादेशः स्यात् । नारायणै
णाराअणेहिं ।

चतुर्थ्याः षष्ठी ॥ १८ ॥

स्यात् । तथा हि ।

स्सो ङसः ॥ १९ ॥

अकारान्तात् परस्य ङसः स्स इत्यादेशः स्यात् । नारायणाय
णाराअणस्स । नारायणेभ्यः णाराअणाणं ।

ङसेः आ-दो-दु-हयः ॥ २० ॥

अदन्तात् परस्य ङसेः आ दो दु हि इति प्रत्येकं चत्वार आदेशा
स्युः । नारायणात् णाराअणा णाराअणादो णाराअणादु णारायणाहि
'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः ।

भ्यसो हितो सुत्तो ॥ २१ ॥

अदन्ताद् भ्यसो हितो सुत्तो इत्येतौ आदेशौ स्याताम् । नारा
यणेभ्यः णाराअणाहितो णाराअणासुत्तो । नारायणस्य णाराअणस्स

ङेः ए-म्मी ॥ २२ ॥

अदन्ताद् ङि इति सप्तम्येकवचनस्य ए म्मि इत्येतौ स्याताम्
कचिद् ङसि-ङ्योर्लोपः ॥ २३ ॥

ङसि-ङ्योः परयोः कचिदतो लोपः स्यात् । नारायणे णाराअणे
णाराअणम्मि ।

अदन्तात् पूर्वस्य सुप् इत्यदिभ्यः स्यात् । आत्वापवादः ।

नारायणेषु णाराअणेषु । 'ए च०' (१४) इति एत्वम् ।

नाऽऽमन्त्रणे सावोत्व-दीर्घत्व-बिन्दवः ॥ २५ ॥

सम्बोधने ओत्व-दीर्घत्वा-ऽनुस्वारा न स्युः ।

अन्त्यस्य हलः ॥ २६ ॥

[अन्त्यस्य हलः] लोपः स्यात् । हे नारायण हे णाराअण ।

रागः राओ । 'क-ग०' (१०) इति गलोपः । रागाः राआ राए
'जस्-शसोः०' (१२) इति लोपः, 'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः
रागम् राअं । रागान् राआ राए । रागेण राएण । रागैः राएहिं । रागाय
राअस्स । रागेभ्यः राआणं । रागात् राआ राआदो राआदु राआहि
रागेभ्यः राआहिंतो राआसुत्तो । रागस्य राअस्स । रागाणाम् राआणं
रागे राए राअम्मि । रागेषु राएसु ।

आदेरतः ॥ २७ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इदीषत्-पक्-स्वप्न-वेतस-व्यजन-मृदङ्गा-ऽङ्गारेषु ॥ २८ ॥

एषु सप्तसु मध्ये आदेः अतः इः स्यात् ।

उद् ऋत्वादिषु ॥ २९ ॥

एषु ऋतः उः स्यात् । मृदङ्गः मुहंगो । ऋतु मृणाल पृथिवी वृन्दा-
वन प्रावृद् प्रवृत्ति विवृत संवृत निवृत वृत्तान्त परभृत मातृक जामा-
तृक मृदङ्ग इत्यादि ऋत्वादिः ।

विप्रकर्षः ॥ ३० ॥

-इत्यधिकृत्य ।

युक्तस्य ॥ ३१ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इः श्री-ही-क्रीत-क्लान्त-क्लेश-म्लान-स्वप्न-स्पर्श-हर्षा-ऽर्ह-गर्हेषु ॥ ३२ ॥

एषु एकादशसु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य इत्वम्, तत्स्व-
रता च । 'नो याः०' (९) इति णः । स्वप्नः सिविणो इत्यादि ।
'उपरि०' (३६) इति वक्ष्यमाणेन पलोपः ।

एषु तस्य ङः स्यात् । प्रतिसरः पडिसरो । 'सर्वत्र०' (३४)
 इति वक्ष्यमाणेन रलोपः । ननु पडिवआ पडिसिद्धि इत्यादौ तस्य ङः
 केन ? इति चेत्, उच्यते, प्रतिसर इत्यत्र प्रतिना सरति प्रतिपूर्वक
 इति यावद् इति व्याख्यानात्, 'प्रतिसर'शब्दस्यापि प्रतिनैव सरत्वा
 दिति । वेतसः वेडिसो ।

सर्वत्र लबराम् ॥ ३४ ॥

संयुक्तस्य उपर्यधःस्थितानां लकार-वकार-रेफाणां लोपः स्यात्
 शेषाऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादौ ॥ ३५ ॥

युक्तस्य लोपे जाते यः शेषः आदेशश्च तयोः अनादौ वर्त्तमान
 योर्द्वित्वं स्यात् । पक्कः पिक्को ।

उपरि लोपः क-ग-ङ-त-द-प-ष-साम् ॥ ३६ ॥

कादीनामष्टानां युक्तस्य उपरिस्थितानां लोपः स्यात् । भक्तो
 भक्तो ।

वर्गेषु युजः पूर्वः ॥ ३७ ॥

'शेषा०' (३५) इति यस्य द्वित्वं क्रियते स द्वितीयः चतुर्थो वा
 चेत् तत्पूर्वः प्रथमः तृतीयो वा स्यात् । मुग्धः मुद्धो । खङ्गः खग्गो ।
 उत्पीतः उप्पीओ । सद्गमः सग्गमो । आप्तः अत्तो । वसिष्ठः वसिद्धो ।
 स्नेहे वा ॥ ३८ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य अत्वं च । स्नेहः सणेहो
 णेहो ।

आदेर्यो जः ॥ ३९ ॥

शब्दस्य आदिभूतयकारस्य ज-आदेशः स्यात् ।

अधो म-न-याम् ॥ ४० ॥

युक्तस्य अधःस्थितानामेषां लोपः स्यात् । योग्यः जोग्गो ।

ए शय्यादिषु ॥ ४१ ॥

एषु आदेः अकारस्य एत्वं स्यात् । उत्करः उक्केरो । शय्या
 सौन्दर्य उत्कर त्रयोदश आश्चर्य पर्यन्त बल्ली शय्यादिः ।

अनयोः यूशब्देन सह आदेः अत आत्व वा स्यात् मयूरः मारो ।
मयूखः मोहो । पक्षे 'क-ग०' (१०) इति यलोपः, मज्जरो मज्जहो ।

आ समृद्ध्यादिषु वा ॥ ४३ ॥

अविभक्तिको निर्देशः । 'सविसर्गः पाठः' इति केचित् । एषु
आदेः अकारस्य आकारो वा स्यात् । समृद्धि प्रकट अभिजाति
मनस्विनी प्रतिपत् सदृक्ष प्रतिस्पर्द्धि प्रसुप्त प्रसिद्धि अश्व । आकृति-
गणोऽयम् ।

शषोः सः ॥ ४४ ॥

सर्वत्र शस्य षस्य च सः स्यात् । अश्वः आसो अस्सो ।

अदातो यथादिषु वा ॥ ४५ ॥

एषु आतः स्थाने वा अत् स्यात् । प्रहारः पहरो पहारो 'सर्वत्र०'
(३४) इति रलोपः । हालिकः हलिओ हालिओ । यथा तथा प्राकृत
तालवृन्त उत्खात चामर प्रहार चाटु दावाग्नि खादित संस्थापित
मृगाङ्क हालिक यथादिः ।

उद् इक्षु-वृश्चिकयोः ॥ ४६ ॥

अनयोः इत उत् स्यात् ।

वृश्चिके ङ्छः ॥ ४७ ॥

युक्तस्य स्यात् । वक्ष्यमाण'श्च-त्स-प्सां ङ्छः' (१२४) इति
छत्वापवादः ।

इद् ऋष्यादिषु ॥ ४८ ॥

एषु ऋकारस्य इत् स्यात् । वृश्चिकः विञ्छुओ । ऋषि वृषी गृष्टि
सृष्टि हृष्टि शृङ्गार मृगाङ्क भृङ्ग भृङ्गार हृदय वितृष्ण वृंहित कृशार
कृत्या वृश्चिक कृपा शृगाल कृति कृत्ति कृषि ऋष्यादिः । शृङ्गार
सिंगारो । मृगाङ्कः मिअंको, यथादित्वाद् आत अः । भृङ्गः भिंगो
भृङ्गारः भिंगारो ।

ह-स्त्र-ण-क्ष-श्चां ण्हः ॥ ४९ ॥

एषां ण्हादेशः स्यात् । वितृष्णः वितिण्हो । शृगालः सिआलो

ईत् सिंह-जिह्वयोश्च ॥ ५० ॥

अनयोः इत् ईत् स्यात् । सिंहः सीहो ।

इद् ईत्ः पानीयादिषु ॥ ५१ ॥

एषु ईत् इत् स्यात् । करीषः करिसो । पानीय अलीक व्रीडित
व्यलीक गृहीत तदानीम् करीष द्वितीय तृतीय गभीर पानीयादिः ।

एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु ॥ ५२ ॥

एषु ईत् एत् स्यात् ।

आपीडे मः ॥ ५३ ॥

पस्य मः स्यात् । लोपं बाधित्वा प्राप्तस्य 'पो वः' (८५) इति
वक्ष्यमाण-व-त्वस्यापवादः । आपीडः आमेलो ।

कचिद् युक्तस्यापि ॥ ५४ ॥

वर्णान्तरेण युक्तस्यापि ऋकारस्य कचिद् रिः स्यात् । 'क-ग'
(१०) इति द-लोपः । कीदृशः केरिसो । ईदृशः एरिसो ।

उत् ओत् तुण्डरूपेषु ॥ ५५ ॥

संयुक्तवर्णपरोकारेषु उत् ओत् स्यात् ।

ष्क-स्क-क्षां कखः ॥ ५६ ॥

एषां कखादेशः स्यात् । पुष्करः पोक्खरो ।

स्तस्य थः ॥ ५७ ॥

स्यात् । 'उपरि लोपः०' (३६) इत्यस्यापवादः । पुस्तकः पोत्थओ
लुब्धकः लोद्धओ । 'उत् ओत्०' (५५) इत्यस्य प्रायिकत्वात् लुद्धओ
अत्र 'सर्वत्र०' (३४) इति व-वयोरैक्याद् लोपे शेषस्य धस्य 'शेषा'
(३५) इति द्वित्वे दपूर्वो धकारः ।

अन्मुकुटादिषु ॥ ५८ ॥

एषु आदेः उत् अत् स्यात् । मुकुट मुकुल गुरु गुर्वी युधिष्ठि
सौकुमार्य मुकुटादिः । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, 'उपरि'
(३६) इति षलोपः, 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् ।

एषामयुक्तस्य रेफस्य लादेशः स्यात् । युधिष्ठिरः जहिष्ठिलो ।
हरिद्रा चरण मुखर युधिष्ठिर करुण अङ्गुरी अङ्गार किरात परिखा
परिघ हरिद्रादिः । चरणः चलणो । मुखर मुहलो । अङ्गारः इंगालो,
'इद् ईषत्' (२८) इति इत्वम् ।

किराते चः ॥ ६१ ॥

अत्र आदेः चः स्यात् ।

ऋत्वादिषु तो दः ॥ ६२ ॥

एषु तस्य दः स्यात् । किरातः चिलादो । ऋतु रजत आगत निर्वृति
आकृति संवृति सुकृति हत संयत विवृत सञ्जात सम्प्रति प्रतिपत्ति
ऋत्वादिः ।

पुरुष-परिघ-परिखासु फः ॥ ६३ ॥

एषु आदेः फः स्यात् । पुरुषः फरुसो । परिघः फलिहो । आगतः
आअदो । हतः हदो । संयतः संजदो, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः ।
सम उपसर्गत्वाद् यत इति यकारस्य आदिस्थत्वम् ।

इत् पुरुषे रोः ॥ ६४ ॥

अत्र रोः उत इत् स्यात् । पुरुषः पुरिसो । रोरिति किम् ? पका-
राद् उकारस्य मा भूत् ।

अयुक्तस्य रिः ॥ ६५ ॥

वर्णान्तरेण अयुक्तस्य ऋकारस्य रिः इत्यादेशः स्यात् । ऋद्ध-
रिद्धो ।

वृक्षे वेन रुर्वा ॥ ६६ ॥

वृक्षशब्दे वशब्देन सह ऋकारस्य रुः वा स्यात् । व्यवस्थित
विभाषेयम्, तेन च्छत्वपक्षे न भवति, खत्वपक्षे तु स्यादेव ।

क्षमा-वृक्ष-क्षणेषु वा ॥ ६७ ॥

एषु क्षस्य वा च्छः । पक्षे 'ष्क-स्क०' (५६) इति खः
'ऋतोऽत्' (१२०) इति वक्ष्यमाणेन अकारः । वृक्षः वच्छो रुक्खो ।

एत इद् वेदना-देवरयोः ॥ ६८ ॥

अनयोः आदेः एत इर्वा स्यात् । देवरः दिअरो देअरो, 'क-ग' (१०) इति वलोपः ।

ऐत एत् ॥ ६९ ॥

आदेः ऐतः एः स्यात् । शैलः सेलो । कैलासः केलासो ।

दैत्यादिष्वङ् ॥ ७० ॥

दैत्यादिषु ऐकारस्य अङ् इत्यादेशः स्यात् ॥

त्य-थ्य-द्यां च-च्छ-ज्जाः ॥ ७१ ॥

त्रयाणां क्रमेण त्रयः स्युः । दैत्यः दइच्चो । चैत्रः चइत्तो, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः । भैरवः भइरवो । वैदेशः वइदेसो । वैदेहः वइदेहो । कैतवः कइअवो । वैशाखः वइसाहो, 'ख-घ०' (५९) इति हः । वैशिकः वइसिओ । वैशम्पायनः वइसंपाअणो । दैत्य चैत्र भैरव खैर वैर वैदेश वैदेह कैतव वैशाख वैशिक वैशम्पायन दैत्यादिः ।

ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥ ७२ ॥

प्रकोष्ठशब्दे ओतः अद् वा स्यात्, कस्य च वः स्यात् । प्रकोष्ठपचट्टो, 'सर्वत्र०' (३२) इति रलोपः, 'उपरि०' (३६) इति षलोपः 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । पक्षे पओट्टो, 'क-ग०' (१०) इति कलोपः ।

औत ओत् ॥ ७३ ॥

आदेः औकारस्य ओत् स्यात् । पौत्रः पोत्तो ।

पौरादिष्वउः ॥ ७४ ॥

एषु औकारस्य अउः इत्यादेशः स्यात् । ओत्वापवादः । पौरः पउरो कौरवः कउरवो ।

कौशले वा ॥ ७५ ॥

कउसलो कोसलो । आकृतिगणोऽयम् ।

उत् सौन्दर्यादिषु ॥ ७६ ॥

एषु औकारस्य उत् स्यात् । मौञ्जायनः मुंजाअणो । शौण्डः सुंडो कौक्षेयकः कुक्खेअओ, 'वर्गेषु०' (३१) इति कः, 'क-ग०' (१०) इति य-कोर्लोपः । सौन्दर्य मौञ्जायन शौण्ड कौक्षेयक दौवारिकादयः सौन्दर्यादिषु

स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः ॥ ७७ ॥

एषु ककारस्य हादेशः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इति कलोपापवादः ।

स्फटिके लः ॥ ७८ ॥

अत्र टस्य लः स्यात् । 'टो डः' (८८) इति वक्ष्यमाणस्यापवादः ।

'उपरि०' (३६) इति सलोपः, स्फटिकः फलिहो । चिकुरः चिहुरो
निकषः णिहसो, 'नो णः०' (९) इति णत्वम्, 'शषोः०' (४४)
इति सः ।

सीकरे भः ॥ ७९ ॥

अत्र कस्य भः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इत्यस्यापवादः । सीकर
सीभरो ।

गर्भिते णः ॥ ८० ॥

तस्य णः स्यात् । गर्भितः गर्भिणो ।

वसति-भरतयोर्हः ॥ ८१ ॥

अनयोः तस्य हः स्यात् । लोपापवादः । भरतः भरहो ।

ऐरावते च ॥ ८२ ॥

अत्र तस्य णः स्यात् । लोपापवादः । ऐरावतः ऐरावणो, 'ऐत एत्
(६९) इति एत् ।

प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः ॥ ८३ ॥

एषु अनादिभूतस्य दस्य लः स्यात् । कदम्बः कलंबो । दोहदः
णोहलो । अनेति (अनादीति) किम् ? आद्यस्य मा भूत् । 'दोहदे णः
(९७) इति वक्ष्यमाणेन णः ।

गङ्गदे रः ॥ ८४ ॥

अत्र अयुक्तस्य दस्य रः स्यात् । 'उपरि०' (३६) इति दलोपः ।
गङ्गदः गङ्गरो ।

पो वः ॥ ८५ ॥

पस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य वः स्यात् । शपथः सवहो, 'ख-घ०'
(५९) इति हः । ननु पस्य लोपोक्तेः कथं पस्य वविधिः ? इति चेत्
उच्यते, लोपविधौ 'प्रायः' (सू० १०) इत्युक्तेः यत्र लोपाभावस्तत्रैव
अस्य पविधिः ।

उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा ॥ ८६ ॥

उत्तरीयशब्दस्य अनीयप्रत्ययस्य च यो यकारः तस्य जो वा रमणीयः रमणिज्जो ।

कबन्धे बौ मः ॥ ८७ ॥

अत्र बस्य मः स्यात् । लोपापवादः । कबन्धः कमंधो ।

टो ङः ॥ ८८ ॥

टस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य ङः स्यात् । विटपः विडवो ।

सटा-शकट-कैटभेषु ढः ॥ ८९ ॥

एषु टस्य ढः स्यात् । डापवादः । शकटं सअढो ।

कैटमे वः ॥ ९० ॥

भस्य वः स्यात् । कैटभः केढवो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

फो भः ॥ ९१ ॥

स्यात् । सफलः सभलो ।

प्रथम-शिथिल-निषधेषु ढः ॥ ९२ ॥

एषु थ-धयोः ढादेशः स्यात् । हापवादः । प्रथमः पढमो । शिथिलो । निषधः णिसढो ।

कुब्जेः खः ॥ ९३ ॥

अत्र आदेः वर्णस्य खादेशः स्यात् । कुब्जः खुज्जो ।

दोला-दण्ड-दशनेषु ङः ॥ ९४ ॥

एषां आदेः ङः स्यात् । दण्डः डंडो । दशनः डसणो ।

मन्मथे वः ॥ ९५ ॥

अत्र आदेः वः स्यात् ।

न्मो म्मः ॥ ९६ ॥

स्यात् । मन्मथः वम्महो, 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

दोहदे णः ॥ ९७ ॥

अत्र आदेः णः स्यात् । दोहदः णोहलो ।

लाहल-लाङ्गल-लाङ्गुलेषु वा णः ॥ ९८ ॥

एषु आदिः छः स्यात् । षण्मुखः छम्मुहो । शिवकः छविओ । सप्त-
पर्णः छत्तवण्णो, 'पो वः' (८५) इति वत्वम्, 'सर्वत्र०' (३४) इति
रलोपः ।

दशादिषु हः ॥ १०० ॥

एषु शस्य हः स्यात् ।

सङ्ख्यायां च ॥ १०१ ॥

सङ्ख्यावाचिशब्दसम्बन्धिदकारस्य रः स्यात् । एकादशः एआरहो
द्वादशः बारहो । त्रयोदशः तेरहो, शय्यादित्वाद् एत् ।

संज्ञायां वा ॥ १०२ ॥

संज्ञायां दशादेः शस्य हो वा स्यात् । दशमुखः दहमुहो दसमुहो ।
दशरथः दहरहो दसरहो ।

दिवसे सस्य ॥ १०३ ॥

हः स्याद् वा । दिवसः दिअहो दिअसो ।

द्रे रो वा ॥ १०४ ॥

द्रशब्दे रेफस्य लोपो वा स्यात् । इंद्रः इंदो इंद्रो । द्रुतः दुओ द्रुओ ।

सर्वज्ञतुल्येषु अस्य ॥ १०५ ॥

सर्वज्ञ इत्येवमाकृतिषु अस्य लोपः स्यात् । सर्वज्ञः सबज्जो । अत्र ज्ञे-
जकारजकारयोर्मध्ये जकारलोपे 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । जानाते-
र्यानि सोपपदानि रूपाणि तत्रायं लोपः ।

मध्याह्ने हस्य ॥ १०६ ॥

लोपः स्यात् । वक्ष्यमाणोर्द्ध्वस्थितेः (१०८) अपवादः ॥

ध्य-ह्योर्ज्ञः ॥ १०७ ॥

स्यात् । मध्याह्नः मज्झण्णो ।

ह-ह-क्षेषु न-ल-मां स्थितिरूध्दूर्वम् ॥ १०८ ॥

एषु त्रिषु अधःस्थितानां नकार-लकार-मकाराणां त्रिभ्य उपरि-
स्थितिः स्यात् । प्रह्लादः पल्हादो । अत्र हग्रहणं चिन्त्यम्, 'ह-ल-ष्ण०'
(४९) इति ण्हादेशो नस्य खयमेव उपरिष्ठाद् (१०६) भूतत्वात् कौस्तुभः
कोत्थुहो, 'औत ओत्' (७३) 'स्तस्य थः' (५७) 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

स्तस्य थो न स्यात् । 'उपरि०' (३६) इति सलोपः । तं इति पाठो
न्तरम् । स्तम्भः तंभो ।

स्तम्भे खः ॥ ११० ॥

स्तस्य खः स्यात् । थापवादः । स्तम्भः खंभो ।

स्फोटके ॥ १११ ॥

अत्र युक्तस्य खः स्यात् । स्फोटकः खोडओ, 'टो डः' (८८)
इति डः ।

र्य-शय्या-ऽभिमन्युषु जः ॥ ११२ ॥

र्य इत्येतस्य शय्या-ऽभिमन्युशब्दयोश्च युक्तस्य जः स्यात् । कार्य-
कज्जो ।

सूर्ये वा ॥ ११३ ॥

सूर्यशब्दे युक्तस्य र-ज्जौ वा स्याताम् ।

न र-होः ॥ ११४ ॥

रेफ-हकारयोर्द्वित्वं न स्यात् । सूर्यः सूरौ सुज्जो ।

र्त्तस्य टः ॥ ११५ ॥

स्पष्टम् । कैवर्त्तः केवटो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

न धूर्त्तादिषु ॥ ११६ ॥

एषु र्त्तस्य टो न स्यात् । धूर्त्तः धुत्तो, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः
आवर्त्तः आवत्तो । संवर्त्तः संवत्तो । निवर्त्तः णिवत्तो । आर्त्तः अत्तो
धूर्त्त कीर्त्ति वर्त्तमान वर्त्त आवर्त्त संवर्त्त निवर्त्त वर्त्तिका आर्त्त कर्त्तर
मूर्त्ति धूर्त्तादिः ।

गर्त्ते डः ॥ ११७ ॥

र्त्तस्य डः स्यात् । गर्त्तः गड्डो ।

१ अत्रायमाशयः — यथा "न स्तम्भे" इति सूत्रपाठो दृश्यते तथा प्रत्यन्तरेषु "तः स्तम्भे" इत्यस्य
सूत्रपाठो दृश्यते इति ।

एषु क्षस्य छः स्यात् । क्षुब्धः छुद्धो । उत्क्षिप्तः उच्छित्तो । 'उपरि०'
(३६) इति पलोपः । सहक्षः सरिच्छो, 'क-ग०' (१०) इति दलोपः, ऋ
रिः । ऋक्षः रिच्छो । अक्षि लक्ष्मी क्षुण्ण क्षीर क्षुब्ध उत्क्षिप्त सहक्ष इक्षु
उक्षा क्षार ऋक्ष मक्षिका क्षुर क्षुत क्षेत्र वक्ष उदक्ष कुक्षि कक्षा रक्षा
अक्ष्यादिः । क्षणः छणो खणो ।

ष्म-यक्ष्म-विस्मयेषु म्हः ॥ ११९ ॥

ष्म इत्यस्य यक्ष्म-विस्मययोश्च युक्तस्य म्हादेशः स्यात् । विस्मय
विम्हओ । स्नातः ण्हाओ, 'ह-स्न०' (४९) इति ण्हादेशः ।

ऋतोऽत् ॥ १२० ॥

ऋत आदेः अत् स्यात् । कृष्णः कण्हो । प्रश्नः पण्हो ।

इत एत् पिण्डसमेषु ॥ १२१ ॥

एषु इकारस्य एत्वं स्यात् । समग्रहणं संयोगपरमुपलक्षयति । विश्वः
वेण्हो ।

स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य ॥ १२२ ॥

फः स्यात् । स्पन्दः फंदो । निस्पन्दः निष्फंदो ।

बाष्पेऽश्रुणि हः ॥ १२३ ॥

बाष्पशब्दे षपस्य हः स्यात्, अश्रुणि वाच्ये । बाष्पः बाहो, 'न
र-होः' (११४) इति द्वित्वनिषेधः । अश्रुणि किम् ? बाष्पः बाफो ऊष्मा,
वक्ष्यमाणः 'षपस्य फः' (२०६) ।

कार्षापणे ॥ १२४ ॥

युक्तस्य हादेशः स्यात् । कार्षापणः कहावणो, 'पो वः' (८५)
इति वः ।

श्चत्स-प्सां छः ॥ १२५ ॥

त्रयाणां छः स्यात् । पाश्चात्यः पच्छत्तो । वत्सः वच्छो । ईप्सितः
इच्छिओ ।

नोत्सुकोत्सवयोः ॥ १२६ ॥

अनयोः त्सस्य छादेशो न स्यात् । उत्सुकः ऊसुओ । उत्सवः
ऊसवो ।

अज्ञ इत्येतयोः पञ्चाशत्-पञ्चदशशब्दयोश्च युक्तस्य णः स्यात्
प्रद्युम्नः पञ्जुणो, 'त्य-थ्य०' (७१) इति ज्ञः । यज्ञः जणो ।

भिन्दिपाले ण्डः ॥ १२८ ॥

युक्तस्य ण्डः स्यात् । भिन्दिपालः भिन्दिवालो, 'पो वः' (८५)
इति वः ।

विह्वले म्म-हौ वा ॥ १२९ ॥

युक्तस्य एतौ वा स्याताम् । विह्वलः विंभलो विह्वलो ।

न बिन्दुपरे ॥ १३० ॥

अनुस्वारात् परस्य द्वित्वं न स्यात् । सङ्क्रान्तः संकतो ।

समासे वा ॥ १३१ ॥

समासे शेषा-SSदेशयोर्वा द्वित्वं स्यात् । 'शेषा०' (३५) इत्यत्र
'अनादौ' इत्युक्तेः अप्राप्तविभाषेयम्, अन्तर्वर्त्तिनीं विभक्तिमाश्रित्य
पदादित्वात् । छायाग्रामः छायागामो छाहागामो, 'छायायां हः'
(१६८) इति वक्ष्यमाणेन हः ।

सेवादिषु ॥ १३२ ॥

एषु अनादौ स्थितस्य हलो द्वित्वं वा स्यात् । निहितः निहितो निहिओ
'न र-होः' (११४) इति निषेधाद् न हस्य द्वित्वम् । तूष्णीकः तुण्हको
तुण्हओ, 'ह-स्त्र०' (४९) इति ण्हः । दुःखितः दुक्खिओ, पक्षे 'ख-घ०'
(५९) इति हः, दुहिओ । द्वित्वपक्षे 'वर्गेषु' (३९) इति कः । विश्रामः
वीसामो विस्सामो । निःश्वासः निस्सासो णीसासो । पुष्यः पुस्सो पूसो ।
सेवा एक नख दैव अशिव त्रैलोक्य निहित तूष्णीक कर्णिकार दीर्घरात्रि
दुःखित अश्व ईश्वर विश्राम निःश्वास रश्मि मित्र पुष्य सेवादिः । उभ-
यत्र विभाषेयम्, सेवादीनामप्राप्ते दीर्घादीनां 'शेषा०' (३५) इति प्राप्ते ।

कृष्णे वा ॥ १३३ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य तदचकता च । कृष्णः
किसणो कण्हो । व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन वर्णवाचके विप्रकर्षः, भग-
वति न इति ।

लोपः । अनुवर्त्तमानः अणुअत्तमाणो । यावत् तावत् पारावत् अनु-
वर्त्तमान जीवित एवं एव अवट देवकुल यावदादिः । आकृतिगणोऽयम् ।
सर्वः सवो ।

सर्वादेर्जस एत्वम् ॥ १३५ ॥

स्पष्टम् । सर्वे सवे । सर्वं सवं । सर्वान् सवा । सर्वेण सवेण । सर्वैः
सवेहिं । सर्वस्मै सवस्स । सर्वेभ्यः सवाणं । सर्वस्मात् सवा सवादो सवादु
सवाहि, 'ङसेः०' (२०) इत्यादेशाः । सर्वेभ्यः सवाहिंतो सवासुत्तो ।
सर्वस्य सवस्स । सर्वेषाम् सवाणं ।

डेः सिंसि-म्मि-त्थाः ॥ १३६ ॥

सर्वादेः परस्य डेः इति सप्तम्येकवचनस्य सिंसि म्मि तथ इति त्रय
आदेशाः स्युः । सर्वस्मिन् सवसिंसि सवम्मि सवत्थ । सर्वेषु सवेसु । विश्वः
विस्सो । उभौ उहे । उभशब्दस्य द्विवचनान्तत्वाद् द्विवचनस्य बहुवच-
नादेशः । संस्कृते प्रसिद्धः सर्वादिः ॥

शेषोऽदन्तवत् ॥ १३७ ॥

शेषस्तु विधिः अदन्तवत् स्यात् । तेन आकारान्तादपि 'अत ओत
सोः' (८) इत्यादि विधिः प्रवर्त्तते । विश्वपाः विस्सवो इत्यादि ।

सु-भिस्र-सुप्सु दीर्घः ॥ १३८ ॥

इदुदन्तयोः दीर्घः स्याद् एषु परेषु । 'अन्त्यस्य हलः' (२६) इति
सोर्लोपः, अग्निः अग्गी । 'अघो०' (४०) इति न लोपः ।

जस ओश्च यूत्वम् ॥ १३९ ॥

इदुदन्तयोः परस्य जस ओ इत्यादेशः स्याद् णो च, पूर्वस्य ईकारो-
कारौ च स्याताम् । अग्नयः अग्गीओ अग्गीणो । पाठान्तरे तु-

जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च ॥ १४० ॥

इदुदन्तयोः शब्दयोर्जसः ओ वो इत्येतावादेशौ स्याताम्, अत्वम्
ईत्वम् ऊत्वं च विकल्पेन स्यात् णो च । पक्षे अदन्तवत् । अग्नयः
अग्गीओ अग्गीवो अग्गीणो अग्गओ अग्गवो अग्गी । हे अग्ने हे अग्नि ।
अग्निं अग्निं ।

टा णा ॥ १४१ ॥

इदुदन्तयोः टाया णा इत्यादेशः स्यात् । अग्निना अग्निणा ।

न डि-ङस्योरेदातौ ॥ १४२ ॥

इदुदन्तयोः परयोः डि-ङस्योः एत् आत् इत्येतौ न स्याताम् । अग्नेः
अग्गीदो अग्गीदु अग्गीहि । डि-ङस्योरिति किम् ? समृद्ध्या समिद्धीए
समिद्धीआ । 'टा-ङस्-ङीनाम्' (१६०) इति एत्-आतौ ।

ए भ्यसि ॥ १४३ ॥

इदुदन्तयोः भ्यसि एत्वं न स्यात् । अग्निभ्यः अग्गीहितौ
अग्गीसुत्तो ।

ङसो वा ॥ १४४ ॥

इदुदन्तयोः ङसो णो वा स्यात् । पक्षे 'शेषो०' (१३७) इत्य-
तिदेशात् 'ङसः स्सः' (१९) इति स्सः । अग्नेः अग्गीणो [अग्गिस्स] ।
अग्नीनाम् अग्गीणं । अग्नौ अग्गिम्मि । अग्निषु अग्गीसु । ऋषिः इसी,
'इद् ऋष्यादिषु' (४८) इति इत्वम् ।

बृहस्पतौ ब-होर्भ-औ ॥ १४५ ॥

अत्र वकार-हकारयोः क्रमेण भकाराकारौ स्याताम् । बृहस्पतिः
भअप्पई, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, 'शेषा०' (३५) इति
द्वित्वम्, 'क-ग०' (१०) इति तलोपः, 'सु-भिस्र०' (१३८) इति
दीर्घः । गृहपतिः, गृहवई, 'पो वः' (८५) इति वः ॥ द्विशब्दो नित्यं
द्विवचनान्तः ।

द्वेर्दुवे दोणि वा ॥ १४६ ॥

द्विशब्दस्य जसा शसा च सह दुवे दोणि इत्येतावादेशौ स्याताम्
द्वौ दुवे दोणि ।

द्वेर्दो ॥ १४७ ॥

द्विशब्दस्य दो अयमादेशः स्यात् सुपि । द्वाभ्याम् दोहिं । द्वाभ्याम्
दोहितो दोसुत्तो ।

एषामामो ण्हं ॥ १४८ ॥

द्वि-त्रि-चतुरामामो ण्हं इत्यादेशः स्यात् । णापवादः । द्वयोः दोण्हं
द्वयोः दोसु । त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः ।

तिणि जस्-शस्भ्याम् ॥ १४९ ॥

जसा शसा च सह त्रिशब्दस्य तिणि इत्यादेशः स्यात् । त्रयः तिणि ।

त्रेस्ती ॥ १५० ॥

त्रिशब्दस्य ती इत्यादेशः स्यात् सुपि । त्रिभिः तीहिं । त्रिभ्यः तीहिंतो तीसुत्तो । त्रयाणाम् तीण्हं त्रिषु तीसु । सखा सही । सखायः सहीओ सहीणो । हे सहि । सखायम् सहिं । सखीन् सहिणो इत्यादि । पतिः पई । 'इत् एत्' (१२१) इति एत्, विष्णुः वेणू । जहुः जणू । इक्षुः उच्छू, 'उद् इक्षु' (४६) इति उत्त्वम्, अक्ष्यादित्वात् छः । ऋतुः उद्, 'उद् ऋत्वादिषु' (२९) इति उत्त्वम्, 'ऋत्वादिषु' (६२) इति दः ।

स्थाणावहरे ॥ १५१ ॥

युक्तस्य खादेशः स्यात्, न तु हरे अभिधेये । स्थाणुः खाणू । हर-वाचके तु थाणू, 'उपरि' (३६) इति सलोपः, विष्णुवत् । 'र्य-शय्या' (११२) इति जः, अभिमन्युः अहिमज्जु । करेणुः सूर्यः करेणू सुज्जो ।

ऋत आरः सुपि ॥ १५२ ॥

ऋकारस्य आरः स्यात् सुपि । भर्ता भत्तारो ॥

उर्जस्-शस्-टा-डस्-सुप्सु वा ॥ १५३ ॥

जसि शसि टायां डसि सुपि च ऋकारस्य स्थाने उर्वा स्यात् । आरापवादः । भर्तारः भत्तारा भत्तूओ भत्तुणो, 'जस ओः' (१३९) इति ओत्वं णो च । हे भर्तः हे भत्तारा । भर्तृन् भत्तुणो, 'इदुतोः' (१४०) इति णो । भर्त्रा भत्तुणा भत्तारेण । भर्तृभिः भत्तारेहिं । भर्तुः भत्तुस्स भत्तारस्स । भर्तृणां भत्ताराणं । भर्तृरि भत्तारम्मि । भर्तृषु भत्तारेसु ।

पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः ॥ १५४ ॥

एषाम् ऋत अरः स्यात् सुपि । आरापवादः ।

आच्च सौ ॥ १५५ ॥

पित्रादीनाम् आत् स्यात् सौ परे । पिता पिआ पिअरो इत्यादि । भ्राता भाआ भाअरो । जामाता जामाआ जामाअरो इत्यादि ।

इत्यजन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

पक्षे यथालिङ्गम् । प्रश्नः पण्हा । शय्या सेजा, 'ए शय्यादिषु' (४१)
इति एत्वम्, 'यं शय्या०' (११२) इति जः ।

जसो वा ॥ १५७ ॥

स्त्रियां तिष्ठतो जस उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्या
सेजाउ सेजाओ सेजा ।

अमि ह्रस्वः ॥ १५८ ॥

स्त्रीवाचकस्य ह्रस्वः स्याद् अमि परे । शय्याम् सेजं ।

स्त्रियां शस उदोतौ ॥ १५९ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्त्तमानस्य शस उत् ओत् इत्येतावादेशौ स्याताम् । शय्या
सेजाउ सेजाओ ।

टा-ङस्-ङीनामिदेददातः ॥ १६० ॥

स्त्रीवाचकात् परेषां टा ङस् ङि इत्येतेषां इत् एत् अत् आत् एत्
आदेशाः स्युः । इति चतुर्ष्वपि प्राप्तेषु -

नाऽऽतोऽदातौ ॥ १६१ ॥

स्त्रीवाचकादाकारान्तात् शब्दात् परेषां टा-ङस्-ङीनाम् अत्-आतौ न
स्याताम् । शय्याया सेजाइ सेजाए । शय्याभिः सेजाहिं । शय्यायाः सेज
सेजादो सेजादु सेजाहि । शय्याभ्यः सेजाहितो सेजासुत्तो ।

ङसो वा ॥ १६२ ॥

ङसः स्त्रियाम् उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्यायाः सेजाउ
सेजाओ सेजस्स (?) सेजाइ सेजाए । शय्यानाम् सेजाणं । शय्यायाम्
सेजाइ सेजाए । शय्यासु सेजासु ।

स्त्रियामात् एत् ॥ १६३ ॥

सम्बुद्धौ स्त्रियाम् आत् एत्वं स्यात् सौ । हे शय्ये हे सेजे, 'अन्त्यस्य०'
(२६) इति सोर्लोपः ।

लवण-नवमल्लिकयोर्वेन ॥ १६४ ॥

लवण-नवमल्लिकयोः आदेः अतो वकारेण सह ओकारः स्यात् ।
नवमल्लिका णोमल्लिआ । मल्लिका इत्येतदुपलक्षणम्, तेन नवमल्लिका

णोभलिआ इति सिद्धम् । निद्रा णेद्वा णेद्रा, 'द्वे रो वा' (१०४) इति व
रलोपः, 'इत् एत्' (१२१) इति एत्वम् । हे णेद्दे इत्यादि ।

अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीषु ॥ १६५ ॥

एषु इतो अत् स्यात् । हरिद्रा हलद्वा हलद्रा, 'हरिद्रादीनां' (६०)
इति रेफस्य लः । जिह्वा जीहा, 'ईत् सिंह' (५०) इति ईत्वम्
"सर्वत्र" (३४) इति वलोपः । मुक्ता मोक्ता, 'उत् ओत्' (५५) इति
ओत्वम् । घृणा घणा, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत् । कृशरा किसरा
कृत्या किच्चा, 'त्य-थ्य' (७१) इति चः । कृपा किवा, 'पो वः' (८५)
इति वः । त्रिष्वपि 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत्वे प्राप्ते ऋष्यादित्वाद्
इत्वम् । वेदना विअणा वेअणा, 'क-ग' (१०) इति दलोपः, 'नो णः
(९) इति णः ।

यमुनाया मस्य ॥ १६६ ॥

लोपः स्यात् । यमुना जउणा, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः ।

चन्द्रिकायां मः ॥ १६७ ॥

कस्य मः स्यात् । चन्द्रिका चन्दिमा, 'सर्वत्र' (३४) इति
रलोपः । पताका पडाआ, 'प्रतिसर' (३३) इति तस्य डः, 'क-ग'
(१०) इति कलोपः ।

छायायां हः ॥ १६८ ॥

यस्य हः स्यात् छाया छाहा । रमणीया रमणिज्जा, 'उत्तरीया'
(८६) इति जः, 'शेषादेशः' (३५) इति द्वित्वम् । सदा सढा । राधा
राहा । सभा सहा । शोभा सोहा । परिखा फलिहा, हरिद्रादित्वाद् लः,
'परुष' (६३) इति फः, 'ख-घ' (५९) इति हः । दोला डोला,
'दोला-दण्ड' (९४) इति डः । निशा णिसा ।

सुषायां ण्हः ॥ १६९ ॥

षस्य ण्हः स्यात् । सुषा सोण्हा, तुण्डरूपत्वाद् उत्त ओत्वम् ।
उल्का उक्का, 'सर्वत्र' (३४) इति ललोपः । वार्त्ता वत्ता, 'र्त्तस्य टः'
(११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वान्न । वर्त्तिका वत्तिआ, पूर्ववत् । सन्ध्या
सन्ध्या, 'ध्या-योर्ध्या' (१०९) इति धः । सन्ध्या सन्ध्या, 'सन्ध्या-योर्ध्या'
(१०९) इति धः ।

इति चः । मिथ्या मिच्छा । विद्या विज्ञा । क्षुणा छुणा । उक्षा उच्छा ।
मक्षिका मच्छिआ । कक्षा कच्छा । रक्षा रच्छा । पञ्चस्वपि अक्ष्यादित्वात्
छः 'वर्गेषु०' (३७) इति चः । क्षमा छमा खमा, 'क्षमा-वृक्ष०' (६७)
इति छत्ववैकल्यात् पक्षे 'ष्क-स्क०' (५६) इति खः । 'अ-त्स-प्सा'
च्छः' (१२३) पश्चिमा पच्छिमा । विवत्सा विइच्छा (?) । लिप्सा लिच्छा ।
जुगुप्सा जुउच्छा, 'प्रायः' (१०) इत्युक्तेर्लोपाभावपक्षे जुगुच्छा ।
मूर्च्छा मुच्छा, "वर्गेषु०" (३७) इति चः ।

आङो ज्ञादेशस्य ॥ १७० ॥

'म-ज्ञ०' (१२७) इति जातो यो णादेशः तस्य आङः परस्य द्वित्वं
न स्यात् । आज्ञा आणा । सेवा सेव्वा सेवा, 'सेवादिषु' (१३२) इति
द्वित्वम् ।

क्लिष्ट-श्लिष्ट-रत्न-क्रिया-शार्ङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य ॥ १७१ ॥

एषु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात् । विप्रकर्षितव्यस्य विप्रकर्षे जाते य
पूर्वो वर्णो निरर्थकस्तस्य विप्रकर्षितव्यस्वरता स्यात् । क्रिया किरिआ ।

अः क्षमा-श्लाघयोः ॥ १७२ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्याकारः तत्स्वरता च । क्षमा खमा ।
विप्रकर्षितव्यस्य दीर्घत्वादीर्घत्वे प्राप्ते ह्रस्वो अकारो विधीयते । 'ष्क-स्क०'
(५६) इति खः । श्लाघा सलाहा, 'श-घोः०' (४४) इति सः, 'ख-घ०'
(५९) इति हः ।

ज्यायामीत् ॥ १७३ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य ईकारः । ज्या जीआ अत्राप्याकारे प्राप्ते
ईकारो विधीयते । ज्येत्यत्र विप्रकर्षकरणात् पूर्वम् 'अधो म-न-याम्' (४०)
इति यलोपः, ततो घचेत् 'कग०' (१०) इति । माला माला । शाला साला ।

आदीतौ बहुलम् ॥ १७४ ॥

स्त्रियामकारान्तादातः स्थाने आत् ईत् इत्येतौ बहुलं स्तः । सहमान
सहमाणा सहमाणी । वेपमाना वेवमाणा वेवमाणी । हरिद्रा हलद्रा (ह्रा)
हलद्दी । सूर्पनखा सुप्पणहा सुप्पणही । छाया छाहा छाही । का की
जा जी । ता ती । प्रश्नः पण्ही । समृद्धिः समिद्धी सामिद्धी, 'आ समृद्ध्या०'
(४३) इति वा आकारः, ऋष्यादित्वाद् इः, 'सु-भिस्र०' (१३८) इति
नीर्षः । अभिज्ञानिः अभिज्ञाई अभिज्ञाई 'ख-ग०' (५०) इति हः ।

ष्टस्य ठः ॥ १७५ ॥

ष्ट इत्यस्य ठकारः स्यात् । गृष्टिः गिष्टी । वृष्टिः दिष्टी । सृष्टिः सिष्टी । चतुर्ष्वपि ऋष्यादित्वाद् इत्वम् । आकृतिः आइदी, ऋष्यादित्वाद् इः, आउदी, ऋत्वादित्वाद् उः । सुकृतिः सुइदी, ऋष्यादौ कृतिशब्दपाठात् । संवृतिः संवुदी । प्रतिपत्तिः पदिवत्ती, 'प्रतिसर०' (३३) इति तु न, ऋत्वादिपाठेन बाधात् । वसतिः वसही, 'वसति-भरत०' (८१) इति हः ।

यष्ट्यां लः ॥ १७६ ॥

आदेर्लः स्यात् । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जापवादः । यष्टिः लट्टी । कीर्त्तिः कित्ती, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति टे प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । मूर्त्तिः मुत्ती । वितर्दिः विअड्डी । विच्छर्दिः विच्छड्डी । उभयत्रापि 'गर्दभ०' (?) इति डः, 'शेषा-ऽऽदेश०' (३५) इति द्वित्वम् । कुक्षिः कुच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः । स्थितिः थिई । मनस्विनी मणंसिणी, समृद्ध्यादित्वाद् वा आकारः, वक्रादित्वादनुस्वारः ।

ईदूतोर्ह्रस्वः ॥ १७७ ॥

सम्बुद्धौ । [हे मनस्विनि] हे माणंसिणि । मनस्विनीम् माणंसिणि, 'अमि ह्रस्वः' (१५८) इति ह्रस्वः । वल्ली वेल्ली, शय्यादित्वाद् एकारः ।

चतुर्थी-चतुर्दशोस्तुना ॥ १७८ ॥

अनयोस्तुशब्देन सह आदेः अतः ओत्वं वा स्यात् । चतुर्थी चोत्थी चउत्थी । चतुर्दशी चोदही चउदही । 'दशादिषु०' (१००) इति हः । पृथिवी पुहवी, ऋत्वादित्वाद् उः, 'अत् पथि०' (१६५) इति अः ।

उः पद्म-तन्वीसमेषु ॥ १७९ ॥

पद्मशब्दे तन्वी इत्येवंरूपेषु च युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य उकारः । गुर्वी गरुई, मुकुटादित्वाद् अः । शफरी सभरी, 'श-षोः सः' (४४) 'फो भः' (९१) । अङ्गुरी अङ्गुली, 'हरिद्रादीनां०' (६०) इति रेफस्य लः ।

विसिन्यां भः ॥ १८० ॥

आदेः । विसिनी भिसिणी । स्त्रीलिङ्गनिर्देशः किम् ? विसं । षष्ठी छट्टी, 'षट्-शावक०' (९९) इति छः । सप्तमी सत्तमी । कर्त्तरी कत्तरी, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । लक्ष्मी लच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः ।

पः स्यात् । रुक्मिणी रुक्मिणी । श्रीः सिरी । ह्रीः हिरी, 'इः श्री-ह्री' (३२) इति विप्रकर्ष-यौ । लघ्वी लहुई, 'ख-घ०' (५९) इति हः, 'उ-पद्म०' (१७९) इति विप्रकर्षः । तन्वी तणुई । नदी नई । हे नह । पृष्ठं पुट्टी । अक्षि अच्छी । वधूः वहु । हे बहु इत्यादि ।

मातुरात् ॥ १८२ ॥

मातृशब्दसम्बन्धिन ऋकारस्य आत् स्यात् । माता माआ । हे मा इत्यादि ।

॥ इति अजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

लोपोऽरण्ये ॥ १८३ ॥

आदेरतः ।

सोर्विन्दुर्नपुंसके ॥ १८४ ॥

नपुंसके तिष्ठतः सोः अनुस्वारः स्यात् । अरण्यं रण्णं ।

इज्जस्-शसोर्दीर्घश्च ॥ १८५ ॥

नपुंसके वर्त्तमानयोः जस्-शसोः इदादेशः स्यात्, पूर्वस्य दीर्घश्च अरण्यानि रण्णाइं । अरण्यं रण्णं । अरण्यानि रण्णाइं । अरण्येन रण्णेण पुंवत् । हे अरण्य हे रण्ण, 'नाऽऽमन्त्रणे०' (२५) इति निषेधाद् विन्दुर्न किन्तु 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः ।

ओ बदरे देन ॥ १८६ ॥

अत्र दकारेण सह आदेरत ओत्वं स्यात् । बदरं बोरं इत्यादि ।

उदूखले द्वा वा ॥ १८७ ॥

अत्र दूशब्देन सह आदेः ओद् वा स्यात् । उदूखलं ओखलं उदूहलं ।

उलूहले ल्वा वा ॥ १८७A ॥

उलूहलशब्दे लू शब्देन सह आदेः उकारस्य ओकारो वा स्यात् ।

उलूहलंओहलं । इति पाठान्तरम् ।

उदूतो मधूके ॥ १८८ ॥

अत्र मधूकशब्दे उकारस्य उत् स्यात् । मधूकं महुअं ।

दुकूलशब्दे ऊकारस्य अकारो वा स्यात्, तत्सन्नियोगेन च लस्य द्वित्वम् । दुकूलं दुअल्लं दुऊलं ।

एन्नूपुरे ॥ १९० ॥

नूपुरशब्दे ऊकारस्य एत् स्यात् । अत्र 'आदेः' इति प्रयोजनाभावाद् नानुवर्तते । नूपुरं णेउरं । ऋणं रिणं, 'ऋ रिः' (?) इति रि । हृदयं हिअयं, ऋष्यादित्वाद् इः । वृन्दावनं वुंदावणं, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति प्राप्ते ऋत्वादित्वाद् उः ।

लृत्तः कृत्त इलि ॥ १९१ ॥

कृत्तशब्दे लृकारस्य इलिः स्यात् । कृत्तं किलित्तं । त्रैलोक्यं तेल्लोक्कं, 'ऐत् एत्' (६९) इति एत्, सेवादित्वात् द्वित्वम्, द्वित्ववैकल्प्यात् पक्षे तेलोक्कं । शैत्यं सेत्तं । खैरं सइरं । वैरं वइरं । द्वयोरप्यैकारस्य 'दैत्यादिषु०' (६८) इति अइः ।

दैवे वा ॥ १९२ ॥

दैवशब्दे ऐकारस्य अइरित्यादेशो वा स्यात् ।

नीडादिषु च ॥ १९३ ॥

एषु अनादौ तिष्ठतो हलो वा द्वित्वम् । दैवं देवं देवं दइवं । नीडस्रोत प्रेम व्याहृत जनक यौवन दैव इत्यादयः नीडादिः ।

इत् सैन्धवे ॥ १९४ ॥

अत्र एकारस्य इकारः स्यात् । एत्वापवादः । सैन्धवं सिन्धवं ।

ईद् धैर्ये ॥ १९५ ॥

अत्र एकारस्य ईत् स्यात् । एत्वापवादः ।

तूर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः ॥ १९६ ॥

एषु र्यस्य रः । धैर्यं धीरं । तूर्यं तूरं । सौन्दर्यं सुन्देरं, 'उत् सौन्दर्यादिषु' (७६) इति उः । आश्चर्यं अच्छेरं, 'श्च-त्स०' (१२५) इति छः । पर्यन्तं पेरंतं । त्रिष्वपि शय्यादित्वाद् एत्वम् । यौवनं जोवणं, 'औत् ओत्' (७३) इति ओत्, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, नीडादित्वात् द्वित्वम्, 'नो णः०' (९) इति णः ।

आच्च गौरवे ॥ १९७ ॥

गौरवशब्दे आ अउ ओ इत्येते स्युः । गौरवं गारवं गउरवं गोरवं
इत्यादि । गर्भितं गग्भिणं, 'गर्भिते णः' (८०) इति णः ।

डस्य च ॥ १९८ ॥

डकारस्यायुक्तस्य अनादिभूतस्य लः स्यात् । दाडिमं दालिमं । 'प्रायः
इत्यनुवृत्तेः कचिद् दाडिमं इत्यपि ।

ठो ढः ॥ १९९ ॥

अयुक्तस्य अनादिभूतस्य ठस्य ढः स्यात् । जठरं जढरं । कठोरं कढोरं
अंकोठे छः ॥ २०० ॥

अत्र ठस्य छः स्यात् । अंकोठं अंकोछं । सफलं सभलं, 'फो भः'
(९१) इति भः । सुखं सुहं, 'ख-ग०' (५९) इति हः । करुणं कलुणं
हरिद्रादित्वाद् रेफस्य लः ।

श्मश्रु-श्मशानयोरादेः ॥ २०१ ॥

अनयोरादेर्वर्णस्य लोपः स्यात् । श्मशानं मसाणं ।

चौर्यसमेषु रिअं ॥ २०२ ॥

एषु र्यस्य रिअं इत्यादेशः स्यात् । चौर्यं चोरिअं । शौर्यं सोरिअं
'औत ओत्' (७३) इति ओत् । वीर्यं वीरिअं ।

पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु छः ॥ २०३ ॥

एषु र्यस्य छः स्यात् । पर्यस्तं पल्लत्थं, 'स्तस्य थ' (५७) इति थः
'शेषादेश०' (३५) इति द्वित्वम् । पर्याणं पल्लणं । सौकुमार्यं सोअमल्लं
मुकुटादित्वाद् अः ।

पत्तने ॥ २०४ ॥

युक्तस्य टः । पत्तनं पट्टणं । क्षीरं छीरं, अक्षयादित्वात् छः । श्लक्ष्णं
सण्हं । तीक्ष्णं तिण्हं । 'ह-ख०' (४९) इति णहादेशः ।

चिह्ने धः ॥ २०५ ॥

युक्तस्य धः स्यात् । णहापवादः । चिह्नं चिन्धं, प्रायिकमेतत्, चिण्हं

णस्य फः ॥ २०६ ॥

युक्तस्य णठः स्यात् । तालवृन्तकं तालवेण्ठअं तलवेण्ठअं ।

आम्र-ताम्रयोर्बः ॥ २०८ ॥

अनयोरनादेः वः स्यात् । आम्रं अंबं । ताम्रं तंबं । क्लिष्टं किलिष्टं ।
रत्नं रअणं । 'क्लिष्ट-श्लिष्टं' (१७१) इति विप्रकर्षः तत्स्वरता च ।

उदुम्बरे दोर्लोपः ॥ २०९ ॥

अत्र दु इत्यस्य लोपः स्यात् । उदुम्बरं उंबरं ।

कालायसे यस्य वा ॥ २१० ॥

अत्र यस्य वा लोपः स्यात् । य इति विशिष्टग्रहणम् । कालायसं
कालासं कालाअसं, लोपाभावपक्षे 'क-ग०' (१०) इति यकारमात्रलोपः ।

मलिने लिनोरिलौ वा ॥ २११ ॥

मलिनशब्दे लि इत्यस्य इः स्यात्, न इत्यस्य लः स्याद् वा । मलिनं
महलं मलिणं ।

गृहे घरोऽपतौ ॥ २१२ ॥

गृहशब्दस्य घर इत्ययमादेशः स्यात्, न तु पतौ परे । गृहं घरं ।
अपताविति किम् ? गृहपतिः गृहवर्ह । पीतं पीअं । धनं धणं ।

वृन्दे वो रः ॥ २१३ ॥

वृन्दशब्दे वात् परः स्वार्थे रो वा स्यात् । व्रंदं वंदं ।

आलाने न-लोः ॥ २१४ ॥

अत्र नकार-लकारयोः स्थितिपरिवृत्तिः स्यात् । आलानं आणालं ।

दाढादयो बहुलम् ॥ २१५ ॥

दाढा इत्यादयः शब्दाः बहुलं निपात्यन्ते । चातुर्यं चाउलिअं । पृष्टं
पुष्टं । इदानीं एणिह । दुहिता दिद्धी । मण्डूकः मण्डूरो । कमलं कंदोद्दो ।
गोदावरी गोला । ललाटं लडालं णिडालं । आकृतिगणोऽयम् । 'सु-भिस्र०'
(१३८) इति दीर्घे प्राप्ते -

न नपुंसके ॥ २१६ ॥

क्लीबे प्रथमैकवचने दीर्घो न । वारि वारिं । बारीणि बारीहं । पुनस्त-
द्वत् । शेषं पुंवत् ।

युक्तस्य ठः स्यात् । अस्थि अट्ठि । सक्थि सत्थि । अक्षि अच्छि ।
 गुरु गरुअं, मुकुटादित्वाद् अः । इमश्चुः मंसू, 'इमश्चु-इमशानयोः०'
 (२०१) इति शकारलोपः अश्चु अंसू, वक्रादित्वाद् अनुस्वारः । मधु महं
 ॥ इत्यजन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

*

अनङ्गान् अण्डुओ, विष्णुवत् । चतुरशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः
 चतुरश्चत्तारो चत्तारि ॥ २१८ ॥

चतुःशब्दस्य जसा शसा च सह एतावादेशौ स्याताम् । चत्वार
 चत्तारो चत्तारि । चतुरः चत्तारो चत्तारि । चतुर्भिः चऊर्हि । चतुर्भ्य
 चऊर्हितो चऊसुत्तो । चतुर्णां चउण्हं । चतुर्षु चऊसु ।

किमः कः ॥ २१९ ॥

स्पष्टम् । कः को । के के, 'सर्वादेः०' (१३५) इति एत्वम् ।

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यश्च इणा वा ॥ २२० ॥

एभ्यः परः टा इणा इति वा स्यात् । केन कइणा केण ।

त्तो दो डसेः ॥ २२१ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डसेः त्तो दो इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । कस्मात्
 कत्तो कदो का कादो कादु काहि । केभ्यः कार्हितो कासुत्तो ।

किं-यत्-तद्भ्यो डस आसः ॥ २२२ ॥

एभ्यः परस्य डस आस इत्यादेशो वा स्यात् । कस्य कास कसस ।

आम एसिं ॥ २२३ ॥

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यः परस्य आम एसिं इत्यादेशो वा स्यात् ।
 केषां केसिं काणं ।

डेर्हि ॥ २२४ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डेः सप्तम्येकवचनस्य हिं इत्यादेशो वा स्यात् ।
 कस्मिन् कर्हि कस्मिं कस्मि कत्थ ।

आहे इआ काले ॥ २२५ ॥

किं-यत्-तद्भ्यः परस्य डेः काले वाच्ये आहे इआ इत्येतावादेशौ वा
 स्याताम् । कदा काहे कइआ कर्हि कस्मिं कस्मि कत्थ । केषु केसु ।

इदम इमः ॥ २२६ ॥

इदमृशब्दस्य इम इत्यादेशः स्यात् सुपि । अयं इमो । इमे इमे । इमं इमं । इमान् इमा । अनेन इमेण इमिणा, 'इदमेतत्' (२२०) इति इणादेशः । एभिः इमेहिं । अस्मात् इमादो इमादु इमाहि । एभ्यः इमाहितो इमासुतो ।

स्स-स्सिमोरद् वा ॥ २२७ ॥

इदमृशब्दस्य अ इत्यादेशो वा स्यात् स्से स्सिमि च । अस्य अस्स इमस्स । एषां इमेसिं इमाणं ।

डेदन हः ॥ २२८ ॥

इदमृशब्दस्य दकारेण डेः ह इत्यादेशो वा स्यात् । पक्षे यथाप्राप्तम् न तथः ॥ २२९ ॥

इदमः परस्य डेः तथ इत्यादेशो न स्यात् । अस्मिन् अस्सि इमस्सि इह इमस्मि । एषु इमेसु ।

राज्ञश्च ॥ २३० ॥

राजन्शब्दस्य आ इत्ययमादेशः स्यात् सौ । राजा राआ 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः ।

जस्-शस्-डसो णो ॥ २३१ ॥

राज्ञः परेषामेषां णो इत्यादेशः स्यात् ।

आ णो-णमोरडसि ॥ २३२ ॥

णो-णमोः परयोः राज्ञो जस्य आ स्यात् । राजानः राआणो ।

आमन्त्रणे वा बिन्दुः ॥ २३३ ॥

राजन्शब्दस्यामन्त्रणेऽनुस्वारो वा स्यात् सौ । हे राजन् हे राअ हे राअ । राजानं राअं । 'शेषो०' (१३७) इति अदन्तवद्भावः ।

शस एत् ॥ २३४ ॥

राज्ञः परस्य शस ए इत्यादेशः स्यात् । राज्ञः राए राआणो ।

इसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च ॥ २३६ ॥

राज्ञः परस्य ङसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वं वा स्यात् अन्त्यस्य
च लोपः । राज्ञा रण्णा । पक्षे -

इदद्वित्वे ॥ २३७ ॥

ङसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वाभावपक्षे राज्ञ इत्वं स्यात् । राइणा ।
राजभिः राएहिं 'शेषो०' (१३७) इत्यदन्तवद्भावः । राज्ञः राआ
राआदो राआदु राआहि । राजभ्यः राआर्हितो राआसुत्तो । राज्ञः रण्णो
राइणो ।

आमो णं ॥ २३८ ॥

राज्ञ उत्तरस्य आमः णं इत्यादेशः स्यात् । राज्ञां राआणं । राज्ञि
राअम्मि राए । राजसु राएसु ।

आत्मनो अप्पाणो वा ॥ २३९ ॥

आत्मनः अप्पाण इत्ययमादेशो वा स्यात् ।

इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे ॥ २४० ॥

आत्मनः अनादेशे राजवत् कार्यं स्यात्, [इत्व-द्वित्वे वर्जयित्वा]
आत्मा अप्पाणो अप्पा । 'राज्ञश्च' (२३०) इति आकार उक्तः सोऽत्रापि
स्यात् । आत्मनः अप्पाणो । आत्मानं अप्पं । आत्मनः अप्पणो । आत्मनः
अप्पणा । आत्मभिः अप्पेहिं । आत्मनः अप्पा अप्पादो अप्पादु
अप्पाहि । आत्मभ्यः अप्पार्हितो अप्पासुत्तो । आत्मनः अप्पणो
आत्मनां अप्पाणं । आत्मभिः (०त्मनि?) अप्पे अप्पम्मि । आत्मसु
अप्पेसु ।

ब्रह्माद्या आत्मवत् ॥ २४१ ॥

ब्रह्मन् युवन् इत्यादयः शब्दाः आत्मवत् साधवः स्युः । ब्रह्म
ब्रह्मा ब्रह्माणो । युवा जुवा जुवाणो । अध्वा अद्वा अद्वाणो । एवमादयो
लक्ष्यानुसारतो ज्ञेयाः ।

न-सान्त-प्रावृट्-शरदः पुंसि ॥ २४२ ॥

नश्च सश्च न-सौ अन्ते यस्य इति विग्रहः । एते पुंसि प्रयोक्तव्याः

अनयोः तकारः तस्य सकारः स्यात् सौ । सः सो । ते ते । तं तं ।
तान् ता । तेन तद्गुणा तेण । तैः तेहिं ।

तद् ओश्च ॥ २४४ ॥

तदः परस्य डसेः ओ इत्ययमादेशो वा स्यात् । तस्मात् तओ तत्तो
तदो तादो तादु ताहि । तेभ्यः ताहिंतो तासुत्तो ।

डसा से ॥ २४५ ॥

तदो डसा सह से इत्यादेशो वा स्यात् । तस्य से तास तस्स ।

आमि सिं ॥ २४६ ॥

तद् आमा सह सिं इत्यादेशो वा स्यात् । तेषां सिं तेसिं ताणं ।
तस्मिन् तहिं तस्सिं तस्मिं तत्थ । तदा तहे तद्गुणा । तेषु तेसु । एवं यः जो ।

एतदः सावोत्वं वा ॥ २४७ ॥

एतद् ओत्वं वा स्यात् सौ । एषः एसो एस, नित्यप्राप्तविभाषेयम् ।
एते एते । एतं एतं । एतान् एता । एतेन एदिणा एदेण । एतैः एदेहिं ।

त्तो डसेः ॥ २४८ ॥

एतदः परस्य डसेः त्तो इत्ययमादेशो वा स्यात् ।

त्तो-त्थयोस्तो लोपः ॥ २४९ ॥

एतच्छब्दस्य तकारस्य लोपः स्यात् त्तो-त्थयोः परयोः । एतस्मात्
एत्तो एदादो एदादु एदाहि । एतस्मिन् एत्थ एतस्सिं एतस्मिं ।

पदस्य ॥ २५० ॥

—इत्यधिकृत्य ।

युष्मदस्तं तुमं ॥ २५१ ॥

युष्मदः पदस्य तं तुमं इत्यादेशौ स्यातां सावा सह । त्वं तं तुमं ।

तुज्जे तुम्हे जसि ॥ २५२ ॥

युष्मदः पदस्य तुज्जे तुम्हे इत्येतावादेशौ वा स्तः जसा सह । यूयं
तुज्जे तुम्हे ।

त्तं वाऽमि ॥ २५३ ॥

युष्मदः पदस्य त्तं इत्यादेशो वा स्यात् अमा सह । त्वाम् त्तं तुमं ।

युष्मदः पदस्य वो तुज्जे तुम्हे इत्येते आदेशाः स्युः शसा सह ।
युष्मान् वो तुज्जे तुम्हे ॥

टा-ङ्योस्तइ तए तुमए तुए ॥ २५५ ॥

युष्मदुत्तरयोः टा ङि इत्येतयोः तइ तए तुमए तुए इत्येते आदेशाः
स्युः प्रकृत्या सह । त्वया तइ तए तुमए तुए ।

आङि च ते दे ॥ २५६ ॥

युष्मदः पदस्य आङा सह ते दे इत्येतावादेशौ स्तः । आङ् इति
दासंज्ञा प्राचाम् ।

तुमाइ च ॥ २५७ ॥

अयमपि स्यात् । ते दे तुमाइ ।

तुज्जेहिं तुम्हेहिं तुब्मेहिं भिसि ॥ २५८ ॥

युष्मदः पदस्य एते आदेशाः स्युः भिसा सह । युष्माभिः तुज्जेहिं
तुम्हेहिं तुब्मेहिं । अत्र 'तुज्जे तुम्हे तुब्मे' इति सुवचम् 'शिषो' (१३७)
इत्यनेन 'भिसो हिं' (१७) इति हिमादेशस्यातिदिष्टत्वात् ।

ङसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि ॥ २५९ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङस्या सह । त्वत् तत्तो तइत्तो तुमादो
तुमादु तुमाहि ।

तुम्हाहिंतो तुम्हासुत्तो भ्यसि ॥ २६० ॥

युष्मद एतौ आदेशौ स्यातां पञ्चमीबहुवचनेन सह । युष्मद्
तुम्हाहिंतो तुम्हासुत्तो । अत्रापि 'तुम्हा भ्यसि' इत्येव सुवचम् । एवम्
[सत्] शब्देऽपि ज्ञेयम् ।

ङसि तुमो-तुह-तुज्ज-तुम्ह-तुब्भाः ॥ २६१ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङसा सह । तव तुमो तुह तुज्ज तुम्ह
तुब्भ ।

वो भे तुज्झाणं तुम्हाणमामि ॥ २६२ ॥

युष्मद एते स्युरामा सह । युष्माकम् वो भे तुज्झाणं तुम्हाणं ।

डौ तुमम्मि ॥ २६३ ॥

युष्मदः तुमम्मि इत्यादेशः स्यात् इया सह । त्वयि तुमम्मि तइ
तए तुमए तुए ।

तुज्जेसु तुम्हेसु सुपि ॥ २६४ ॥

युष्मद एतौ स्यातां सुपा सह । युष्मासु तुज्जेसु तुम्हेसु ।

अस्मदो हमहमहअं सौ ॥ २६५ ॥

अस्मद एते स्युः प्रथमैकवचनेन सह । अहम् हं अहं अहअं ।

अहम्मिरमि च ॥ २६६ ॥

अस्मदः प्रथमैकवचन-द्वितीयैकवचनाभ्यां सह आदेशः स्यात् ।
अहं अहम्मि ।

अम्हे जस् शसोः ॥ २६७ ॥

अस्मदः अयमादेशः स्याद् जसा शसा च सह । वयं अम्हे ।

मं ममं ॥ २६८ ॥

अस्मद एतावादेशौ स्याताम् । माम् अहम्मि मं ममं । 'अहम्मि
रमि च' (२६६) इत्यतो 'अमि' इत्यनुवर्तते । 'चानुकृष्टं नोत्तरत्र' इति
परिभाषया चानुकृष्टानां हं-आदीनां नानुवर्तनम् ।

णे शसि ॥ २६९ ॥

अस्मदो णे इत्यादेशः स्यात् शसा सह । अस्मान् अम्हे णे ।

आडि मे ममाइ ॥ २७० ॥

अस्मदः एतौ स्तः टया सह । मया मे ममाइ ।

डौ च मइ मए ॥ २७१ ॥

अस्मदः एतौ स्तः डि-टाभ्यां सह । मया मइ मए ।

अम्हेहिं भिसि ॥ २७२ ॥

अस्मदः अयं स्याद् भिसा सह । अस्माभिः अम्हेहिं ।

मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि डसौ ॥ २७३ ॥

अम्हेहिंतो अम्हेसुत्तो भ्यसि ॥ २७४ ॥

अस्मद एतौ स्यातां भ्यसा मह । अस्मत् अम्हेहिंतो अम्हेसुत्तो ।

मे मम मह मज्झ डसि ॥ २७५ ॥

अस्मद एते स्युः डसा सह । मम मे मम मह मज्झ । झस्य
धत्वमपीच्छन्ति केचित्, मद्ध ।

मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि ॥ २७६ ॥

अस्मद एते स्युरामा सह । अस्माकम् मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे ।

ममम्मि डौ ॥ २७७ ॥

अस्मदः अयं स्याद् डया सह । मयि ममम्मि मइ मए ।

अम्हेसु सुपि ॥ २७८ ॥

अस्मदः अयं स्यात् सुपा सह । अस्मासु अम्हेसु ।

शरदो दः ॥ २७९ ॥

अत्रान्त्यहलो दः स्यात् । लोपापवादः । शरत् सरदो, 'नसान्तं'
(२४२) इति पुंवद्भावः ।

दिक्-प्रावृषोः सः ॥ २८० ॥

अनयोरन्त्यस्य सः स्यात् । लोपापवादः । प्रावृद् पाउसो । रत्नमुद्र
रअणम् ।

अदसो दो मुः ॥ २८१ ॥

अदसो दकारस्य मु इत्यादेशः स्यात् सुपि ।

हश्च सौ ॥ २८२ ॥

अदसो दस्य हः स्यात् सौ । असौ अह अमू । हादेशोऽयं ओत्व-
आत्व-विन्दून् परत्वाद् बाधते । अमी अमुए अमुणो । अमुम् अमुं
अमून् अमूओ । अमुना अमुणा । अमीभिः अमूहिं । अमुष्मात् अमूदो
अमूदु अमूहि । अमीभ्यः अमूहिंतो अमूसुत्तो । अमुष्य अमुस्स
अमीषाम् अमुणं । अमुष्मिन् अमुस्सि अमुम्मि अमुत्थ । अमीषु अमूसु
तपः तवो । यशः जसो । सरः सरो ।

॥ इति हलन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

रो रा ॥ २८४ ॥

स्त्रियामन्त्यस्य रेफस्य रा इत्ययमादेशः स्यात्। धूः धुरा। गीः गिरा।
चतस्रः चत्तारो चत्तारि। का काआ की।

इद्वयः स्सा-से ॥ २८५ ॥

इकारान्तेभ्यः किं-यत्-तद्भ्यो ङसः स्सा से इत्येतावादेशौ वा
स्याताम्। कस्याः किस्सा कीसे। पक्षे कीइ कीए कीअ कीआ, 'टाङ्स०'
(१६०) इति आदेशाः। 'आदीतौ०' (१७४) इति आकारपक्षे काइ
काए। इयं इमा। युष्मदस्मदोर्लिङ्गत्रये सदृशं रूपम्। या जा जी। याः
जाउ जाओ जा। यस्याः जिस्सा जीसे जीइ जीए जीअ जीआ जाइ
जाए। वाक् वाआ।

न विद्युति ॥ २८६ ॥

अन्त्यस्य हल आकारो न स्यात्। विद्युत् विज्जू। दिक् दिसा,
'दिक्प्रावृषोः०' (२८०) इति सः। असौ दिक् अम् दिसा। अम्ः
अओ। मूशेषमूकारस्त्रीलिङ्गवत्।

॥ इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

*
नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो ॥ २८७ ॥

क्लीबे सविभक्तिकस्येदमः इदं इणं इणमो इत्यादेशाः स्युः स्वमोः
परयोः। इदम् इदं इणं इणमो। इमानि इमाइं। पुनस्तद्वत्। शेषं
पुंवत्। किम् किं। कानि काइं। पुनरपि। शेषं पुंवत्। तत् तं, '०अनपुं-
सके' (२४३) इत्युक्ते न सादेशः। तानि ताइं। एतत् एदं। यत् जं।
यानि जाइं। अदः अह अमुं। अमूनि अमूइं। 'न सान्त०' (२४२)
इति प्राप्ते—

न शिरो-नभसी ॥ २८८ ॥

एतौ पुंसि न स्याताम्। शिरः सिरं, 'अन्त्यस्य०' () इति
सोलोपः।

॥ इति हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

*

आधिकारऽर्थम् ।

हुं दान-पृच्छा-निर्धारणे ॥ २९० ॥

हुमित्ययं निपातसंज्ञः स्याद् दाने पृच्छायां निर्धारणे च ।

चिअ चेअ अवधारणे ॥ २९१ ॥

चिअ चेअ इत्येतौ निपातसंज्ञौ स्तः निश्चये ।

ओ सूचना-पश्चात्ताप-विकल्पेषु ॥ २९२ ॥

ओ इत्ययं निपातः सूचनायां पश्चात्तापे विकल्पे च ।

इर-किर-किला अनिश्चिताख्याने ॥ २९३ ॥

अयो निपाताः संशयाख्याने ।

हु-क्खु निश्चय-वितर्क-सम्भावनेषु ॥ २९४ ॥

हु क्खु इत्येतौ निपातौ निश्चये वितर्के सम्भावनायां च ।

णवरः केवले ॥ २९५ ॥

निपातः केवलेऽर्थे ।

णवरि आनन्तर्ये ॥ २९६ ॥

णवरि इति आनन्तर्ये निपातः ।

किणो प्रश्ने ॥ २९७ ॥

किणो इत्ययं पृच्छायां निपातः ।

अवो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु ॥ २९८ ॥

अवो इत्ययं निपातः दुःखे सूचनायां सम्भावनायां च ।

अलाहि निवारणे ॥ २९९ ॥

अलाहि इत्ययं निपातः निषेधे ।

अइ वले सम्भाषणे ॥ ३०० ॥

अइ वले एतौ निपातौ वचने ।

अवो अम्मो दुःखा-ऽऽक्षेप-विस्मापनेषु ॥ ३०१ ॥

एतौ निपातौ दुःखे आक्षेपे विस्मापने च । अत्र 'अवो दुःख-सूच-
ना-सम्भावनेषु' 'अम्मो च दुःखाऽऽक्षेप-विस्मापनेषु' इति सूत्रयितुं
शक्यमिति केचित् । वयं तु तत्रापरसूत्रे 'दुःख' शब्दमपि त्यजामः, पूर्वसूत्रे
दुःखशब्दस्य स्वरितत्वेनानुवर्तनात्, 'स्वरितेनाधिकारः' इति पाणिनीये

परिभाषितत्वात् समस्तपदादेकदेशानुवृत्तिस्तु 'विङति च' इत्यत्र 'न
धातुलोपः'—इत्यतो धातुग्रहणानुवृत्तिवत् ।

णवि वैपरीत्ये ॥ ३०२ ॥

अयं वैपरीत्ये निपातः ।

सू कुत्सायाम् ॥ ३०३ ॥

सू इत्ययं निपातो निन्दायाम् ।

रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहाऽऽक्षेपेषु ॥ ३०४ ॥

रे अरे हिरे इति त्रयः क्रमेण सम्भाषणे रतिकलहे आक्षेपे च निपा-
ताः । अत्र च 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' इत्युक्तत्वाद् यथासंख्यम् ।

म्मिव-मिअ-विआ इवार्थे ॥ ३०५ ॥

म्मिव मिअ विअ इत्येते इवार्थे निपातसंज्ञकाः ।

अज्ज आमन्नणे ॥ ३०६ ॥

अज्ज इत्ययं निपातः आमन्नणेऽर्थे, सम्बोधने इत्यर्थः ।

शेषः संस्कृतात् ॥ ३०७ ॥

उक्तादन्यः संस्कृतादवगन्तव्यः ।

इवे वः ॥ ३०८ ॥

इवशब्दे व्व इति निपात्यते । स इवायम् सो व्व इमो । विअ इति
वक्तव्यम्, सो विअ इमो ।

अपौ विः ॥ ३०९ ॥

अपिशब्दे विवः इति निपात्यते । सोऽपि देव इव सो विव देवो व्व ।

ओदवाऽपयोः ॥ ३१० ॥

अव अप इत्येतयोः ओ इत्यादेशो वा स्यात् । अवगाहः ओगाहो
अवगाहो । अपनयः ओणओ अवणओ, 'पो वः' (८५) इति वः ।

इतेस्तः पदादेः ॥ ३११ ॥

पदादेः इतिशब्दस्य यः तकारः ततः परस्य इकारस्य अ इत्यादेशः
स्यात् । इति विलपन् इअ विलअन्तो । त इति किम् ? आदेरिकारस्य मा
भव । पदादेरिति किम् ? इत्येतिरिति वक्तव्यम् (?) । पिण्य इति इमसि

कृष्णरो यो द्विधाशब्दः तस्य आदेः इकारस्य ओकारः स्याद् उश्च
द्विधाकृतम् दोहाइअं दुहाइअं । एवम् एअं एवं, एव एअ एव, यावदादि-
त्वाद् वा वलोपः ।

तल्-त्वयोर्दा-त्तणौ ॥ ३१३ ॥

पाणिनीये भावार्थे [यौ] तल्-त्वौ विहितौ तयोः क्रमेण दा' त्तण
इत्येतावादेशौ स्याताम् । कृष्णता कृष्णदा, 'तलन्तं स्त्रियाम्' ()
इति लिङ्गानुशासनबलात् स्त्रीत्वम् । कृष्णत्वम् कृष्णत्तणं, 'त्वान्तं
स्त्रीवम्' () इति षण्डत्वम् ।

आल्विल्लोलवत्तेत्ता मतुपः ॥ ३१४ ॥

तदस्यास्त्यस्मिन्नित्यर्थे विहितो मतुप् तस्य आल्ल इल्ल उल्ल आल
वत्त इत्त इति षडादेशाः स्युः । निद्रावान् णिहाल्ल । मालावान् मालाइल्लो
विकारवत् विआरुल्लं । धनवान् धणालो । गुणवान् गुणवत्तो । मानवान्
माणइत्तो, 'सन्धावचा०' (१) ।

विद्युत्-पीताभ्यां वा लः ॥ ३१५ ॥

आभ्यां लप्रत्ययः स्यात् । विद्युत् विज्जुली, विद्युच्छब्दस्य स्त्रीलिङ्ग
त्वात् स्त्रीत्वम्, पक्षे विजू । पीतं पीअलं पीअं ।

॥ इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरव-
विरचिते प्राकृतानन्दे प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥



भू सत्तायाम् ।

भुवो हो-हुवौ ॥ ३१६ ॥

भूधातोः हो हुव इत्येतावादेशौ स्याताम् ।

ते-तिपोरिदेतौ ॥ ३१७ ॥

धातोः परयोः ते तिप् इत्येतयोरिदेतौ स्याताम् । यथासंख्यं नेष्यते ।

अत ए से ॥ ३१८ ॥

नियमार्थं वचनम् । त-तिपोः सिप्-थासोर्यौ ए से इत्येतावादेशौ विहितौ तावकारान्तादेव स्याताम्, नान्यस्मात् ।

लादेशे वा ॥ ३१९ ॥

लकारादेशे परे अत एत्वं वा स्यात् । भवति = होइ हुवइ हुवए हुवेइ हुवेए ।

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोज्जं जा वा ॥ ३२० ॥

त्तमाने भविष्यदनद्यतने च विध्यादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्जं जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । होज्ज होज्जा । लि-लो-लुङ्-लङे विध्यादयः ।

मध्ये च ॥ ३२१ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु च धातु-प्रत्यययोर्मध्ये ज्जं जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । भवति = होज्जइ होजेइ होज्जाइ, पक्षे पूर्व-मुक्तम् ।

नानेकाचः ॥ ३२२ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु चानेकाचो धातोः परतो मध्ये ज्जं जा इत्येतावादेशौ न स्याताम् । भवति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा । एवमग्रेऽपि पूर्वोक्तलेषु प्रथम-द्वितीय-तृतीयेषु पुरुषेषु एकवचन-द्विवचन-बहुवचनादावप्यवगन्तव्यम् ।

न्ति-हेत्था-मो-मु-मा बहुषु ॥ ३२३ ॥

तिङो बहुवचनानामेते आदेशाः स्युः । प्रथमपुरुषबहुवचनस्य न्ति, मध्यमस्य ह इत्था एतौ, उत्तमस्य मो मु म एते इति विवेकः । भवतः भवन्ति = होन्ति हुवन्ति हुवेन्ति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा होज्ज होज्जा ।

थास्-सिपोः सि से ॥ ३२४ ॥

धातोः परयोः थास्-सिपोः सि से इत्येतावादेशौ स्याताम् ।
यथासंख्यं न । भवसि = होसि हुवसि हुवेसि हुवसे हुवेसे । भवथः भवथ-
होह होइत्था हुवह हुवेह हुवइत्था हुवेइत्था हुवित्था, 'सन्धा०' (१)
इत्यकारलोपो वा ।

इट्-मयोर्मिः ॥ ३२५ ॥

इट् मि इत्येतयोः मिः स्यात् ।

अत आ मिपि वा ॥ ३२६ ॥

अकारस्य आकारो वा स्याद् मिपि परे । भवामि = होमि हुवामि
हुवेमि हुवमि ।

इच्च बहुषु ॥ ३२७ ॥

मिपो बहुवचने परे अत इः स्याद् आ च । भवावः भवामः = होमो
होमु होम हुवामो हुविमो हुवेमो हुवमो हुवामु हुविमु हुवेमु हुवमु
हुवाम हुविम हुवेम हुवम । इति लट् । अथ लिट्-

ईअ भूते ॥ ३२८ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य ईअ इत्यादेशः स्यात् । बभूव-
हुवीअ ।

इअं भूते ॥ ३२९ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य इअं इत्यादेशः स्यात् । बभूव-
हुविअं ।

एकाचो हीअ ॥ ३३० ॥

भूते काले एकाचो धातोः परस्य प्रत्ययस्य हीअ इत्यादेशः स्यात्
बभूव = होहीअ । त्रीण्यपि रूपाणि प्रथम-मध्यमोत्तमैकवचन-द्विवचन
बहुवचनेष्ववगन्तव्यानि ।

उ सु मु विध्यादिष्वेकस्मिन् ॥ ३३१ ॥

विध्यादेरेकवचनस्य क्रमेण उ सु मु इत्येते आदेशाः स्युः । बभूव-
होउ हुवेउ हुवउ ।

न्तु ह मो बहुषु ॥ ३३२ ॥

विध्यादेर्बहुवचनस्य क्रमेण न्तु ह मो इत्येते आदेशाः स्युः । बभूवुः
होउ हुवेउ हुवउ । बभूविथ = होस हुवेस हुवस = बभूव = होइ हुवेइ

हुवह, हविधानं इत्थ(त्था)बाधनार्थम् । बभूव-होसु हुवसु हुवमु । बभू-
विम=होमो हुवेमो हुवमो । भविधानं भु-भयोर्बाधार्थम् । इति लिट् ।
अथ लृट्-

धातोर्भविष्यति हिः ॥ ३३३ ॥

भविष्यति काले धातोः परे हिः स्यात् । भविता=होहिइ हुवेहिइ
हुवहिइ ।

एच्च क्त्वा-तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु ॥ ३३४ ॥

एषु अत एत्वं स्यात्, चादिश्च । हुविहिइ हुवेहिए हुवहिए हुविहिए
होज्ज होज्जा हुवेज्ज हुवज्ज हुवज्जा होज्जहिइ होज्जेहिइ होज्जाहिइ होउ हुवेउ
हुवउ । भवितारः=होहिंति हुवेहिंति हुविहिंति हुवहिंति होन्तु हुवेन्तु
हुवन्तु । भवितासि=होहिसि हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे होसु
हुवेसु हुवसु । भवितास्थ=होहिहा हुवेहिह हुवहिह होह हुवेह हुवह ।

उत्तमे स्सा हा च ॥ ३३५ ॥

भविष्यत्युत्तमे परे धातोः परौ स्सा हा इत्येतौ स्याताम् । चात् हिः ।

मिना स्सं वा ॥ ३३६ ॥

भविष्यति मिना सह धातोः परः स्सं वा स्यात् । भविष्यामि=
होस्सामि हुवेस्सामि हुवस्सामि होहामि हुवेहामि हुवहामि हुवाहामि
होहिमि हुवेहिमि हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं होसु हुवेसु
हुवासु हुवसु ।

मो-मु-मैर्हि-स्सा-हित्था ॥ ३३७ ॥

भविष्यति मो-मु-मैः सह हिस्सा हित्था इत्येतावादेशौ वा स्याताम् ।
भवितास्सः=होहिस्सा हुवेहिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था
हुवेहित्था हुविहित्था हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो
हुवस्सामो होहामो हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो
हुवेहिमो हुविहिमो हुवाहिमो हुवहिमो होमो हुवेमो हुविमो हुवामो
हुवमो । इति लृट् ।

अथ लृट् । भविष्यति=होहिइ हुवेहिइ हुवहिय हुवेहिए हुवहिए ।
भविष्यन्ति=होहिन्ति हुवेहिन्ति हुवहिन्ति । भविष्यसि=होहिसि
हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे । भविष्यथ=होहिह हुवेहिह-
हुवहिह होहित्थ हुवइत्थ हुवित्थ । भविष्यामि=होस्सामि हुवेस्सामि

हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं । भविष्यामः = होहिस्सा हुवे-
हिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था हुवेहित्था हुविहित्था
हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो हुवस्सामो होहामो
हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो हुवेहिमो हुविहिमो
हुवाहिमो हुवहिमो होस्सामु हुवेस्सामु हुविस्सामु हुवस्सामु होहामु
हुवेहामु हुविहामु हुवाहामु हुवहामु होहिमु हुवेहिमु हुविहिमु हुवाहिमु
हुवहिमु होस्साम हुवेस्साम हुविस्साम हुवस्साम होहाम हुवेहाम
हुविहाम हुवाहाम हुवहाम होहिम हुवेहिम हुविहिम हुवाहिम हुवहिम ।
इति लट् ।

अथ लोट् - भवतु = होउ हुवेउ हुवउ । भवन्तु = होंतु हुवेन्तु हुवन्तु ।
भव = होसु हुवेसु हुवसु । भवत = होह हुवेह हुवह । भवानि = होसु हुवेसु
हुवासु हुवसु । भवाम = होमो हुवेमो हुवामो हुविमो हुवमो । इति
लोट् । लोटवद् लङ् - लिङाशीर्लिङः ।

अथ लृङ् - अभूत् = हुवीअ हुविअं होहीअ, एवं पुरुष - वचनेषु ।
लृङ् लट्त्वत् ।

प्रादेर्भवः ॥ ३३८ ॥

प्रादेः परस्य भुवो भव इत्यादेशः स्यात् । प्रभवति = पभवइ पभवए
पभवेइ पभवेए । उद्भवति उब्भवइ । प्रतिभवइ पडिभवइ, 'प्रतिसर०'
(३३) इति तस्य डः । खाद भक्षणे ।

खादि-धाव्योः खा-धौ ॥ ३३९ ॥

अनयोः खा धा इत्येतौ क्रमेण स्यातां वर्त्तमाने भविष्यति विध्या-
दीनामेकवचनेषु च । खादति खाइ । चखाद खाहीअ । खादिता खाहिइ
खादिष्यति खाहिइ । खादतु खाउ । एवं लङ् - लिङाशीर्लिङः । अखादीत
खादीअं खादीअ । लृङ् लट्त्वत् ।

क्षियो क्षिजः ॥ ३४० ॥

'क्षि क्षये' अस्य क्षिज् इत्यादेशः स्यात् । क्षयति क्षिजइ क्षिजए
छिज् - भिज्जावप्येके । व्रज गतौ ।

चो व्रज-नृत्योः ॥ ३४१ ॥

अवयोरन्तस्य ज्ञः स्यात् । व्रजति वच्चइ वच्चइ वच्चए । व्रजिता वच्च

वेष्टेश्च ॥ ३४२ ॥

अन्तस्य ढः स्यात् । ठापवादः । वेष्टते वेढइ वेढए वेढेइ वेढेए ।
'क्थेढः' (३५८) इति पूर्वसूत्रान्तर्गतं न कृतम्, 'उत्समोर्लः' (३४३)
इत्युत्तरसूत्रेऽनुवृत्त्यर्थम्, अन्यथा कथिरपि ल्लविधानेऽनुवर्त्तते ।

उत्समोर्लः ॥ ३४३ ॥

एतयोः परस्य वेष्टेरन्तस्य ल्लः स्यात् । उद्वेष्टते उव्वेष्टइ । संवेष्टते
संविल्लइ । स्फुट विकसने ।

स्फुटि-चल्योर्वा ॥ ३४४ ॥

अनयोरन्तस्य द्वित्वं वा स्यात् । स्फोटते फुटइ फुटइ, भौवादिक-
तौदादिकौ गृह्येते स्फुटि-चली इह । पट गतौ ।

पटेः फलः ॥ ३४५ ॥

स्पष्टम् । पटति फलइ । जृभि गात्रविनामे ।

जृभो जंभाअ ॥ ३४६ ॥

जृभि इत्यस्य जंभाअ इत्यादेशः स्यात् । जृम्भते = जंभाअइ जंभाएइ
जंभाअए जंभाएए । जृम्भिता = जंभाअहिइ जंभाएहिइ जंभाअहिए जंभा
एहिए । जल्प व्यक्तायां वाचि ।

जल्पेर्लो मः ॥ ३४७ ॥

जल्पेर्लस्य मः स्यात् । जल्पति जंपइ । घुण भ्रमणे ।

घुणो घोलः ॥ ३४८ ॥

घुणेर्घोल इत्यादेशः स्यात् । घूर्णति घोलइ घोलए, भ्वादि तुदादि ।
मील निमेषणे ।

प्रादेर्मीलः ॥ ३४९ ॥

प्रादेः परस्य मीलो लस्य द्वित्वं वा स्यात् । प्रमीलति = पमिल्लइ पमी-
लइ पमिल्लए पमीलए पमिल्लेइ पमीलेइ पमील्लेए पमीलेए । जि जये ।

श्रु-हु-जि-लू-धुवां ण्णोऽन्त्ये ह्रस्वः ॥ ३५० ॥

एषामन्त्ये ण्णः स्यात्, दीर्घस्य ह्रस्वश्च स्यात् । जयति जिण्णइ ।
जिगाय जिण्णीअ ।

धावु गति-शुद्धोः । धावति धावते धाइ । दधाव दधावे धाहीअ ।
धाविता धाहिइ । धावतु धावतां धाउ ।

काशेवासः ॥ ३५१ ॥

अवात् परस्य काशेवास इत्यादेशः स्यात् । अवकासते ओवासइ ।
अवादिति किम् ? कासते कासइ । ग्रसु ग्लसु अदने ।

ग्रसेर्विसः ॥ ३५२ ॥

अस्य विस इत्यादेशः स्यात् । ग्रसते विसइ । गाहू विलोडने ।

अवाद् गाहेर्वाहः ॥ ३५३ ॥

अवात् परस्य गाहेर्वाह इत्यादेशः स्यात् । अवगाहते ओवाहइ ।
अवादिति किम् ? गाहते गाहइ । वृषु मृषु सेचने ।

वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः ॥ ३५४ ॥

एषां ऋतः अरिः इत्ययमादेशः स्यात् । वर्षति वरिसइ । मर्षति
मरिसइ । कृषि विलेखने इति भौवादिकस्यैव ग्रहणम्, न तौदादिकस्य,
वृषादिसाहचर्यात् । हृषु अलीके । हर्षति हरिसइ । वृधु वृद्धौ ।

वृधेर्ढः ॥ ३५५ ॥

अन्तस्य स्यात् । वर्धते वडइ, 'ऋतोऽद्' (१२०) इत्यकारः । भित्त्वर
सम्भ्रमे ।

त्वरस्तुवरः ॥ ३५६ ॥

स्पष्टम् । त्वरते तुवरइ तुवरए । चल कम्पने । चलति चल्लइ चलइ,
'स्फुटि-चल्योर्वा' (३४४) इति वा द्वित्वम् । पटल गतौ ।

शद्ल-पत्योर्ढः ॥ ३५७ ॥

अनयोरन्तस्य ङः स्यात् । पतति पडइ । शद्ल शान्ते । शीयते
सडइ । कथे निष्पाके ।

कथेर्ढः ॥ ३५८ ॥

अन्तस्य स्यात् । कथति कडइ । म्लै हर्षक्षये ।

म्लै वा-वाऔ ॥ ३५९ ॥

अस्य वा वाअ इत्येतावादेशौ स्याताम् । म्लायति वाइ वाअइ । ध्ये
चिन्तायाम् ।

ष्ठा-ध्या-गानां ठाअ-ज्ञाअ-गाआः ॥ ३६० ॥

एषामेते क्रमेण स्युः ।

ठा-ज्ञा-गाश्च वर्त्तमान-भविष्यद्-विध्याद्येकवचनेषु ॥ ३६१ ॥

एषां षा-ध्या-गानां षा-या-गा-इत्येते आदेशाः स्युः । वाअ-पत्योर्ढः ।

ध्यायति=झाअइ झाइ । दध्यौ=झाइअं झाहीअ । ध्याता=झाअहिइ झाहिइ
 एवं लृट् । ध्यायतु=झाअउ झाउ । अध्यासीत्=झाइअं झाईअ । अन्
 'ठाझा-गाश्चालुङि' इत्येव सूत्रयितुं युक्तम् । गै शब्दे । गायति गाअ
 गाइ, पूर्ववत् । घा गन्धोपादाने ।

जिघ्रतेः पा-पाऔ ॥ ३६२ ॥

अस्य पा पाअ एतौ स्याताम् । जिघ्रति पाइ पाअइ । जघ्नौ पाहीअ
 पाईअ पाइअं । ध्मा शब्दा-ऽग्निसंयोगयोः ।

उद्धमो धूमा ॥ ३६३ ॥

उदः परस्य धमतेः धूमा इत्यादेशः स्यात् । उद्धमति उद्धूमाइ
 छा गतिनिवृत्तौ । तिष्ठति ठाअइ ठाइ, ध्यावत् । स्मृ चिन्तायाम् ।

स्मरतेर्भर-सुमरौ ॥ ३६४ ॥

अस्य भर सुमर इत्येतौ स्याताम् । स्मरति भरइ सुमरइ । सृ गतौ

ऋतोऽरः ॥ ३६५ ॥

धात्वन्तऋकारस्य अरः स्यात् । सरति सरइ । श्रु अवणे । शृणोति
 सुण्णइ । शुश्राव सुण्णीअ सुणिणअं ।

श्रवादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा ॥ ३६६ ॥

श्रु वचि नमि रुदि दृशि विदि इत्येतेषां प्रथम-मध्यम-उत्तमपुरुषेषु
 परेषु सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं इति क्रमेण आदेशाः स्युः,
 अनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा । ओता=सोच्छिहिइ सोच्छिइ सोच्छइ
 सोच्छहिइ सोच्छेहिइ सोच्छेइ सोच्छिहिए सोच्छिए सोच्छए सोच्छ-
 हिए सोच्छेहिए सोच्छेए । ओतारः=सोच्छिंहिति सोच्छिति सोच्छंति
 सोच्छिंहिति सोच्छेंहिति सोच्छंति । ओतासि=सोच्छिसि सोच्छिहिसि
 सोच्छेसि सोच्छेहिसि सोच्छसि सोच्छहिसि सोच्छिसे सोच्छिहिसे
 सोच्छेसे सोच्छेहिसे सोच्छसे सोच्छहिसे । ओतास्थ=सोच्छिहिह
 सोच्छेहिह सोच्छहिह सोच्छिह सोच्छेह सोच्छह ।

कृ-दा-श्रु-वचि-गमि-रुदि-दृशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं

वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं ॥ ३६७ ॥

एषामेते क्रमेण स्युः भविष्यत्युत्तमैकवचने । ओतासि=सोच्छं
 सोच्छिस्सामि सोच्छेस्सामि सोच्छस्सामि सोच्छिहामि सोच्छेहामि
 सोच्छिहामि सोच्छिहामि सोच्छिहामि सोच्छिहामि सोच्छिहामि सोच्छिहामि

सोच्छाहामि सोच्छामि सोच्छहिमि सोच्छमि सोच्छेस्सं सोच्छस्सं
 श्रोतास्सः=सोच्छिहिस्सा सोच्छेहिस्सा सोच्छाहिस्सा सोच्छिहित्थ
 सोच्छेहित्था सोच्छाहित्था सोच्छहित्था सोच्छिस्सामो सोच्छेस्सामो
 सोच्छस्सामो सोच्छिहामो सोच्छेहामो सोच्छाहामो सोच्छहामो सोच्छि
 हिमो सोच्छिमो सोच्छेहिमो सोच्छेमो सोच्छाहिमो सोच्छामो सोच्छ
 हिमो सोच्छमो । श्रोष्यति=सोच्छिहिइ इत्यादि । प्रथमे मध्यमस्यैक
 वचने च लुङ्बत् । बहुवचने तु श्रोष्यथ=सोच्छिहिइ सोच्छिह सोच्छे
 हिइ सोच्छेइ सोच्छहिइ सोच्छइ सोच्छिहित्थ सोच्छित्थ सोच्छे
 हित्थ सोच्छेइत्थ सोच्छहित्थ सोच्छइत्थ । मिपि लुट्बत्, मवि च । मु-
 मयोस्तु यत्र मो इति तत्र मु-मौ प्रत्येकं प्रयोज्यौ । शृणोतु सुण्णउ
 शृण्वन्तु सुणंतु । शृणु सुणसु । शृणुत सुणइ । शृणोमि सुणमु
 शृणमः सुणमो । दृशिइ प्रेक्षणे । इइ इत् ।

दृशेः पुलअ-णिअक्क-अवक्खाः ॥ ३६८ ॥

व्यक्षरा आदेशाः स्युः । पश्यति पुलअइ णिअक्कइ अवक्खइ । दद्रु
 पुलईअ णिअक्क(क्की?)अ अवक्खीअ । द्रष्टा दच्छिहिइ इत्यादि वोच्छवत्
 कृषि विलेखने । कर्षति करिसइ । गम्लु गतौ गच्छति गमइ । गन्तासि
 गच्छं इत्यादि । इति भ्वादिः ।

अद भक्षणे ।

शेषाणामदन्तता ॥ ३६९ ॥

लुप्तानुबन्धानां शेषाणामकारान्तत्वं स्यात् । अत्ति अअइ । हन्
 हिंसा-गत्योः ।

हन्तेर्ममः ॥ ३७० ॥

हन्तेर्नस्य ममः स्यात् । हन्ति हम्मइ । वच परिभाषणे । वक्ति व
 अइ । वक्ष्यामि वोच्छं इत्यादि सोच्छवत् । विद ज्ञाने । वेत्ति वे
 वेअइ । वेत्स्यामि वेच्छं । अस भुवि । अस्ति अत्थि । सन्ति असन्ति ।

असेल्लोपः ॥ ३७१ ॥

असो लोपः स्यात् थास्-सिपोः परयोः । असि सि । थासोऽनुवृत्ति
 भाव-कर्मणोः सफला । स्थ त्थ ।

मि-मो-मु-मानामधो हश्च ॥ ३७२ ॥

अन्तेः पठेषां मि-मो-स-स-मानामधो हः सात् अन्तेऽल्लोपः । असि

भूते निपातः । बभूव आसि । मृजूष शुद्धौ ।

मृजेर्लुभ-पुसौ ॥ ३७४ ॥

द्वक्षरौ स्याताम् । मार्ष्टि लुभइ पुसइ 'सुप' इति पाठे सुपइ ।
रुदिर् अश्रुविमोचने ।

रुदेर्वः ॥ ३७५ ॥

रुदेर्दस्य वः स्यात् । रोदिति रुवइ । रुदिष्यामि रुच्छं, वोच्छवत् ।
इत्यदादयः ।

हु दानादनयोः । जुहोति हुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०) इति ण्णः ।
जिभी भये ।

भियो भा-बीहौ ॥ ३७६ ॥

भा बीह इत्येतावादेशौ स्याताम् । बिभेति भाइ बीहइ । पृ पालन
पूरणयोः । पिपर्त्ति परइ । डुभृञ् धारण-पोषणयोः । बिभार्त्ति भरइ
माइ माने ।

निरो माडो माणः ॥ ३७७ ॥

निरः परस्य माडो माण इत्यादेशः स्यात् । निर्मिमीते निम्माणइ
निरः किम् ? मिमीते माइ । डुदाञ् दाने । ददाति दाइ । दातास्मि दाहं
डुधाञ् धारण-पोषणयोः ।

श्रदो धो दहः ॥ ३७८ ॥

श्रदः परस्य धो दह इत्यादेशः स्यात् । श्रदधाति सदहइ । श्रव
इति किम् ? धाइ । विजिर् पृथग्भावे ।

उदो विजः ॥ ३७९ ॥

उदः परस्य विजेर्जस्य वः स्यात् । उद्वेवित्ते उद्वेवेक्ति उव्विव्वइ
क सृ गतौ । इयर्त्ति अरइ । ससर्त्ति सरइ । इति ह्यादयः ।

दिबु क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहारबुति-स्मृति-मोद-मद-स्वप्न-क्रान्ति
गतिषु । दीव्यति दिवइ । नृती गात्रविनामे । नृत्यति णच्चइ । असि उद्वेगे
त्रसेर्वजः ॥ ३८० ॥

स्पष्टम् । त्रस्यति वज्जइ । व्रीड चोदने लज्जायां च । व्रीड्यति वीलइ
बूइ प्राणिप्रसवे । सूयते सूइ । दूइ परितापे ।

स्पष्टम् । दूयते = दूमइ दूमए दूमेइ दूमेए । शो तनूकरणे । दयति
सोइ । दो अवखण्डने । द्यति दोइ । जनी प्रादुर्भावे । जायते जणइ ।
पद गतौ ।

पदः पालः ॥ ३८२ ॥

आदेशः स्यात् । पद्यते पालइ । बुध अवगमने ।

युधि-बुध्योर्झः ॥ ३८३ ॥

एतयोर्धस्य झः स्यात् । बुध्यते बुज्झइ । युध सम्प्रहारे । युध्यते
जुज्झइ । सृज विसर्गे । सृज्यते सज्जइ । शुष शोषणे ।

रुषादीनां दीर्घः ॥ ३८४ ॥

रुषादीनां दीर्घः स्यात् । शुष्यति सूसइ । तुष प्रीतौ । तुष्यति
तूसइ । दुष वैकृत्ये । दुष्यति दूसइ । कुध कोपे ।

क्रुधेर्झरः ॥ ३८५ ॥

स्पष्टम् । क्रुध्यति झरइ । रुष रोषे । रुष्यति रूसइ । गृधु अभि-
काङ्क्षायाम् । गृध्यति गधइ । इति दिवादयः ।

घुञ् अभिषवे । सुनोति सुअइ । चिञ् चयने ।

चिञश्चिणः ॥ ३८६ ॥

चिञः चिण इत्यादेशः स्यात् । चिनोति चिणइ । शक् शक्तौ ।

शकादीनां द्वित्वम् ॥ ३८७ ॥

शकादीनां द्वित्वं वा स्यात् । शक्नोति सक्कइ । पक्षे-

शकेस्तर-चअ-तीराः ॥ ३८८ ॥

अस्य ह्यक्षरास्त्रय आदेशाः स्युः । शक्नोति तरइ चअइ तीरइ ।
अशू व्याप्तौ सङ्घाते च । अश्रुते असइ । जिघृषा प्रागल्भ्ये । घृष्णोति
धसइ । इति स्वादयः ।

तुद व्यथने । तुदति तुअइ । णुद प्रेरणे ।

णुदेर्लोणः ॥ ३८९ ॥

णुदेर्लोण इत्यादेशः स्यात् । नुदति लोणइ । 'णोल्ल' इति पाठे
णोल्लइ । कृष विलेखने । कृषति कसइ, 'वृष-कृष-०' (३५४) इति अरिस्तु
न, वृषसाहचर्याद् भौवादिकस्यैव ग्रहणात् । ओविजी भये । उद्विजति
उव्विवइ, 'उदो विजः' (३७९) इति वः । डुमस्जौ शुद्धौ ।

बुड-खुप्पौ मस्जेः ॥ ३९० ॥

[मस्जेः बुड खुप्प इत्येतावादेशौ स्याताम् ।] मज्जाति बुडइ खुप्पइ ।
तृप तृप्पौ ।

तृपस्थिम्पः ॥ ३९१ ॥

तृपेः थिम्प इत्यादेशः स्यात् । तृपति थिम्पइ । घुण भ्रमणे । घूर्णति
घोलइ । षृङ् व्यायामे । प्रियते परइ । मृङ् प्राणत्यागे । म्रियते मरइ ।
सृज विसर्गे । सृजति सअइ । कृती छेदने । कृन्तति कतइ । खिद परि-
घाते । खिंदति विसूरइ । पिश अवयवे । पिशति पिसइ । इति तुदादयः ।

रुधिर आवरणे ।

रुधेर्न्ध-म्मौ ॥ ३९२ ॥

रुधेः धस्य न्ध म्म इत्येतावादेशौ स्याताम् । रुणद्धि रुन्धइ रुम्मइ ।
भिदिर् विदारणे ।

भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः ॥ ३९३ ॥

अनयोः दस्य न्दः स्यात् । भिनत्ति भिंदइ । छिदिर् द्वैधीकरणे ।
छिनत्ति छिंदइ । खिद दैन्ये । खिनत्ति विसूरइ । ओविजी भय-चलनयोः ।
विनत्ति विअइ । उद्विनत्ति उद्विअइ । इति रुधादयः ।

तनु विस्तारे । तनोति तण्णइ । षणु दाने । सनोति सण्णइ । क्षणु
हिंसायाम् । क्षणोति खण्णइ । क्षिणु च-क्षिणोति खिण्णइ । ऋणु गतौ ।
ऋणोति अण्णइ । तृणु अदने । तृणोति तण्णइ । घृणु दीप्तौ । घृणोति
घण्णइ । वनु याचने । वनोति वण्णइ । मनु अवबोधने । मनोति मण्णइ ।
डुकृञ् करणे ।

कृञः कुणो वा ॥ ३९४ ॥

कृञः कुण इत्यादेशो वा स्यात् । करोति कुणइ करइ ।

कृञः का भूत-भविष्यतोश्च ॥ ३९५ ॥

एतयोरर्थयोः क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु च कृञः का इत्यादेशः स्यात् ।
चकार काहीअ कम्मं (?) [करिष्यति ?] काहिइ । कर्तास्मि काहं, दावत् ।
इति तनादयः ।

डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये ।

वः क्व च ॥ ३९७ ॥

वेः परस्य क्रीणातेः के इत्यादेशः स्यात् । चात् किणः । विक्रीणाति
विक्रेइ विक्रिणइ । लूञ् छेदने । लुनाति लुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०)
इति अन्यस्य णः पूर्वस्य ह्रस्वश्च । कृञ् हिंसायाम् । कृणाति करइ । धूञ्
कम्पने । धुनाति धुण्णइ । शृ हिंसायाम् । शृणाति सरइ । पृ पालन-पूर-
णयोः । पृणाति परइ । मृ हिंसायाम् । मृणाति मरइ । ज्ञा अवबोधने ।

ज्ञो जाण-मुणौ ॥ ३९८ ॥

व्यक्षरावादेशौ स्याताम् । जानाति जाणइ मुणइ । बध बन्धने ।
बध्नाति बंधइ । वृङ् सम्भक्तौ । वृणीते वरइ । मृद क्षोदे ।

मृदो लः ॥ ३९९ ॥

मृद्रातेः दस्य लः स्यात् । मृद्राति मलइ । अश भोजने । अश्नाति
असइ । पुष पुष्टौ । पुष्णाति पूसइ । ग्रह उपादाने ।

ग्रहेर्गेण्हः ॥ ४०० ॥

स्पष्टम् । गृह्णाति गेण्हइ । इति ऋयादयः ।
चुर स्तेये ।

णिच एदादेरत आत् ॥ ४०१ ॥

णिच एत् स्यात्, धातोरकारस्य आत् स्यात् ।

आवे च ॥ ४०२ ॥

णिचोऽयमपि आदेशः स्यात् । चोरयति चुरेइ चुरावेइ । चिति
स्मृत्याम् । चिन्तयति चितेइ चिंतावेइ । लक्ष दर्शना-ऽङ्कनयोः । लक्षयति
लाखेइ लखावेइ । भक्ष अदने । भक्षयति भाखेइ भखावेइ । गज शब्दे ।
गाजयति गाजेइ गजावेइ । शठ श्लाघायाम् । शाठयति साठेइ सठावेइ ।
इति चुरादयः ।

भू-हेतुमद् णिच । भावयति होएइ होआवेइ हुवेइ हुवावेइ । पठ-
पाठयति फालेइ फलावेइ । जल्पयति जंपेइ जंपावेइ । प्रमीलयति पमि-
ल्लेइ पमिल्लावेइ । अवकाशयति ओवासेइ ओवासावेइ । ग्रासयति विसेइ
विसावेइ । अवगाहयति ओगाहेइ ओगाहावेइ । रोषयति रूसेइ रूसा-
वेइ । वर्षयति वरिसेइ वरिसावेइ । वर्धयति वड्डेइ वड्डावेइ । त्वरयति
तुवरेइ तुवरावेइ । चलयति चलेइ चालेइ चल्लावेइ चलावेइ । स्मारयति

भारेइ भरावेइ सुमरेइ सुमरावेइ । सारयति सारेइ सरावेइ । आवयति
सुण्णेइ सुण्णावेइ । गमयति गामेइ गमावेइ । रोदयति रुवेइ रुवावेइ ।
पारयति पारेइ पारावेइ । नर्त्तयति णच्चेइ णच्चावेइ । त्रासयति वज्जेइ
वज्जावेइ । व्रीडयति वीलेइ वीलावेइ । शुष्यति सूसेइ सूसावेइ । कुध्यति
झूरेइ झूरावेइ । चिनोति चिण्णेइ चिण्णावेइ । शक्नोति सक्केइ सक्कावेइ,
तारेइ तरावेइ, चाएइ चआवेइ, तीरेइ तीरावेइ । घूर्णयति घोलेइ घोला-
वेइ । रुन्धयति रुंधेइ रुंधावेइ, रुम्भेइ रुम्भावेइ । कारयति कारेइ करावेइ,
कुणेइ कुणावेइ । काययति किणेइ किणावेइ । इति हेतुमणिचप्रकरणम् ।

यक ईअ-इज्जौ ॥ ४०३ ॥

यको द्व्यक्षरावादेशौ स्याताम् । भूयते होईअइ होइज्जइ हुवीअइ
हुविज्जइ ।

भाव-कर्मणोर्वश्च ॥ ४०४ ॥

श्रु हु जि लू धू एषामन्ते वः स्यात्, णश्च भाव-कर्मणोः । जीयते
जिघइ जिण्णीअइ जिणिज्जइ ।

गमादीनां द्वित्वं वा ॥ ४०५ ॥

एषां द्वित्वं वा स्याद् भाव-कर्मणोः । हस्यते हस्सइ हसीअइ
हसिज्जइ । रम्यते रम्मइ रमीअइ रमिज्जइ ।

ह-क्रोर्हीर-कीरौ ॥ ४०६ ॥

हज्ज-कृजोः क्रमाद् हीर कीर इत्येतौ स्यातां भाव-कर्मणोः । हियते
हीरइ । श्रूयते सुवइ सुण्णीअइ सुणिज्जइ । गम्यते गम्मइ गमीअइ
गमिज्जइ ।

दुहिं-लिहिं-वहां दुब्भ-लिब्भ-वब्भाः ॥ ४०७ ॥

एषां क्रमेण द्व्यक्षरा आदेशाः स्युः भाव-कर्मणोः । उह्यते वब्भइ ।
दुह्यते दुब्भइ । लिह्यते लिब्भइ । ह्रयते हुवइ हुण्णीअइ हुणिज्जइ ।
क्रियते कीरइ । लूयते लुवइ लुण्णीअइ लुणिज्जइ । धूयते धुवइ
धुण्णीअइ धुणिज्जइ ।

ज्ञो णज्ज-णव्वौ वा ॥ ४०८ ॥

ज्ञाधातोः द्व्यक्षरावादेशौ वा स्यातां भाव-कर्मणोः । ज्ञायते णज्जइ
णव्वइ । पक्षे जाणीअइ जाणिज्जइ, मुणीअइ मुणिज्जइ ॥

ग्रहे दीर्घा वा ॥ ४०९ ॥

स्पष्टम् । गृह्यते गाहिज्जइ । पक्षे गेणिहज्जइ ।

॥ इति भावकर्मप्रकरणम् ॥ इति तिङन्तम् ॥

क्ते हुः ॥ ४१० ॥

भुवो हुरादेशः स्यात् क्ते । भूतं हुआं ।

क्ते तुरः ॥ ४११ ॥

त्वरतेः तुर इत्यादेशः स्यात् क्ते ।

क्ते ॥ ४१२ ॥

धातोरन्त्याकारस्य इः स्यात् क्ते । त्वरितं तुरिअं । पदितं फलिअं ।

क्तेन दिण्णादयः ॥ ४१३ ॥

दिण्ण इत्यादयः शब्दाः क्तेन सह निपात्यन्ते । दाअ दत्तं दिण्णं । रुदिअ रुदितं रुण्णं । त्रसी त्रस्तं हित्थं । दह भस्सीकरणे दग्धं डह्णं । रज्ज रक्तं रत्तं । दंश दष्टं डह्णं । रुधिर रुद्धं रुह्णं इत्यादयः ।

भुजादीनां क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः ॥ ११४ ॥

एषामन्तस्य लोपो वा स्यात् ।

क्त्व ऊणः ॥ ४१५ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य ऊण इत्यादेशः स्यात् । भुक्त्वा भोऊण । भोक्तुम् भोउं । भोक्तव्यम् भोअव्णं । विदित्वा वेऊण । वेत्तुम् वेउं । वेत्तव्यम् वेअव्णं । एवं रुदिअ ।

घे क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु ॥ ४१६ ॥

ग्रहेः घे इत्यादेशः स्याद् एषु परेषु । गृहीत्वा घेऊण । ग्रहीतुम् घेउं । ग्रहीतव्यम् घेअव्णं । कृत्वा काऊण । कर्त्तुम् काउं । कर्त्तव्यम् काअव्णं ।

तृन इरः शीले ॥ ४१७ ॥

शीलार्थे तृन इर इत्यादेशः स्यात् । गन्तुम् गमिरो, गमनशील इत्यर्थः ।

शतृ शानच् इत्येतयोः क्रमेण न्त माण इत्येतावादेशौ स्याताम्
भवन् हुवंतो । यजमानः जअमाणो ।

ईत् स्त्रियाम् ॥ ४१९ ॥

शतृ-शानचोः ईदादेशः स्याद् न्त-माणौ च । वदन्ती वदई । यज
माना जअमाणी । पक्षे वदन्ती जअमाणा ।

इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरवविरचिते
प्राकृतानन्दे द्वितीयः परिच्छेदः ।

*

॥ समाप्तः प्राकृतानन्दः ॥



[॥ संवत् १७२६ अश्विन सुदि १२ रविदिने लिखितं लाभपुरनग
रमध्ये शुभं भवतु । ॥ श्री ॥ ॥ छ ॥]

✽

परिशिष्टम्

प्राकृतशब्दानुक्रमणिका

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
अ			अट्ठि	अस्थि	२१७
अइ	अस्ति	३६६	अण्डुओ	अनड्वान्	२१७
ओ	असूः	२८६	अत्थि	अस्ति	३७०
अओ, अगवो	अग्नयः	१४०	अत्तो	आप्तः	३७
अगणा	अग्निना	१४१	अत्तो	आर्त्तः	११६
अगणो	अग्नीन्	१४०A	अद्धा, अद्दाणो	अध्वा	२४१
अगम्मि	अग्नौ	१४४	अप्पजू	आत्मयुक्	२४२
अग	अग्नि	१४०	अप्पणा	आत्मना	२४०
अगी	अग्निः	१३८	अप्पणो	आत्मनः	२४०
अगी	अग्नयः	१४०	अप्पणः	आत्मनः	२४०
अगीओ	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पा	आत्मनः	२४०
अगीयो			अप्पा	आत्मा	२४०
(अग्निस्स)	अग्नेः	१४४	अप्पादु, अप्पादो	आत्मनः	२४०
अगीणो	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पाणो	आत्मनः	२३६
अगीदु, अग्गीदो	अग्नेः	१४२	अप्पाणं	आत्मना	२४०
अगीवो	अग्नयः	१४०	अप्पाहि	आत्मनः	२४०
अगीहि	अग्नेः	१४२	अप्पेहि	आत्मभिः	२४०
अगीणं	अग्नीनाम्	१४४	अप्पं	आत्मानं	२४०
अगीसु	अग्नीषु	१४४	अप्पम्मि	आत्मनि	२४०
अगीसुत्तो			अप्पासुत्तो,		
अग्गीहिती	अग्निभ्यः	१४३	अप्पाहितो	आत्मभ्यः	२४०
अङ्गुली	अङ्गुरी	१७६	अप्पे	आत्मनि	२४०
अछ	अक्षि	२१७	अप्पेसु	आत्मसु	२४०
अछी	अक्षि	१८१	अम्हे	वयम्	२६७
अछेरं	अइच्चयं	१६६	अम्हे	अस्मान्	२६६
अणोति	अणोति	३६३	अम्हे	अस्माकम्	२७६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
अम्हेसुत्तो	अस्मत्	२७४
अम्हेहि	अस्माभिः	२७२
अम्हेहितो	अस्मत्	२७४
अम्हं	अस्माकम्	२७६
अम्हाणं	अस्माकम्	२७६
अमुए	अमी	२८२
अमुत्थ	अमुष्मिन्	२८२
अमुणां	अमुना	२८२
अमुणो	अमी	२८२
अमुणं	अमीषाम्	२८२
अमुष्मि	अमुष्मिन्	२८२
अमुस्स	अमुष्य	२८२
अमुस्सि	अमुष्मिन्	२८२
अमुं	अमुम्	२८२
अमुं	अदः	२८७
अमू	असौ	२८२
अमूहं	अमूनि	२८७
अमूओ	अमून्	२८२
अमूदिसा	असौ दिक्	२८६
अमूदु	अमुष्मात्	२८२
अमूदो	अमुष्मात्	२८२
अमूसु	अमीषु	२८२
अमूसुत्तो	अमीभ्यः	२८२
अमूहि	अमुष्मात्	२८२
अमूहि	अमीभिः	२८२
अमूहितो	अमीभ्यः	२८२
अरइ	इर्यत्ति	३७६
अवक्खइ	पश्यति	३६८
अवक्खीअ	दद्वष्ट	३६८
अवगाहो	अवगाहः	३१०
अवणओ	अपनयः	३१०
असइ	अश्नुते	३८८
असइ	अश्नाति	३६६
असन्ति	सन्ति	३७०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
अस्सि	अस्मिन्	२२
अह	असौ	२८
अह	अदः	२८
अहअं	अहम्	२६
अहम्मि	अहम्	२६
अहम्मि	माम्	२६
अहिआई	अभिजातिः	१७
अहिमज्जु	अभिमन्युः	१५
अहं	अहम्	२६
अहं	अहम्	२६
	आ	
आअदो	आगतः	६
आइदी	आकृतिः	१७
आउदी	आकृतिः	१७
आणा	आज्ञा	१७
आणालं	आलानं	२१
आमेलो	आपीडः	५
आवत्तो	आवर्त्तः	११
आसि	बभूव	३७
आसो, अस्सो	अदवः	४
अ हिआई.		
अहिआई	अभिजातिः	१७
	इ	
इच्छिओ	ईप्सितः	१२
इणमो	इदम्	२८
इणं	इदम्	२८
इदं	इदम्	२८
इमस्मि	इह	२२
इमस्स	अस्थ	२२
इमस्सि	अस्मिन्	२२
इमा	इमान्	२२
इमा	इयं	२८

तशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

एषां	२२७
अस्मात्	२२६
अस्मात्	२२६
एभ्यः	२२६
अस्मात्	२२६
एभ्यः	२२६
अनेन	२२६
इमे	२२६
अनेन	२२६
एषां	२२७
एषु	२२६
एभिः	२२६
अयं	२२६
इमं	२२६
ऋषिः	१४४
अङ्गारः	६०
इन्द्रः	१०४
इन्द्रः	१०४
उ	
उत्करः	४१
उक्षा	१६६
उत्क्षिप्त	११८
इक्षुः	१५०
उद्धमति	३६३
ऋतुः	१५०
उद्धखलम्	१८७
उत्पीतः	३७
उद्भवति	३३८
उपानत्	२८३
उद्वेक्षिते,	
उद्वेक्षित	३७६
उद्विजति	३८६
उद्विनक्ति	३६३
उद्वेष्टते	३४३
उत्सवः	१२६

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

उत्सुओ	उत्सुकः	१२६
उहे	उभौ	१३६
उंबरं	उदुम्बरम्	२०६
	ए	
एअ	एव	३१२
एआरहो	एकादशः	१०१
एअं	एवम्	३१२
एण्ह	इदानीं	२१५
एत्तो	एतस्मात्	२४६
एत्थ	एतस्मिन्	२४६
एतम्मि	एतस्मिन्	२४६
एतस्सि	एतस्मिन्	२४६
एता	एतान्	२४७
एते	एते	२४७
एतं	एतं	२४७
एदादु	एतस्मात्	२४६
एवादी	एतस्मात्	२४६
एवाहि	एतस्मात्	२४६
एविणा	एतेन	२४७
एदेण	एतेन	२४७
एदेहि	एतैः	२४७
एव	एतत्	२८७
एरावणो	ऐरावतः	८२
एरिसो	ईदृशः	५४
एव	एव	३१२
एवं	एवम्	३१२
एस	एषः	२४७
एसो	एषः	२४७
	ओ	
ओखलं	उद्धखलम्	१८७
ओगाहावेइ	अवगाहयति	४०२
ओगाहेइ	अवगाहयति	४०२
ओगाहो	अवगाहः	३१०
ओणओ	अपनयः	३१०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
ओवासइ	अवकासते	३५१
ओवासावेइ	अवकाशयति	४०२
ओवासेइ	अवकाशयति	४०२
ओवाहइ	अवगाहते	३५३
ओहलं	उलूहलम्	१८७A
अंकोलं	अंकोठं	२००
अंबं	आअं	२०८
अंसू	अश्रु	२१७
	क	
कइअवो	कंतवः	७१
कइआ	कदा	२२५
कउरवो	कौरवः	७४
कउसलो	कीदालः	७५
कच्छा	कक्षा	१६६
कज्जो	कार्यः	११२
कडइ	ववयति	३५८
कढोरं	कठोरं	१६६
कणहो	कृष्णः १०, १२०, १३३	
कणहं	कृष्णम्	२
कणहत्तणं	कृष्णस्वम्	३१३
कणहदा	कृष्णता	३१३
कतइ	कुत्तति	३६१
कत्तरी	कर्त्तरी	१८०
कत्तो	कस्मात्	२२१
कत्थ	कदा	२२५
कदो	कस्मात्	२२१
कम्भं (?)	करिष्यति (?)	३६५
कम्मि	कदा	२२५
कम्मो	कर्म	२४२
कमंधो	कबन्धः	८७
करइ	करोति	३६४
करइ	कृणाति	३६७
करावेइ	कारयति	४०२
करिसइ	कर्षति	३६८

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
कस्स	कस्य	२२
कस्सि	कस्मिन्	२२
कस्सि	कदा	२२
कसइ	कृषति	३८
कलुणं	करुणं	२०
कलंबो	कदम्बः	८
कहावणो	कार्षापणः	१२
कहिं	कस्मिन्	२२
कहिं	कदा	२२
का	कस्मात्	२२
काअव्यं	कर्त्तव्यम्	४१
काआ	का	२८
काइ	का	२८
काइं	कानि	२८
काउं	कर्त्तुम्	४१
काऊण	कुत्वा	४१
काए	का	२८
काडु	कस्मात्	२२
काणं	केषां	२२
कारेइ	कारयति	४०
कालाअसं	कालायसं	२१
कालासं	कालायसं	२१
कास	कस्य	२२
कासइ	कासते	३५
कासुत्तो	केभ्यः	२२
काहि	कस्मात्	२२
काहितो	केभ्यः	२२
काहीअ	करिष्यति (?)	३६
काहे	कदा	२२
काहं	कर्त्तरिम्	३६
किच्चा	कृत्या	१६
कित्ती	कीर्त्तिः	१७
किणइ	क्रीणाति	३६
किणावेइ	क्राययति	४०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

किरिआ	क्रिया	१७१
किलिट्	क्लिष्टं	२०८
किलित्तं	क्लिष्टं	१६१
किवा	कृपा	१६५
किसणो	कृष्णः (भगवति)	१३३
किसरा	कृशरा	१६५
किस्सा	कस्याः	२८५
किं	किम्	२८७
की	का	१७४, २८४
कीअ	कस्याः	२८५
कीआ	कस्याः	२८५
कीई	कस्याः	२८५
कीए	कस्याः	२८५
कीरइ	क्रियते	४०७
कीसे	कस्याः	२८५
कुक्खेअओ	कौक्षेयकः	७६
कुच्छी	कुक्षिः	१७६
कुणइ	करोति	३६४
कुणावेइ	कारयति	४०२
कुणइ	कारयति	४०२
के	के	२१६
केढवो	कैटभः	६०
केरिसो	कीदृशः	५४
केलासो	कैलासः	६६
केवट्टो	कैवर्त्तः	११५
केसि	केषां	२२३
केसु	केषु	२२५
को	कः	२१६
कोत्थुहो	कौस्तुभः	१०८
कोसलो	कौशलः	७५
कंबोट्टो	कमलं	२१५
	ख	

खगो खङ्ग. ३७

खण्ड ३६३

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

खमा	क्षमा	१६६
खमा	क्षमा	१७२
खहिइ	खादिता	३३६
खाइ	खादति	३३६
खाउ	खादतु	३३६
खाणू	स्थाणुः	१५१
खादीअ	अखादीत्	३३६
खादीअं	अखादीत्	३३६
खाहिइ	खादिष्यति	३३६
खाहीअ	अखाह	३३६
खिणइ	क्षिणोति	३६३
खुज्जो	कुब्जः	६३
खुप्पइ	मज्जति	३६०
खोडओ	स्फोटकः	१११
खंभो	स्तम्भः	११०
	ग	
गउरवं	गौरवं	१६७
गगरो	गद्गवः	८४
गच्छं	गन्तास्मि	३६८
गजावेइ	गाजयति	४०२
गड्डो	गर्त्तः	११७
गधइ	गृध्यति	३८५
गडिअणो	गर्भितः	८०
गडिअणं	गर्भितं	१६७
गम्मइ	गम्यते	४०६
गमइ	गच्छति	३६८
गमावेइ	गमयति	४०२
गमिज्जइ	गम्यते	४०६
गमिरो	गन्ता	४१७
गमोअइ	गम्यते	४०६
गरुअं	गुरु	२१७
गरुई	गुर्घी	१७६
गहवई	गृहपतिः	१४५, २१२
गगणइ	गगति	३६३

गामेइ	गमयाति	४०२
गारवं	गौरवं	१६७
गाहइ	गाहते	३५३
गाहिज्जइ	गृह्यते	४०६
गिट्ठी	गृष्टिः	१७५
गिरा	गीः	२८४
गुणवत्तो	गुणवान्	३१४
गेण्हइ	गृह्णाति	४००
गेण्हज्जइ	गृह्यते	४०६
गोरवं	गौरवं	१६७
गोला	गोदावरी	२१५

घ

घणइ	घृणोति	३६३
घणा	घृणा	१६५
घरं	गृहं	२१२
घेअवं	ग्रहीतव्यम्	४१६
घेऊण	गृहीत्वा	४१६
घेउं	ग्रहीतुम्	४१६
घोलइ	घूर्णति	३४८, ३६१
घोलए	घूर्णति	३४८
घोलेइ	घूर्णयति	४०२
घोलावेइ	घूर्णयति	४०२

च

चअइ	शक्नोति	३८८
चआवेइ	शक्नोति	४०२
चइत्तो	चेत्रः	७१२
चउत्थी	चतुर्थी	१७८
चउइही	चतुर्दशी	१७८
चउण्हं	चतुर्णां	२१८
चऊसु	चतुर्षु	२१८
चउसुत्तो	चतुर्भ्यः	२१८
चऊहिं	चतुर्भिः	२१८
चउहितो	चतुर्भ्यः	२१८

चत्तारि	चत्तरः
चत्तारो	चत्वारः
चत्तारो	चतुरः
चत्तारो	चत्तरः
चन्दिमा	चन्द्रिका
चम्मो	चर्म
चलभइ	चलति
चलइ	चलति
चलणो	चरणः
चल्लावेइ	चलयति
चलावेइ	चलयति
चल्लेइ	चलयति
चाउलिअं	चातुर्यं
चाएइ	शक्नोति
चालेइ	चलयति
चिणइ	चिनोति
चिण्णावेइ	चिनोति
चिण्णेइ	चिनोति
चितावेइ	चिन्तयति
चितेइ	चिन्त्यति
चिन्धं	चिह्नं
चिलादी	किरातः
चिहुरो	चिकुरः
चुरावेइ	चोरयति
चुरेइ	चोरयति
चोत्थी	चतुर्थी
चोइही	चतुर्दशी
चोरिअं	चौर्यं
	छ
छत्तवणो	सप्तपर्णः
छट्ठी	षष्ठी
छणो	क्षणः
छमा	क्षमा

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

छम्मुहो	षण्मुखः	६६
छायागामो	छायाग्रामः	१३१
छवग्रो	शावकः	६६
छाहा	छाया	१६८, १७४
छाहागामो	छायाग्रामः	१३१
छाही	छाया	१७४
छिदइ	छिनत्ति	३६३
छीरं	क्षीरं	२०४
छुढो	क्षुब्धः	११८
छुणा	क्षुणा	१६६
	ज	
जअमाणा	यजमाना	४१६
जअमाणी	यजमाना	४१६
जअमाणो	यजमानः	४१८
जउण	यमुना	१६६
जढरं	जठरं	१६६
जणो	यज्ञः	१२७
जण्ह	जह्नुः	१५०
जणइ	जायते	३८१
जम्मो	जन्म	२४२
जसो	यशः	२८२
जहिड्डिलो	युधिष्ठिरः	६०
जा	या	२८५
जा	या	२८५
जाउ	याः	२८५
जाइ	यस्याः	२८५
जाइं	यानि	२८७
जाए	यस्याः	२८५
जाओ	याः	२८५
जाणइ	जानाति	३६८
जाणिजइ	ज्ञायते	४०८
जाणीअइ	ज्ञायते	४०८
जामाआ	जामाता	१५५
जामाआरो	जामातारः	१५५
जिणइ	जयति	३५०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

जिणिजइ	जीयते	४०४
जिणीअ	जिगाय	३५०
जिणीअइ	जीयते	४०४
जिअर	जीयते	४०४
जिस्ता	यस्याः	२८५
जो	जा	१७५
जो	या	२८५
जोअ	यस्याः	२८५
जोआ	ज्या	१७३
जोआ	यस्याः	२८५
जोइ	यस्याः	२८५
जोए	यस्याः	२८५
जोसे	यस्याः	२८५
जोहा	जिह्वा	१६५
जुउच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुगुच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुजअइ	युध्यते	३८३
जुवा, जुवाणो	युवा	२४१
जो	यः	२४६
जोगो	योग्यः	४०
जोवणं	यौवनम्	१६६
जं	यत्	२८७
जंपइ	जल्पति	३४७
जंवावेइ	जल्पयति	४०२
जंपेइ	जल्पयति	४०२
जंभाअइ	जृम्भते	३४६
जंभाअहिइ	जृम्भिता	३४६
जंभाअहिए	जृम्भिता	३४६
जंभाअए	जृम्भते	३४६
जंभाएइ	जृम्भते	३४६
जंभाएए	जृम्भते	३४६
जंभाएहिए	जृम्भिता	३४६
जंभाएहिइ	जृम्भिता	३४६
	भ	
भाअउ	ध्यायतु	३६१
भाअइ	ध्यायति	३६१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्
भाग्रहिइ	ध्याता	३६१	णाराग्रणा	नारायणात्
भाइ	ध्यायति	३६१	णाराग्रणावु	नारायणात्
भाइअं	दध्यौ	३६१	णाराग्रणादो	नारायणात्
भाइअं	अध्यासीत्	३६१	णाराग्रणाणं	नारायणेभ्यः
भाइअं	अध्यासीत्	३६१	णाराग्रणाणं	नारायणात्
भाउ	ध्यायतु	३६१	णाराग्रणासुत्तो	नारायणेभ्यः
भाहीअ	दध्यौ	३६१	णाराग्रणाहि	नारायणात्
भाहिइ	ध्याता	३६१	णाराग्रणाहितो	नागायणेभ्यः
भिरुजइ	क्षयति	३४०	णाराग्रणे	नारायणात्
भिरुजए	क्षयति	३४०	णाराग्रणे	नारायणौ
भूरवेइ	क्रुध्यति	४०२	णारायणे	नारायणे
भूरइ	क्रुध्यति	३८५	णाराग्रणेण	नारायणेन
भूरैइ	क्रुध्यति	४०२	णाराग्रणेसु	नारायणेषु
	ठ		णाराग्रणेहि	नारायणैः
ठाअइ	तिष्ठति	३६२	णाराग्रणो	नारायणः
ठाइ	तिष्ठति	३६३	णाहलो	लाहलः
	ड		णांगलो	लाङ्गलः
डहुं	दष्टं	४१३	णिअक्कइ	पश्यति
डहुं	दधं	४१३	णिअक्क [क्की?]अ	दष्ट
डसणो	दशनः	६४	णिडालं	ललाटं
डोला	दोला	१६८	णिदालू	निद्रावान्
डंडो	दण्डः	६४	णिण्फंदो	निस्पन्दः
	ण		णिम्माणइ	निभिमीते
ण्हाओ	स्नातः	११६	णिवत्तो	निवर्त्तः
णइसोत्तो	नदीस्रोतः	१	णिसढो	निषधः
णक्चइ	नृत्यति	३७६	णिस्तासो	निःश्वासः
णक्चावेइ	नर्त्तयति	४०२	णिसा	निशा
णक्चेइ	नर्त्तयति	४०२	णिहिओ	निहितः
णक्जइ	ज्ञायते	४०८	णिहितो	निहितः
णक्वइ	ज्ञायते	४०८	णिहसो	निकषः
णाराग्रणम्मि	नारायणे	१४, २३	णीसासो	निःश्वासः
णाराग्रणस्स	नारायणाय	१६	णे	अस्मान्
णाराग्रणस्स	नारायणस्य	१४, २१	णेउरं	नूरं
णाराग्रणा	नारायणाः	१४	णेहा	निद्रा

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
णेहो	स्नेहः	३८	तारेड	शक्नोति	४०२
णोभलिआ	नवफलिका	१६४	तालवेण्ठअं	तालवृन्तकं	२०७
णोमल्लिआ	नवमल्लिका	१६४	तास	तस्य	२४४
णोल्लइ	नुदति	३८६	तासुत्तो	तेभ्यः	२४४
णोहलो	वोहवः	८३, ६७	ताहि	तस्मात्	२४४
त्थ	स्थ	३७१	तिण्हं	तीक्ष्णं	२०४
तइ	त्वया	२५५	तिण्णि	अयः	१४६
तइ	त्वयि	२६३	तो	ता	१७४
तइआ	तदा	२४६	तोण्हं	अयाणाम्	१५०
तइणा	तेन	२४३	तीरइ	शक्नोति	३८८
तइत्तो	स्वत्	२५६	तीरावेइ	शक्नोति	४०२
तए	त्वया	२५५	तीरेइ	शक्नोती	४०२
तए	त्वयि	२६३	तीसु	त्रिषु	१५०
तओ	तस्मात्	२४४	तीसुत्तो	त्रिभ्यः	१५०
तण्णइ	तनोति	३६३	तीहिं	त्रिभिः	१५०
तण्णइ	तृणोति	३६३	तीहिंतो	त्रिभ्यः	१५०
तणुई	तन्वी	१८१	तुअइ	तुवति	३८८
तत्थ	तस्मिन्	२४६	तुए	त्वया	२५५
तत्तो	स्वत्	२५६	तुए	त्वयि	२६३
तत्तो	तस्मात्	२४४	तुज्भ	तव	२६१
तदो	तस्मात्	२४४	तुज्भाणं	युष्माकम्	२६२
तम्मि	तस्मिन्	२४६	तुज्भे	भूयम्,	२५२
तरइ	शक्नोति	३८८	तुज्भेसु	युष्मान्	२५४
तरावेइ	शक्नोति	४०२	तुज्भेहिं	युष्मासु	२६४
तलवेण्ठअं	तालवृन्तकं	२०७	तुण्हओ	युष्माभिः	२५८
तवो	तवः	२८२	तुण्हकओ	तूष्णीकः	१३२
तस्स	तस्य	२४५	तुण्हकओ	तूष्णीकः	१३२
तस्सि	तस्मिन्	२४६	तुण्भ	तव	२६१
तहिं	तस्मिन्	२४६	तुण्भेहिं	युष्माभिः	२५८
तहे	तदा	२४६	तुण्ह	तव	२६१
ता	तान्	२४३	तुण्हणं	युष्माकम्	२६२
ताइं	तानि	२८७	तुण्हसुत्तो	युष्मत्	२६०
ताणं	तेषां	२४६	तुण्हहिंतो	युष्मत्	२६०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

तुम्हेसु	युष्मासु	२६४
तुम्हेहि	युष्माभिः	२५८
तुमए	त्वया	२५५
तुमए	त्वयि	२६२
तुमम्म	त्वयि	२६३
तुमावु	त्वत्	२५६
तुमावो	त्वत्	२५६
तुमाहि	त्वत्	२५६
तुमो	तव	२६१
तुमं	त्वाम्	२५३
तुमं	त्वं	२५१
तुरिअं	त्वरितं	४१२
तुवरावेइ	त्वरयति	४०२
तुवरेइ	त्वरयति	४०२
तुह	तव	२६१
तुरं	तूयं	१६६
तूसइ	तुष्यति	३८४
ते	ते	२४३
तेण	तेन	२४३
तेरहो	त्रयोदशः	१०१
तेलोवकं	त्रैलोक्यं	१६१
तेसु	तेषु	२४६
तेसि	तेषां	२४६
तेहि	तैः	२४३
त्तं	त्वाम्	२५३
तं	तम्	२४३
तं	त्वं	२५१
तंबो	स्तम्बः	१०६
तवं	ताम्	२०८
	थ	
थाणू	स्थाणुः (हरवाचके)	१५१
थिम्पइ	तृपति	३६१
	द	
दथो	दतः	१०४

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
वइवं	देवं	१६
वच्छिहिइ	वृष्टा	३६
दसमुहो	दशमुखः	१०
दसरहो	दशरथः	१०
वहमहो	दशमुखः	१०
दहरहो	दशरथः	१०
दाइ	वदाति	३७
दाडिमं	वाडिमं	१६
वालिसं	वाडिमं	१६
दाहं	वाताहिम	३७
दिअरो	देवरः	६
दिअसो	दिवसः	१०
दिअहो	दिवसः	१०
दिअ	द्यौः	२८
दिट्टी	वृष्टिः	१७
दिण्णं	वत्तं	४१
दिछी	दुहिता	२१
दिवइ	दीव्यति	३७
दिसा	दिक्	२८
दुअत्तं	दूकूलं	१८
दुऊलं	दूकूलं	१८
दुओ	दुतः	१०
दुक्खिओ	दुःखितः	१३
दुग्भइ	दुह्यते	४०
दुवे	द्यौ	१४
दुहिओ	दुःखितः	१३
दूमइ	दूयते	३८
दूमए	दूयते	३८
दूमेइ	दूयते	३८
दूमेए	दूयते	३८
दूसइ	दुष्यति	३८
देअरो	देवरः	६
देव्वं	देवं	१६
दोइ	द्यति	३८
दोओ	दोषः	१०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

दोसु	द्वयोः	१४८
दोसुत्तो	द्वाभ्याम्	१४७
दोहि	द्वाभ्याम्	१४७
दोहितो	द्वाभ्याम्	१४७
	ध	
धणमोहरइ	धनमाहरति	३
धणालो	धनवान्	३१४
धणं	धनम्	२१२
धसइ	धृणोति	३८८
धाइ	धावति, धावते	३५०
धाउ	धावतां, धावतु	३५०
धाहिइ	धाविता	३५०
धाहीअ	दधावे, दधाव	३५०
धीरं	धैर्यं	१६६
धुणइ	धुनाति	३६७
धुणिज्जइ	धूयते	४०७
धुणीअइ	धूयते	४०७
धुत्तो	धूर्त्तः	११६
धुरा	धूः	२८४
धुवइ	धूयते	४०७
	न	
नई	नवी	१८१
नाराअणं	नारायणं	१५
	प	
प्रतिभवइ	प्रतिभवति	३३८
पअट्ठो	प्रकोष्ठः	७२
पई	पति	१५०
पईअ	जघ्नो	३६२
पउरो	पौरः	७४
पच्छत्तो	पाश्चात्यः	१२५
पच्छिमा	पश्चिमा	१६६
पज्जुणो	प्रजुम्नः	१२७
पट्ठणं	पत्तनं	२०४
पडइ	पतति	३५७
पडाआ	पताका	१६७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

पडिभवइ	प्रतिभवति	३३८
पडिसरो	प्रतिसरः	३३
पढमो	प्रथमः	६२
पण्हा	प्रश्नः	१५६
पण्ही	प्रश्नः	१७४
पण्ही	प्रश्नः	१२०
पविषत्ती	प्रतिपत्ति	१७५
पभवइ	प्रभवति	३३८
पभवए	प्रभवति	३३८
पभवेइ	प्रभवति	३३८
पभवेए	प्रभवति	३३७
पमिल्लइ	प्रमीलति	३४६
पमिल्लए	प्रमीलति	३४६
पमिल्लावइ	प्रमीलयति	४०२
पमिल्लेइ	प्रमीलति,	३४६
	प्रमीलयति	४०२
पमीलइ	प्रमीलति	३४६
पमीलए	प्रमीलति	३४६
पमीलेइ	प्रमीलति	३४६
पमीलेए	प्रमीलति	३४६
पमील्लेए	प्रमीलति	३४६
परइ	पिपति	३७६
परइ	प्रियते	३६१
परइ	पुणाति	३६७
पल्हावो	प्रह्लावः	१०८
पल्लत्थं	पर्यस्तं	२०३
पल्लाणं	पर्याणं	२०३
पवठ्ठो	प्रकोष्ठः	७२
पाअइ	जिघ्रति	३६२
पाइ	जिघ्रति	३६२
पाइअं	जघ्नो	३६२
पाउसो	प्रावट्	२८०
पारावेइ	पारयति	४०२
पारेइ	पारयति	४०२
पालइ	पद्यते	३८२

पाहीअ	जघ्नो	१६२
पिअरौ	पितरः	२५५
पिअ	पिता	१५५
पिअो त्ति हसइ	प्रिय इति हसति	३१२
पिक्को	पववः	३५
पिसइ	पिशति	३६१
पीअलं	पीतं	३१५
पीअं	पीतं	२१२, ३१५
पुट्टी	पृष्ठं	१८१
पुट्ठं	पुष्टं	२१५
पुत्फं	पुष्पं	२०६
पुरिसो	पुरुषः	६४
पुलअइ	पद्यति	३६८
पुलईअ	ब्रह्म	३६८
पुसो	पुण्यः	१३२
पुहवी	पृथिवी	१७८
पूसइ	पुष्पाति	३६६
पूसो	पुण्यः	१३२
पेरंतं	पर्यंतं	१६६
पोक्खरो	पुष्करः	५५
पोस्थअो	पुस्तकः	५७
पोत्तो	पौत्रः	७३
	फ	
फहसं	परषः	६३
फलावेइ	पाटयति	४०२
फलअं	यदितं	४१२
फलहा	परिखा	१६८
फलहो	परिघः	६३
फलहो	स्फटिकः	७८
फालेइ	पाटयति	४०२
फुट्टइ	स्फोटते	३४४
फुटइ	स्पन्दः	१२२
फदो	ब	
अह्मा,		
अह्माणो	अह्मा	२४१

बाफो	बाष्पः (ऊष्मा)	१२३
बारहो	द्वादशः	१०१
बाहो	बाष्पः (अश्रुणि)	१२३
बीहइ	बिभेति	३७६
बुज्झइ	बुध्यते	३८२
बुजइ	मज्जति	३६०
बोरं	बवरं	१८६
बंधइ	बध्नाति	३६८
	भ	
भअप्पई	बृहस्पतिः	१४५
भइरवो	भरवः	७१
भखावेइ	भक्षयति	४०२
भत्तारम्मि	भर्त्तरि	१५३
भत्तारस्स	भर्तुः	१५३
भत्तारा	भर्त्तरिः	१५३
भत्ताराणं	भर्तृणां	१५३
भत्तारेण	भर्ता	१५३
भत्तारेणु	भर्तृषु	१५३
भत्तारेहि	भर्तृभिः	१५३
भत्तारो	भर्ता	१५२
भत्तुणा	भर्त्रा	१५३
भत्तुणो	भर्तृन्	१५३
भत्तुस्स	भर्तुः	१५३
भत्तुसु	भर्तृषु	१५३
भत्तूअो	भर्त्तरिः	१५३
भत्तो	भक्तः	३६
भरइ	स्मरति	३६४
भरइ	बिभेति	३७६
भरहो	भरतः	८१
भरावेइ	स्मारयति	४०२
भाअरो	आतारः	१५५
भाइ	बिभेति	३७६
भाअो	आता	१५५
भाखेइ	भक्षयति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भारेइ	स्मारयति	४०२	ममादो	मत्	२७३
भिसिणी	विसिनी	१८०	ममाहि	मत्	२७३
भिंगारो	भृङ्गारो	४८	ममं	माम्	२६८
भिंगो	भृङ्गः	४८	मरइ	अभियते	३६१
भिडिवालो	भिन्दिपालः	१२८	मरइ	भृणाति	३६७
भिदइ	भिनक्ति	३६३	मरिसइ	मर्षति	३५४
भे	युष्माकम्	२६२	मलइ	मृद्वनाति	३६६
भोग्रव्वं	भोक्तव्यं	४१५	मलिणं	मलिनं	२११
भोजं	भोक्तुं	४१५	मसाणं	इमशानं	२०१
भोज्जण	भुक्त्वा	४१५	मह	मम	२७५
	म		महुअं	मधुकं	१८८
भ्हि	प्रस्मि	३७२	महुं	मधु	२१७
भ्हु	म्ह	३७२	माआ	माता	१८२
भ्हो	स्मः	३७२	माइ	मिमोते	३७७
मइ	मयि	२७७	माणइत्तो	मानवान्	३१४
मइ	मया	२७१	माला	माला	१६३
मइत्तो	मत्	२७३	मालाइल्लो	मालावान्	३१४
मइलं	मलिनं	२११	मांसं	मांसं	६४
मऊरो	मयूरः	४२	मिश्रंको	मृगाङ्कः	४८
मऊहो	मयूखः	४२	मिच्छा	मिथ्या	१६६
मए	मया	२७१	मुइङ्गो	मृदङ्गः	२६
मए	मयि	२७७	मुच्छा	मृच्छा	१६६
मच्छिआ	मक्षिका	१६६	मुञ्जाअणो	मौञ्जायनः	७६
मज्झ	मम	२७५	मुणइ	जानाति	३६८
मज्झणो	मध्याह्न	१०७	मुणिज्जइ	ज्ञायते	४०८
मज्झणो	अस्माकम्	२७६	मुणीअइ	ज्ञायते	४०८
मण्णइ	मनोति	३६३	मुत्तो	मूर्तिः	१७६
मणंसिणि	मनस्विनीम्	१७७	मुढो	मुरधः	३७
मणंसिणी	मनस्विनी	१७६	मुहलो	मुखरः	६०
मत्तो	मत्	२७३	मे	मया	२७०
मद्ध	मम	२७५	मे	मम	२७५
मम	मम	२७५	मोत्ता	मुक्ता	१६५
ममस्मि	मयि	२७७	मोरो	मयूरः	४२
मयाह	मया	२७१	मोरो	मयूरः	४२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
मंसू	इमश्रुः	२१७
मंसं	मांसं	६
	र	
रअणं	रत्नम्	२०८
रअणम्	रत्नमुट्	२८०
रच्छा	रक्षा	१६६
रत्तं	रक्तं	४१३
रण्णा	राज्ञा	२३६
रण्णाइं	अरण्यानि	१८५
रण्णेण	अरण्येन	१८५
रण्णो	राज्ञः	२३७
रण्णं	अरण्यं	१८४
रमणिज्जा	रमणीया	१६८
रमणिज्जो	रमणीयः	८६
रम्मइ	रम्यते	४०५
रमिज्जइ	रम्यते	४०५
रमीअइ	रम्यते	४०५
राअमि	रागे	२६
राअम्मि	राज्ञि	२३८
राअस्त	रागाय,	
	रागस्य	२६
राआ	राजा	२३०
राआ	राज्ञः	२३७
राआ	रागाः	२६
	रागान्	२६
	रागात्	२६
राआणो	राज्ञः	२३४
	राजानः	२३२
राआणं	राज्ञां	२३८
राआणं	रागेभ्यः,	२६
	रागाणाम्	२६
राआडु	रागान्	२६
राआडु	राज्ञः	२३७
राआदो	रागात्	२६
राआदो	राज्ञः	२३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
राआसुत्तो	रागेभ्यः	२६
राआसुतो	राजभ्यः	२३७
राआहि	रागात्	२६
राआहि	राज्ञः	२३७
राआहितो	रागेभ्यः	२६
राआहितो	राजभ्यः	२३७
राइणा	राज्ञा	२३७
राइणो	राज्ञः	२३७
राए	रागान्,	२६
	रागाः,	२६
	रागे	२६
राए	राज्ञः,	२३४
	राज्ञि	२३८
राएण	रागेण	२६
राएसु	रागेषु	२६
राएसु	राजसु	२३८
राएहिं	रागैः	२६
राएहिं	राजभिः	२३७
राओ	रागः	२६
राओ	राजानं	२३३
राओ	रागम्	२६
रामो	रामः	१
राहा	राधा	१६८
रिच्छो	ऋक्षः	११८
रिणं	ऋणं	१६०
रिद्धो	ऋद्धः	६५
रुक्खो	वृक्षः	६७
रुच्छं	रुद्धिष्यामि	३७५
रुड्डं	रुद्धं	४१३
रुणं	रुदितं	४१३
रुप्पिणी	रुक्मिणी	१८१
रुम्भावेइ	रुन्धयति	४०२
रुम्भेइ	रुन्धयति	३०२
रुम्मइ	रुणद्धि	३८२
रुवइ	रोदिति	३७५
रुवावेइ	रोयवति	४०२

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

रुवेइ	रोयदति	४०२
रुंधइ	रुणद्धि	३६२
रुंधावेइ	रुन्धयति	४०२
रुंधेइ	रुन्धयति	४०२
रुसइ	रुषयति	३८५
रुसावेइ	रोषयति	४०२
रुसेइ	रोषयति	४०२
	ल	
लखावेइ	लक्षयति	४०२
लच्छी	लक्ष्मी	१८०
लट्टी	यष्टिः	१७६
लडालं	ललाटं	२१५
लहुई	लक्ष्मी	१८१
लाखेइ	लक्षयति	४०२
लिच्छा	लिप्सा	१६६
लिम्भइ	लिह्यते	४०७
लुद्धाओ	लुब्धकः	५७
लुण्णइ	लुनाति	३६७
लुणिज्जइ	लूयते	४०७
लुणीअइ	लूयते	४०७
लुब्बइ	लूयते	४०७
लोणइ	लुदति	३८६
लोद्धाओ	लुब्धकः	५७

व

वअइ	वक्ति	३७०
वइवेसो	वंदेशः	७१
वइदेहो	वंदेहः	७१
वइरं	वंरं	१६१
वइसाहो	वंशाखः	७१
वइसिओ	वंशिकः	७१
वइसंपाअणो	वंशस्पायनः	७१

वच्चइ	व्रजति	३४१
वच्चए	व्रजति	३४१

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

वच्चेइ	व्रजति	३४१
वच्छो	वृक्ष,	६७
	घत्सः	१२५
वज्जइ	व्रस्यति	३८०
वज्जावेइ	व्रासयति	४०२
वज्जेइ	व्रासयति	४०२
वड्हावेइ	वद्धयति	४०२
वड्हेइ	वद्धयति	४०२
वण्णइ	वनोति	३६३
वत्ता	वार्त्ता	१६६
वत्तिआ	वत्तिका	१६६
वदई	वदन्ती	४१६
वड्भइ	उह्यते	४०७
वम्महो	मन्मथः	६६
वरइ	वृणीते	३६८
वरिसइ	वर्षति	३५४
वरिसावेइ	वर्षयति	४०२
वरिसेइ	वर्षयति	४०२
वसही	वसतिः	१७५
वसिट्ठो	वसिष्ठः	३७
वहू	वधू	१८१
वाअइ	स्लायति	३५६
वाआ	वाक्	२८५
वाइ	स्लायति	३५६
वारि	वारि	२१६
वारीइ	वारीणि	२१६
विअइ	विनक्ति	३६३
विअड्डी	वितर्दिः	१७६
विअणा	वेदना	१६५
विआरुल्लं	विकारवत्	३१४
विइच्छा	विवरसा	१६६
विक्किणइ	विक्रीणाति	३६७
विक्केइ	विक्रीणाति	३६७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

विज्जुली	विद्युत्	३१५
विज्जू	विद्युत्	२८६, ३१५
विज्जुप्रो	वृश्चिकः	४८
विडवो	विटपः	८८
वितिण्हो	वितृणः	४६
विम्ह्यो	विस्मयः	११६
विलग्नतो	वलपन्	३११
विसइ	प्रसते	३५२
विस्सवो	विश्वपाः	१३७
विसावेइ	प्रासयति	४०२
विस्सामो	विश्रामः	१३२
विसुरइ	वित्तित्ति	३६३
	विवति	३६१
विसेइ	प्रासयति	४०२
विस्सो	विश्वः	१३६
विहलो	विह्वलः	१२६
विभलो	विह्वलः	१२६
वीरिअं	वीर्यं	२०२
वीलइ	वीडयति	३८०
वीलावेइ	वीडयति	४०२
वीलेइ	वीडयति	४०२
वीसामो	विश्रामः	१३२
वुंदावणं	वृन्दावनं	१६०
वेप्रइ	वेद	३७०
वेअइ	वेत्ति	३७०
वेअणा	वेदना	१६५
वेअव्वं	वेत्तव्यम्	४१५
वेउं	वेत्तं	४१५
वेऊण	विदित्त्वा	४१५
वेच्छं	वेत्स्यामि	३७०
वेठइ	वेष्टते	३४२
वेठए	वेष्टते	३४२
वेठेइ	वेष्टते	३४२
वेठेए	वेष्टते	३४२
वेण्ह	विष्णुः	१५०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

वेण्हो	विश्वः	१२१
वल्ली	वल्ली	१७७
वेवमाना	वेपमाना	१७४
वेवमाणो	वेपमाना	१७४
वो	युष्मान्	२५४
वो	युष्माकम्	२६२
वोच्छं	वक्ष्यामि	३७०
वंकं	वक्रं	५
वंचिअो	वञ्चितः	४
वंदं	वन्दं	२१३
	स	
सअइ	सृजति	३६१
सअढो	शकटं	८६
सइरं	स्वरं	१६१
सक्कइ	शक्नोति	३८७
सक्केइ	शक्नोति	४०२
सक्को	शक्नः	१०
सगमो	सद्गमः	३७
सच्चा	सत्या	१६६
सज्जइ	सृज्यते	३८३
सठावेइ	शाठयति	४०२
सडइ	शीयते	३५७
सढा	सटा	१६८
सण्णइ	सनोति	३६३
सण्हं	इलक्षणं	२०४
सणेहो	स्नेहः	३८
सत्तमी	सप्तमी	१८०
सत्थि	सविथ	२१७
सद्धइ	श्रद्धधाति	३७८
सफं	शफं	२०६
सभरी	शफरी	१७६
सभलो	सफलः	६१
सभलं	सफलं	२००
समिद्धी	समृद्धिः	१७४
समिद्धीआ,		
समिद्धीए	समवध्या	१४२

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

सरइ	सरति	३६५
सरइ	संसति	३७६
सरइ	शृणाति	३६०
सरावेइ	सारयति	४०२
सरिच्छो	सदृशः	११८
सरो	सरः	२८२
सलाहा	इलाघा	१७२
सवहो	शपथः	८५
सवज्जो	सर्वज्ञः	१०५
सवस्स	सर्वस्य, सर्वस्मै	१३५
सव्वसि, सव्व-		
स्मि, सवत्थ	सर्वस्मिन्	१३६
सव्वा	सर्वान्, सर्वस्मात्	१३५
सव्वाणं	सर्वेषाम्, सर्वेभ्यः	१३५
सव्वावु		
सव्वादो		
सव्वाहि	सर्वस्मात्	१३५
सव्वामुत्तो		
सव्वाहिंतो	सर्वेभ्यः	१३५
सव्वे	सर्वे	१३५
सव्वेण	सर्वेण	१३५
सव्वेसु	सर्वेषु	१३६
सव्वेहि	सर्वैः	१३५
सव्वो	सर्वः	१३४
सव्वं	सर्वं	१३५
सहमाणा,		
सहमाणी	सहमाना	१७४
सहा	सभा	१६८
सहिणो	सखीन्	१५०
सहिं	सखायम्	१५०
सही	सखा	१५०
सहीओ,		
सहीणो	सखायः	१५०
साठेइ	शाठयति	४०२
सारेइ	सारयति	४०२

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

साला	शाला	१७३
सि	असि	३७१
सिआलो	शृगालः	४६
सिठ्ठी	सृष्टिः	१७५
सिठिलो	स्थितिलः	६२
सिरी	श्रीः	१८१
सिदिणो	स्वप्नः	३२
सि	तेषां	२४६
सिंगारो	शृंगारः	४८
सिधवं	सन्धवं	१६४
सीभरो	सीकरः	७६
सीहो	सिंहः	५०
सुअइ	सुनोति	३८५
सुइदी	सुकृतिः	१७५
सुज्जो	सूर्यः	१५१, ११४
सुणइ	शृणोति	३६५
सुणइ	शृणोतु	३६७
सुणावेइ	श्रावयति	४०२
सुणिअं	शुश्राव	३६५
सुणिज्जइ	श्रूयते	४०६
सुणीअ	शुश्राव	३६५
सुणीअइ	श्रूयते	४०६
सुण्णेइ	श्रावयति	४०२
सुणमु	शृणोमि	३६७
सुणमो	शृणमः	३६७
सुणसु	शृणु	३६
सुणह	शृणुत	३६७
सुणंतु	शृण्वन्तु	३६७
सुप्पणहा	सूर्पनखा	१७४
सुप्पणही		
सुमरइ	स्मरति	३६४
सुमरावेइ	स्मरयति	४०२
सुमरेइ		
सुव्वइ	श्रूयते	४०६
सुहं	सुखं	२००

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सुंडो	शीण्डः	७६
सुंदेरं	सौन्दर्यं	१६६
सूइ	सूयते	३८७
सूरो	सूर्यः	११४
सूसइ	शुष्यति	३८४
सूसावेइ	शुष्यति	४०२
सूसेइ		
से	तस्य	२४५
सेजस	शय्यायाः	१६२
सेजजा	शय्याः	१५७
	शय्यायाः	१६१
सेजजाइ	शय्यायाः	१६२
सेजजाइ	शय्याया	१६१
सेजजाइ	शय्यायाम्	१६२
सेजजाए	शय्याया	१६१
	शय्यायाः	१६२
	शय्यायाम्	१६२
सेजजाउ	शय्याः	१५७
		१५६
	शय्यायाः	१६२
सेजजाओ	शय्याः	१५७
		१५६
	शय्यायाः	१६२
सेजजाणं	शय्यायाम्	१६२
सेजजाडु		
सेजजादो	शय्यायाः	१६१
सेजजाहि		
सेजजासु	शय्यासु	१६२
सेजजासुत्तो	शय्याभ्यः	११६
सेजजाहिंता		
सेजजाहि	शय्याभिः	१६१
सेजजं	शय्याम्	१५८
सेज्या	शय्या	१५६
सेतं	शैत्यं	१६१
सेलो	शैलः	६६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सेव्वा	सेवा	१७०
मेवा		
सो	सः	२४३
सोअमत्तं	सौकुमार्यं	२०३
सोइ	इयति	८१
सोच्छइ	श्रोता	३६६
सोच्छए	"	"
सोच्छहिइ	"	"
सोच्छहिए	"	"
सोच्छइ	"	"
सोच्छिए	"	"
सोच्छहिइ	"	"
सोच्छहिए	"	"
सोच्छेइ	"	"
सोच्छेए	"	"
सोच्छेहिइ	"	"
सोच्छेहिए	"	"
सोच्छहिंति	श्रोतारः	३६६
सोच्छति	"	"
सोच्छिंति	"	"
सोच्छति	"	"
सोच्छति	"	"
सोच्छसि	श्रोतासि	३६६
सोच्छसे	"	"
सोच्छहिसि	"	"
सोच्छहिसे	"	"
सोच्छिसि	"	"
सोच्छसे	"	"
सोच्छहिसि	"	"
सोच्छहिसे	"	"
सोच्छेसि	"	"
सोच्छेसे	"	"
सोच्छेहिसि	"	"
सोच्छेहिसे	"	"
सोच्छइत्य	श्रोण्यथ ३६६, ३६७	"

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हरिसइ	हर्षति	३५४
हंलद्रा	हरिद्रा	१६५
हलद्दा(द्रा)	हरिद्रा	१७४
हलद्दा	हरिद्रा	१६५
हलद्दी	हरिद्रा	१७४
हलिओ	हालिकः	४५
हविधानं	बभूव	३३२
हस्तइ	हस्यते	४०५
हसिज्जइ	हस्यते	४०३
हसिअइ	हस्यते	४०५
हलिओ	हालिकः	४५
हिअयं	हृदयं	१६०
हिथं	अस्तं	४१३
हिरी	ह्रीः	१८१
हीरइ	ह्रियते	४०६
हुअं	भूतं	४१०
हुणइ	जुहोति	३७५
हुणिज्जइ	ह्रयते	४०७
हुणीअइ	ह्रयते	४०७
हुवइ	ह्रयते	४०७
हुव्वंतो	भवन्	४१८
हुवइ	भवति	३१६
हुवइत्थ	भविष्यथ	३३७
हुवइत्था	भवथ, भवथः	३२४
हुवउ	भवतु	३३७
	बभूव	३३१
हुवए	भवति	३१६
हुवज्ज	भवति	३२२
	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
हुवज्जा	भवति	३२२
हुवज्जा	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
हुवम	भवामः	३२७
	भवामः	३२७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवमि	भवामि	३२७
हुवमु	बभूव	३३१
	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
	भविष्यामि	३३६
	भवानि	३३३
हुवमो	भविष्यामः	३३६
	भवाम	३२७
	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
	बभूविस	३३१
हुवस्साम	भविष्यामः	३३६
हुवस्सामि	भविष्यामि	३३६-३३७
हुवस्सामु	भविष्यामः	३३६
हुवस्सामो	भविष्यामः	३३६
हुवसि	भवसि	३२७
हुवसु	बभूविस	३३१
	भवितासि	३३६
	भव	३३३
हुवसे	भवसि	३२७
हुवस्सं	भविष्यामि	३३६
हुवह	बभूव	३३१
	भवथः	३२७
	भवथा	३२७
	भवत	३३३
	भवितास्थ	३३६
हुवहाम	भविष्यामः	३३६
हुवहामि	भविष्यामि	३३६
	भव	३३३
हुवहामु	भविष्यामः	३३६
हुवहामो	भविष्यामः	३३६
हुवहिइ	भविता	३३६
हुवहिए	भविष्यति	३३६
हुवहिस्था	भविष्यामः	३३६
हुवहिस्था	भविष्यामः	३३६

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

हुवहिम	भविष्यामः	३३७
हुवहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवहिय	भविष्यति	३३७
हुवहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	
हुवहिति	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवहिसे	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवहिति	भवितारः	३३४
	भविष्यन्ति	३३७
हुवहिह	भविष्यथ	३३७
	भवितास्थ	३३४
हुवाम	भवामः	३२७
	भवावः	
हुवामि	भवामि	३२६
हुवामु	भविष्यामि	३३६
	भवानि	३३७
	भवामः	
	भवावः	३२७
हुवामो	भवामः	३२६
	भवावः	३२७
	भवाम	३२७
	भविष्यामः	३३७
हुवावेह	भावयति	४०२
हुवाहाम	भविष्यामः	३३७
हुवाहामि	भविष्यामि	३३७
		३३६
हुवाहामु	भविष्यामः	३३७
हुवाहामो	भविष्यामः	३३७
हुवाविश्या	भविष्यामः	३३७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

हुवाहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवाहिमु	भविष्याम	३३७
हुवाहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवाहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुविअं	अभूत्	३३७
	बभूव	३२६
हुविज्जइ	भूयते	४०३
हुविस्था	भविष्यथ	३३७
हुविस्था	भावथाः, भवथ	३२४
हुविम	भवामः, भवावः	३२७
हुविमु		
हुविमो	भविष्यामः भवाम	३३७
	भवामः, भवावः	३२७
हुविस्साम	भविष्यामः	३३७
हुविस्सामु	भविष्यामः	३३७
हुविस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुविहाम	भविष्यामः	३३७
हुविहामु	भविष्यामः	३३७
हुविहामो	भविष्यामः	३३७
	भविष्याम	३३७
हुविहिस्था	भविष्यामः	३३७
	भविष्याम	३३७
हुविहिंति	भवितारः	३३४
हुविहिम	भविष्यामः	३३७
हुविहिमु	भविष्यामः	३३७
हुविहिमो	भविष्यामः	३३७
	भविष्याम	३३७
हुविहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुवीअ	बभूव	३२६
	अभूत्	३३७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

	भावयति	४०२
हुवेउ	भवतु	३३७
	बभूव	३३१
हुवेए	भवति	३१६
हुवेज्ज	भवति	३२२
हुवेज्जा	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
	भवति	३२२
हुवेमः	भवामः	३२७
	भवायः	३२७
हुवेमि	भवामि	३२६
हुवेमु	बभूव	३३२
	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
	भवानि	३३७
	भविष्यामि	३३६
हुवेमो	भविष्यामः	३३७
	भवाम	३३७
	भवामः, भवावः	३२७
	वभूविम	३३२
हुवेस्साम	भविष्यामः	३३७
हुवेस्सामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेस्सामु	भविष्यामः	३३७
हुवेस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुवेसि	भवसि	३२४
हुवेसु	भवितासि	३३४
	बभूविथ	३३२
	भव	३३७
हुवेसे	भवसि	३२४
हुवेसं	भविष्यामि	३३७
		३३६
हुवेह	बभूव	३३२

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

	भवितास्थ	३३४
हुवेहाम	भविष्यामः	३३७
हुवेहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहामु	भविष्यामः	३३७
हुवेहामो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिइ	भविता	३३३
	भविष्यति	३३७
हुवेहिए	भविष्यति	३३७
हुवेहिस्था	भविष्याम	३३७
हुवेहिम	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुवेहिसि	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवेहिसे	भवितासि	३३४
	भविष्यसि	३३७
हुवेहिह	भविष्यथ	३३७
	भवितास्थ	३३४
हुवेहिंति	भविष्यन्ति	३३७
	भवितारः	३३४
हुवेति	भवन्ति, भवतः	३२३
हुवेतु	भवन्तु	३३७
	बभूवुः	३३२
	भवितारः	३३४
हुवेति	भवतः, भवन्ति	३२३
हुवेतु	भवितारः	३२४
	भवन्तु	३३७
	बभूवुः	३३२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भत्तारा	हे भर्तः	१५३
मणसिणि	हे मनस्विनि	१७७
रण	हे शरण्य	१८५
राश्रं	हे राजन् !	२३३
राश्र		
सेज्जे	हे शय्ये	१६२
ओग्रावेइ	भावयति	४०२
इ	भवति	३१६
	बभूव	३३२
ओइज्जइ	भूयते	४०३
ओइत्थां	भवथः, भवथ	३२४
ओईग्रह	भूयते	४०३
ओउ	बभूव	३३१
	भवतु	३३७
ओएइ	भावयति	४०२
ओज्ज	भवन्ति, भवतः	३२३
ओज्जइ	भवति	३२१
ओज्जा	भवन्ति, भवतः	३२३
ओज्जाइ	भवति	३२१
ओज्जति	भवन्ति, भवतः	३२३
ओज्जाति		
ओज्जेइ	भवति	३२१
ओज्जति	भवन्ति, भवतः	३२३
ओम	भवावः, भवामः	३२६
ओमि	भवामि	३२६
ओमु	भविष्यामि	३३६
	भवानि	३३७
	भवावः	३२७
	भवामः	३२७
	बभूव	३३२
ओमो	भवावः	३२७
	भवामः	३२७
	बभूविस	३३२
	भवाम	३३७
	भविष्यामः	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
होस्साम	भविष्यामः	३३७
होस्सामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होस्सामु	भविष्यामः	३३७
होस्सामो	भविष्यामः	३३७
होसि	भवसि	३२४
होसु	बभूविस	३३२
	भवितासि	३३४
	भव	३३७
होस्सं	भविष्यामि	३३७
		३३६
होह	भवथ, भवथः	३३४
	भवितास्थः	३३४
	भवत	३३७
होहाम	भविष्यामः	३३७
होहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होहामु	भविष्यामः	३३७
होहामो	भविष्यामः	३३७
होहिइ	भविता	३३३
	भविष्यति	३३७
होहित्थ	भविष्यत	३३७
होहित्था	भविष्यामः	३३७
होहिम	भविष्यामः	३३७
होहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होहिमु	भविष्यामः	३३७
होहिमो	भविष्यामः	३३७
होहिस्सा	भविष्यामः	३३७
	भवितास्मः	३३७
होहिसि	भवितासि	३३४
	भविष्यसि	३३७
होहिह	भविष्यत	३३७
होहिहां	भवितास्थ	३३४
होहिंति	भवितास्मः	३३४
	भविष्यन्ति	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्
होहीअ	बभूव	३३०		भवितारः
	अभूत्	३३७		भवन्तु
होति	भवन्ति	३२३	हं	अहम्
होतु	बभूवुः	३३२		

सान्भवं प्राकृतानन्दे शब्दानामनुसूचिका । मुनीनां प्रीतये सेयं जिनविजयसू
 वृगिन्दुनभान्नेत्राब्दे मासे भाद्रपदे शुभे । कृष्णाष्टम्यां गुरौ चारे कृता गोप





राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जोधपुर



सूची-पत्र

इस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक — पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्वाचार्य

अक्टूबर १९६३ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक - मोमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर । मूल्य-६
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक-स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर । मूल्य-१
३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदनओष्का-प्रणीत, भाग १, सम्पादक-म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । मूल्य-१०
४. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओष्का प्रणीत, भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक श्रीप्रद्युम्न ओष्का । मूल्य-१
५. तर्कसंग्रह, अन्नभट्टकृत, सम्पादक-डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य-३
६. कारकसंबंधोद्योत, पं० रमसनन्दीकृत, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१
७. वृत्तिदीपिका, मोनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक-स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-३
८. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१
९. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१
१०. नूतसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१
११. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकवि-रचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच.डी., डी.लिट् । मूल्य-१
१२. राजविनोदमहाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-१
१३. चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक-पं० श्रीकेशवरायण काश शास्त्री । मूल्य-१
१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक-प्रो. रसिकलाल लाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१
१५. उक्तिरत्नाकर, साधसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक-पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी, तत्त्वाचार्य, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-१
१६. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेद साहित्याचार्य । मूल्य-१
१७. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्हीं कविवर की अपर संस्कृत कृति श्री लीलामृत सहित, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य-१
१८. ईश्वरविलासमहाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्रीमन् नाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । स्व. पी. के. गोई द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तावना सहित । मूल्य-१
१९. रसदीधिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य-१
२०. पद्ममुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्टश्रीमन्

२२. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग २ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०—श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य—८.२५
२३. वस्तुतत्त्वकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—डॉ० प्रियबाला शाह । मूल्य—४.००
२४. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पा०—पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी । मूल्य—४.००
२५. श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्र, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित । सम्पा०—पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा । मूल्य—३.७५
२६. रत्नपरीक्षादि-सप्तग्रन्थ-संग्रह, ठक्कुर फेरु विरचित, संशोधक—पद्मश्री मुनि जिन-विजयजी, पुरातत्त्वाचार्य । मूल्य—६.२५
२७. स्वयंभूच्छन्द, महाकवि स्वयंभूकृत, सम्पा० प्रो० एच. डी. वेलणकर । विस्तृत भूमिका (अंग्रेजी में) एवं परिशिष्टादि सहित मूल्य—७.७५
२८. वृत्तजातिसमुच्चय कवि विरहाङ्कुरचित; ,, ,, ,, मूल्य—५.२५
२९. कविवर्षण, अज्ञातकर्तृक, ,, ,, ,, मूल्य—६.००
३०. कर्णामृतप्रपा, भट्टसोमेश्वरकृत सम्पा०—पद्मश्री मुनि जिनविजयजी । मूल्य—२.२५
३१. त्रिपुराभारती लघुस्तव, लघुपण्डितविरचित, सम्पा० ,, मूल्य—३.२५
३२. पदार्थरत्नसञ्जुषा, पं० कृष्णमिश्रविरचिता, सम्पा० ,, मूल्य—३.७५
३३. वृत्तमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट कृत; सं० पं० भट्टश्रीमथुरानाथ शास्त्री । मूल्य—३.७५
३४. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०—डॉ. दशरथ शर्मा । मूल्य—२.२५
३५. प्राकृतानन्द, रघुनाथकवि-रचित, सम्पा०—पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी । मूल्य—४.२५
- २. राजस्थानी और हिन्दी**
३६. काव्यह्रदयप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०—प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.। मूल्य—१२.२५
३७. क्षयामला-रोसा, कविवर जान-रचित, सम्पा०—डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा । मूल्य—४.७५
३८. लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०—श्रीमहताबचन्द खारैड । मूल्य—३.७५
३९. बांकीदासरी ख्यात, कविराजा बांकीदासरचित, सम्पा०—श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए., विद्यामहोदधि । मूल्य—५.५०
४०. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पा०—श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य—२.२५
४१. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २, सम्पा०—श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न । मूल्य—२.७५
४२. कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूडावत । मूल्य—२.००
४३. जगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य—१.७५
४४. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पा०—श्री उदैराजजी उज्ज्वल । मूल्य—१.७५
४५. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १ । मूल्य—७.५०
४६. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २ । मूल्य—१२.००
४७. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०—श्रीब्रद्रीप्रसाद साकरिया । मूल्य—८.५०
४८. ,, ,, ,, ,, २, ,, ,, ,, मूल्य—६.५०
४९. रघुवरजसप्रकाश, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०—श्री सीताराम लाळस । मूल्य—८.२५
५०. राजस्थानी वरजलिखित ग्रन्थ-सूची भाग १ सं० पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय । मूल्य—४.५०

